प्रकाशक मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

संस्करण पहला : १९६२

मूल्य अढ़ाई रुपये

मुद्रक हीरा आर्ट प्रेस,
दिल्ली

प्रकाशकीय

हिन्दी में यात्रा-साहित्य के प्रति पाठकों की बढ़ती हुई रुचि और इस प्रकार के साहित्य के अभाव को देखकर हमने यात्रा-साहित्य का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। इस माला में अबतक कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। ये पुस्तकें न केवल रोचक हैं, बल्कि ज्ञानवर्द्धक भी हैं। हमें हर्ष है कि इन सभी पुस्तकों को पाठकों ने बहुत पसंद किया है।

'रूसी युवकों के बीच' इस माला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसके लेखक कुछ समय पूर्व भारतीय युवकों का एक प्रतिनिधि-मंडल लेकर रूस गये थे और रूसी जन-जीवन का उन्होंने अच्छी तरह अध्ययन किया था। विभिन्न क्षेत्रों में रूस की प्रगति का लेखक के मन पर जो असर पड़ा, वह उन्होंने इस पुस्तक में दिया है। विश्व का एक अत्यंत शक्तिशाली राष्ट्र होते हुए भी रूस के संबंध में लोगों के विचारों में बड़ी भिन्नता है। रोचक होने के साथ-साथ इस पुस्तक की खूबी यह है कि यह उस देश को समझने में बहुत सहायता करती है।

इस पुस्तक का हिन्दी-अनुवाद श्री वैजनाथ महोदय ने किया है। उसके लिए हम उनके बहुत आभारी हैं।

हम आशा करते हैं कि यह तथा इस माला की सभी पुस्तकें पाठक चाव से पढ़ेंगे और उनसे लाभान्वित होंगे।

—**मंत्री**

आमुख

श्री रामकृष्ण बजाज कुछ समय पहले युवक-कांग्रेस के प्रतिनिधि की हैसियत से रूस की यात्रा पर गये थे। इस यात्रा में वहां के जीवन आदि का उनके दिल पर जो असर पड़ा, वह उन्होंने इस पुस्तक में लिख दिया है। उनका विवरण साधारणतः सहानुभूतिपूर्ण और, कहीं-कहीं, आलोचनात्मक है। पुस्तक काफी योग्यता और सूक्ष्मदर्शन के साथ लिखी गई है।

यंत्र-विज्ञान की दिशा में सोवियत संघ अद्‌भुत प्रगति कर रहा है। यदि इस प्रगति का उपयोग वहां की जनता का रहन-सहन ऊंचा उठाने की ओर किया जायगा तो उन्हें आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए काफी समय और मौका मिलेगा। मुझे विश्वास है कि ऐसा जल्दी ही होगा।

—राधाकृष्णन्

भूमिका

सोवियत संघ अपने जन्मकाल से ही संसार के लिए कुतूहल और दिलचस्पी का विषय बना हुआ है। अनेक वर्षों तक तो यह एक रहस्यमय देश ही बना रहा। बहुत कम लोग वहां जाकर राजनैतिक और सामाजिक जीवन के क्षेत्र में इस नये प्रयोग का निरीक्षण कर सकते थे। परन्तु अब वहां जाना अधिक सुलभ हो गया है। फलतः अब अधिकाधिक लोग वहां जाने लगे हैं। वहां की जीवन-पद्धति को कोई अच्छा समझे या बुरा, वह बरबस सबका ध्यान अपनी तरफ खींचती है। अपने विस्तार, अपनी शक्ति और वैज्ञानिक प्रगति के कारण संसार के भावी निर्माण में वह निश्चय ही बड़े महत्व का और सचेष्ट भाग अदा करेगा।

सोवियत संघ के बारे में बहुत-कुछ लिखा गया है और विभिन्न प्रकार की रायें भी प्रकट की गई हैं। परन्तु यह किताब एक ऐसे तरुण व्यवसायी का दृष्टिकोण सामने रखती है, जिसके परिवार ने स्वाधीनता-संग्राम में खुलकर भाग लिया है, जो गांधीजी के बहुत निकट सम्पर्क में रहा और उनसे हमेशा मार्ग-दर्शन पाता रहा है। स्वयं श्री रामकृष्ण बजाज युवक-आंदोलन में सक्रिय भाग लेते रहे हैं।

मैं आशा करती हूं कि यह पुस्तक व्यापक रूप से पढ़ी जायगी और इससे सोवियत संघ को अधिक अच्छी तरह समझने में भी काफी मदद मिलेगी। हम सब शान्ति चाहते हैं, परन्तु इसके लिए राष्ट्रों का परस्पर एक-दूसरे को समझना और उनके बीच मैत्री होना बड़ा जरूरी है।

—इन्दिरा गांधी

प्रस्तावना

सन् १९५८ के जून मास में अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के युवक-संगठन के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता की हैसियत से सोवियत रूस जाने का मुझे अवसर मिला था। वहां से लौटने पर अपने मित्रों और साथियों के लाभार्थ मैंने सोवियत रूस के बारे में अपने विचार कुछ लेखों के रूप में लिखे। बाद में जब यह तय किया गया कि इन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना चाहिए तब मैंने इन लेखों को फिर से देखकर कुछ व्यवस्थित किया और इनके साथ, अपनी इस यात्रा में मैं रोज जो डायरी लिखता था, उसका भी कुछ भाग जोड़ दिया। अपनी उस यात्रा में सोवियत संघ को देखकर मेरे दिल पर जो असर हुआ है, केवल वही पाठकों के सामने रखने का प्रयत्न मैंने इस पुस्तक में किया है। मैं वहां खुले दिल और दिमाग को लेकर गया था। वहां मैंने जो कुछ देखा और अनुभव किया, बिलकुल निष्पक्ष भाव से—बगैर किसी अनुकूल या प्रतिकूल पूर्वाग्रह के—लिखने का यत्न किया है।

इस पुस्तक का उद्देश्य यह नहीं है कि संसार में जो विभिन्न प्रकार की आर्थिक और राजनैतिक प्रणालियां प्रचलित हैं, उनकी मैं तुलना करूं, या सोवियत रूस में जो महत्वपूर्ण बड़ी-बड़ी प्रवृत्तियां चल रही हैं और उनका वहां के जनजीवन पर जो असर हो रहा है, उनका कोई विस्तृत ब्यौरा मैं पाठकों के सामने रखूं। सोवियत रूस उद्योग और यंत्रों के क्षेत्र में बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी

वहां बहुत बड़े-बड़े प्रयोग हो रहे हैं, जो बड़े दिलचस्प हैं। इन पहलुओं को जितना और जिस प्रकार देखने और समझने का अवसर मिला, उसका केवल उल्लेख मात्र इसमें किया गया है। हमारा प्रतिनिधि-मण्डल युवकों का था और सोवियत रूस के युवक-संगठन-समिति के निमन्त्रण पर हम वहां गये थे। इसलिए स्वभावतः हमारा अधिकांश समय युवकों से सम्बन्ध रखनेवाली प्रवृत्तियों के केन्द्रों को देखने एवं युवकों और उनके संगठनों तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन करने ही में बीता। इस वृत्तान्त में हमारी यात्रा के इस पहलू पर अधिक ध्यान दिया गया है।

रूस की हमारी यह यात्रा अनेक कठिनाइयों और मर्यादाओं के बीच हुई। सबसे पहली बात, हमारे साथ हमारा अपना कोई दुभाषिया नहीं था। रूस में भाषा की कठिनाई बहुत बड़ी है, क्योंकि वहां बहुत कम लोग अंग्रेजी या हिन्दी जानते हैं। इसलिए हमारे मेजबानों ने जो दुभाषिये हमें दिये, हमें मुख्यतः उन्हींपर निर्भर करना पड़ा। फिर जन-साधारण के साथ स्वतंत्रतापूर्वक घुलने-मिलने और उनके साथ बात-चीत करने का हमारे पास खाली समय भी नहीं था। इसलिए मैं चाहूंगा कि पाठक इन बातों को ध्यान में रखकर ही मेरे संस्मरणों को पढ़ें।

सोवियत संघ की युवक-समिति के सदस्यों ने हमारा बहुत ध्यान रखा और बहुत प्रेम से हमारा आतिथ्य किया। उनके इस प्रेम और आतिथ्य के लिए मैं सचमुच उनका बहुत आभारी हूं।

इस यात्रा के बाद हमारी 'वर्ल्ड असेंबली ऑव यूथ' की भारतीय कमेटी को संयुक्त राज्य अमरीका के 'यंग एडल्ट कौंसिल' की तरफ से अमरीका आने का निमन्त्रण मिला। इसलिए इसी प्रकार के एक युवक-प्रतिनिधि-मण्डल को लेकर वहां जाने का अवसर भी मुझे मिला। इन दो देशों की सामाजिक और राजनैतिक जीवन-पद्धतियां बिल्कुल भिन्न होने पर भी मैंने देखा कि इनकी जनता में आश्चर्य-

जनक समता है। इसलिए 'रूस और अमरीका' इस शीर्षक से मैंने एक अध्याय इसमें और जोड़ दिया है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने युवकों के प्रतिनिधि-मण्डल के अगुआ के रूप में सोवियत रूस जाने का मुझे यह जो अवसर दिया और स्वयं इन प्रतिनिधियों ने भी हमारी इस यात्रा में मुझे जो सहयोग दिया, उसके लिए उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित किये बगैर मैं नहीं रह सकता।

डॉ० राधाकृष्णन ने इस पुस्तक के लिए जो दो शब्द लिख देने की कृपा की, उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं।

उन दिनों अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का युवक-विभाग श्रीमती इन्दिरा गांधी के मातहत था। हमारी इस रूस-यात्रा का श्रेय उन्हीं-को है। मेरी यह पुस्तक जिन दिनों छप रही थी तब वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा होने के कारण काम-काज में बहुत व्यस्त थीं, स्वास्थ्य भी उनका अच्छा नहीं था। फिर भी कृपापूर्वक कुछ समय निकालकर उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखने का जो कष्ट किया, उसके लिए मैं उनका भी हृदय से आभारी हूं।

—रामकृष्ण बजाज

विषय-सूची

●

रूसी युवकों
के
बीच

: १ :

सोवियत संघ का जन-जीवन

सोवियत संघ के युवक-संगठन की कमेटी के निमन्त्रण पर, अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के युवक-विभाग की तरफ से, एक सद्भावना-मण्डल भारत से सोवियत रूस गया। इसमें सात व्यक्ति थे—छः पुरुष और एक महिला। सन् १९५७ में भारत में हुए युवक-कांग्रेस के लखनऊ-अधिवेशन के अवसर पर सोवियत रूस की इस कमेटी के प्रतिनिधि हमारे निमन्त्रण पर भारत आये थे। तभी उन्होंने हमें सोवियत रूस आने के लिए निमन्त्रण दिया था। हमारी यह यात्रा इसी निमन्त्रण का परिणाम थी। हमारा प्रतिनिधि-मण्डल रूस में एक महीना रहा और उसने मास्को, लेनिनग्राड, याल्टा (जो क्रीमिया में काले समुद्र के तट पर स्थित एक विश्राम-नगर है), युक्रेन की राजधानी कीव और उज़बेकिस्तान की राजधानी ताशकन्द की यात्रा की।

हम उनके मेहमान थे, इसलिए सोवियत जीवन के विविध पहलुओं के बारे में हम स्वभावतः उनसे वे सब प्रश्न नहीं पूछ सकते थे, जो हमारे मन में उठते थे। हम उन्हें किसी तरह के पसोपेश में नहीं डालना चाहते थे। हमारी सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि हमारे साथ हमारा अपना दुभाषिया नहीं था। उन्होंने हमें हिन्दी और अंग्रेजी जानने-वाला दुभाषिया दिया था। हमें पूर्णतः उसीपर निर्भर रहना पड़ा। फिर, हमारा अधिकांश समय उन्होंने हमारे लिए अपनी कमेटी की तरफ से जो कार्यक्रम बना दिया, उसीमें चला गया। इसमें भी 'सोवियत यूथ

कमेटी' के लोगों से हम सदा घिरे हुए रहते थे। इस कारण हमें सोवियत यूनियन के ग्राम नागरिक के संपर्क में आने तथा उससे दिल खोलकर बातचीत करने का न तो अवसर मिला और न सुविधा ही। इसके अतिरिक्त भाषा की एक बड़ी दीवार तो हमारे बीच थी ही।

इन तमाम कठिनाइयों के बावजूद हम सोवियत रूस में बहुत-सी चीज़ें देख सके। कुछ अच्छी थीं, कुछ इतनी अच्छी नहीं भी थीं। इन अनुभवों को सुनाते वक्त हमारे मेजबानों के प्रति कहीं अन्याय न हो जाय, इसका भी अवश्य ध्यान रखना है। साथ ही अपने देश-भाइयों के प्रति भी हमारा कर्त्तव्य है कि वे सारी बातें हम उन्हें बता दें, जो हमने अपनी इस यात्रा में वहां देखीं तथा अनुभव कीं। इसलिए मैं बहुत संक्षेप में अपने ये अनुभव यहां लिख रहा हूं। यह करते हुए मेरा प्रयत्न यही रहेगा कि मैं अपने-आपको किसी भी प्रकार की पूर्वधारणा से प्रभावित नहीं होने दूं। दरसल हम बिना किसी पूर्वधारणा के ही सोवियत संघ गये थे और हमारा उद्देश्य ऐसे देश के जन-जीवन का बिल्कुल निष्पक्षता से अध्ययन करना था, जो जितना विवादास्पद है उतना ही शक्तिशाली भी। हम यह भी जानते हैं कि उसके बारे में संसार में अनेक प्रकार की धारणाएं भी हैं। अतः हमने खासतौर पर यह प्रयत्न किया कि हम वहां की हर बात को निष्पक्ष दृष्टि से देखें और उन्हें समझने का यत्न करें।

सबसे पहले हम मास्को गये। इसलिए यह उचित होगा कि इस राजधानी की जिन चीज़ों ने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया, पहले उन्हींकी चर्चा करें।

मास्को का विश्वविद्यालय अपने-आपमें एक बहुत बड़ी संस्था है। उसके अन्तर्गत तेरह कालेज हैं—छः प्राकृतिक विज्ञान के और सात अन्य विषयों के। इनमें कुल २२००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इनमें से १५००० तो बाकायदा दिन के वर्गों में पढ़ते हैं और २००० शाम को लगनेवाले वर्गों में आते है। शेष ४५०० पत्र-व्यवहार के माध्यम से

पढ़ते और परीक्षा में बैठते हैं। विश्वविद्यालय की इमारत बहुत भव्य और प्रभावशाली है। इसमें हजारों कमरे और १५० लेक्चर हाल हैं। सुन्दर बगीचे, उपवन और खेल के मैदान भी हैं।

मास्को में जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल-गाड़ियां, जिन्हें 'मैट्रो' कहते हैं, सोवियत संघ की एक आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धि है। यूरोप और एशिया के देशों में बनी हुई ऐसी रेलों की अपेक्षा यह अधिक उत्तम और सुन्दर हैं। अमरीका में जो ऐसी रेलें हैं, उनको अभी तक मैंने नहीं देखा है। फिर भी उनके बारे में मैंने जो कुछ सुना है, उससे मैं कह सकता हूं कि मास्को की रेल-व्यवस्था उससे भी बढ़कर है।[1]

इसकी लम्बाई केवल ७० किलोमीटर (४३.५ मील) है, जिसपर ४७ स्टेशन हैं। इनकी बनावट बहुत सुन्दर है। लगभग सारे स्टेशनों पर ऊपर लाने-लेजानेवाली बहुत अच्छी चलती हुई सीढ़ियां लगी हैं। हर स्टेशन संगमरमर का बना है और उनकी रचना अलग प्रकार की है। इनकी छतों में सुन्दर रंग-बिरंगी बत्तियों के झूमर लटक रहे हैं। दीवारों पर सुन्दर कलापूर्ण चित्र बने हुए हैं। दीवारें मोज़ेक की और फर्श भी संगमरमर का चिकना तथा चमकदार है। सारी रचना इतनी सुन्दर और कलापूर्ण है कि किसी भी देश को उसपर गर्व हो सकता है।

मास्को में एक स्थायी औद्योगिक तथा कृषि-प्रदर्शिनी है। मुख्य मण्डप बहुत बड़ा है। उसके अलावा रूस के प्रत्येक गणराज्य के लिए अलग-अलग मण्डप बने हुए हैं। भिन्न-भिन्न योजनाओं के अंतर्गत प्रत्येक राज्य में कितना काम हुआ है, इसके चित्र 'ग्राफ' द्वारा बताये गए हैं। इन ग्राफों को समय-समय पर बदल भी दिया जाता है, जिससे देखनेवालों को ताजा-से-ताजा जानकारी मिलती रहे, इनमें बताये गए आंकड़े बड़े प्रभावोत्पादक प्रतीत होते हैं।

[1] इसके बाद मैं अमरीका गया था और अब कह सकता हूं कि सोवियत रूस की इन रेलों के बारे में मेरा अनुमान सही है।

मास्को में एक विशाल क्रीडांगण (स्टेडियम) भी है। इसे 'लेनिन स्पोर्टस स्टेडियम' कहते हैं। सन् १९५७ का युवक-समारोह यहीं हुआ था। यह एक देखने लायक चीज है। मुख्य स्टेडियम बड़ा है, जिसमें लगभग एक लाख दर्शक बैठ सकते हैं। उसके अलावा बच्चों के खेलों के लिए अखाड़े, तैरने के तालाब, नृत्यगृह, नाट्य-गृह, हिम-क्रीड़ा-गृह इत्यादि भी हैं।

मास्को की नई गृह-योजना भी बड़ी आकर्षक है। हवाई अड्डे से मास्को शहर के बीच एक नया नगर बस रहा है। सोवियत संघ में मकान सस्ते हैं। परन्तु अभी इनकी संख्या बहुत कम है, इसलिए मकानों की बहुत तंगी है। बहुत-से परिवार एक कमरे में ही अपनी गुजर कर रहे हैं।

प्रत्येक नई इमारत में हजारों कमरे होते हैं। यदि आप अपने किसी मित्र से वहां मिलने जाना चाहते हैं तो आपको न केवल सड़क का और इमारत का नाम मालूम होना चाहिए, बल्कि मंजिल, मकान और प्रवेश-द्वार की संख्या भी मालूम होनी चाहिए।

उद्योग के क्षेत्र में रूस बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस क्षेत्र में वह संसार का नेतृत्व करने के प्रयत्न में लगा हुआ है। सारे देश को उद्योग-मय बनाने का वहां निश्चय कर लिया गया है। इसलिए सारी शक्ति अधिक-से-अधिक उत्पादन करने में लगाई जा रही है। इस्पात का उत्पादन वहां बहुत तेजी से बढ़ रहा है। पिछले दस वर्षों में वहां इसका उत्पादन १,३०,००,००० से बढ़कर ५,२०,००,००० टन प्रति वर्ष हो गया है। इसका अर्थ है ४०० प्रतिशत की वृद्धि।

खेती में भी रूस बड़ी तेजी से प्रगति कर रहा है। मुझे बताया गया कि खेती की चीजों में उनका उत्पादन अमरीका की बराबरी पर पहुंच चुका है। वे हर क्षेत्र में अमरीका की बराबरी करना चाहते हैं। सच तो यह है कि वे अपना रहन-सहन का स्तर भी अमरीका के बराबर ले आना चाहते हैं, बल्कि उससे भी आगे बढ़ जाना

चाहते हैं। युक्रेन उनका अन्नागार है। उन्होंने हाल ही में निश्चय किया है कि इस राज्य की कुल बिना काश्त जमीन के पांचवें हिस्से पर केवल अंगूरों की ही खेती हो। स्पष्टतः इसका अर्थ यह है कि वहां गेहूं की कमी नहीं है। इसीलिए तो शराब पैदा करने के लिए अंगूरों की खेती बढ़ाई जा रही है। इन दिनों वहां शराब की मांग बढ़ती जा रही है।

रूस के जेट हवाई जहाज बहुत अच्छे हैं। वे आसमान में आठ-आठ, नौ-नौ मील की ऊंचाई पर चले जाते हैं। गति भी बहुत तेज है। बेशक उनमें सुविधाएं बहुत नहीं होतीं। खातिरदारी भी कम और एकदम मामूली है। उदाहरण के लिए मास्को से ताशकन्द हम जिस जेट हवाई जहाज में गये, उसमें हाथ-मुंह धोने के कमरे के नल में गरम पानी का प्रबन्ध भी नहीं था। हाथ वगैरा धोने के लिए साबुन आदि तक का कहीं पता नहीं था। परन्तु जेट की उड़ान का क्या कहना ! बहुत आरामदेह; धक्कों वगैरा का नाम तक नहीं।

अब उनके अतिथि-सत्कार की बात सुनिये। इन लोगों ने जिस प्रकार हमारा सत्कार किया, शब्दों में उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है। विशिष्ट अतिथियों के समान हमें रक्खा गया। हमारी हर बात का ख्याल रखा जाता था। हम जहां कहीं गये, हर्षध्वनि के साथ हमारा स्वागत किया गया। सम्मान की जगह पर बैठाया गया। कीव में तो जनता ने अपने प्रेम से हमें अभिभूत कर दिया। यहांतक कि वहां हमारे लिए होटल में लौटना भारी हो गया। रूस की जनता में भारत के लिए जो प्रेम है, उससे हम बहुत प्रभावित हुए। हमें बताया गया कि चीनियों के बाद उनका सबसे अधिक प्रेम भारतीयों के प्रति ही है। कुछ लोग कह सकते हैं कि यह प्रेम दरसल बनावटी होगा। पहले से सूचनाएं दे दी गई होंगी कि हमारा इस प्रकार से स्वागत वगैरा किया जाय। परन्तु मैं कह सकता हूं कि यह बात हर समय लागू नहीं होती। फिर भी अधिकांश लोगों के व्यवहार में और हमसे मिलने के तरीकों

में मुझे एक प्रकार की समानता जरूर दिखाई दी। इसका कारण यह रहा होगा कि उन्हें इस बात की तालीम दे दी गई है कि किस प्रसंग पर कैसा बर्ताव करना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में, सारे-के-सारे समूह की, एक विशेष प्रकार से बर्ताव करने की आदत-सी हो गई है। इसलिए आज जो सारी जनता दिल खोलकर आपका स्वागत कर सकती है, कल यदि उनके नेताओं की नीति में परिवर्तन हो जाय तो वही जनता, उतने ही जोरों से, आपसे द्वेष भी करने लग जायगी।

सोवियत युवक-समिति ने हमें स्पष्ट रूप से बता दिया था कि हम बिना किसी रोक-टोक के जहां चाहें जा सकते हैं और लोगों से जो चाहें बातचीत कर सकते हैं। जब भी कभी इसका अवसर मिला, हमने इसका लाभ उठाया। हमारे प्रतिनिधियों को जब-जब समय मिलता वे सड़कों पर निकल जाते, लोगों से मिलते या दूकानों में जाकर चीजें खरीदते। बहुत-से लोग हमें ऐसे मिलते थे, जो हमसे बातचीत करना चाहते थे और भारतवासियों के जीवन और रहन-सहन से अवगत होना चाहते थे। अपने देश की स्थिति भी हमें बताना चाहते थे। इनमें से कुछ विद्यार्थी या कालेजों के प्रोफेसर होते। वे अंग्रेजी जानते थे। वे स्वयं हमारे पास आते, दुकानदारों की बात हमें अंग्रेजी में समझाते और खरीद-फरोख्त में हमारी मदद भी करते। जब उन्हें पता लगता कि हम भारत से आये हैं तो उन्हें बड़ी खुशी होती और वे कुछ अधिक खुलकर बातें करने लग जाते। परन्तु इस प्रकार प्रकट रूप से हमारे निकट आने और बातचीत करने की उनकी इच्छा के बावजूद, मैं देखता कि उनके दिलों में कहीं कुछ झिझक छिपी हुई है, जो उन्हें कुछ कहने या करने से रोक रही है। एक लम्बे अर्से से अपने-आपको दबाये रखने के कारण शायद उनके व्यवहार में यह अटपटापन आ गया हो। इनमें से कुछ लोगों से तो हमने कहा भी कि हम उनके घरों पर जाना पसन्द करेंगे और विशेष रूप से देखना-जानना चाहेंगे कि रूसी लोग अपने घरों में किस प्रकार रहते हैं। उनका जीवन

क्या है ? परन्तु इसमें उनकी प्रायः अनिच्छा ही प्रकट हुई। इन बुद्धि-जीवियों के व्यवहार से हमें कुल मिलाकर यही लगा कि रूस ऊपर से जैसा कुछ दिखता है, भीतर से बहुत-सी बातों में उसका रूप दूसरा ही है। प्रारम्भ में जिन कठिनाइयों का उल्लेख किया जा चुका है, उनके कारण वे लोग जो बातें हमसे कर जाते थे, उनकी प्रमाणिकता प्राप्त करने का हमारे पास कोई साधन नहीं था।

इनकी बातचीत से हमें जो बातें मालूम हुईं, उनमें से बहुत-सी गंभीरतापूर्वक विचार करने योग्य हैं। एक महत्वपूर्ण बात तो उन्होंने यह बताई कि रूस की संपूर्ण आबादी में कम्यूनिस्टों की संख्या १०-१५ प्रतिशत से अधिक नहीं है। यह स्वाभाविक भी है। किसी भी पार्टी की सदस्य-संख्या आबादी का एक छोटा अंश ही हो सकती है। परन्तु ध्यान देने की बात तो यह है कि उनकी राय में कम्यूनिस्ट पार्टी के समर्थकों की संख्या भी बहुत अधिक नहीं है। कुल मिलाकर वे अल्प संख्या में ही हैं। फिर भी रूस का शासन साम्यवादियों के ही हाथों में है। इतनी छोटी संख्या रूस के बहुसंख्यक समाज पर शासन कर रही है। उनका मत था कि इसी वजह से चालीस वर्ष के साम्यवादी दल के शासन के बाद आज भी वहां गोपनीयता और आतंक का साम्राज्य छाया हुआ है। बेशक, स्तालिन के बाद परिस्थिति जरूर कुछ बदली है। इनके कथनानुसार आज भी रूस के नागरिकों को विदेशों में आने-जाने की आजादी नहीं है। प्रतिनिधियों के रूप में जो बाहर जाते हैं, वे सब केवल साम्यवादी ही होते हैं। साधारण नागरिक तो यह सोच भी नहीं सकते कि उन्हें देश के बाहर जाने के लिए पासपोर्ट मिल सकता है। फिनलैंड की सरहद तो रूस से मिली हुई है। परन्तु वहां भी वे नहीं जा सकते। तो भी, इन दिनों कम्यूनिस्टों ने जो बड़ी-बड़ी सफलताएं पाई हैं, इनका उन्हें भान है। उन्हें गर्व है कि संसार को दिखाने के लिए उनके पास भी अब कुछ है। इसलिए अब दूसरे देशों के लिए, खासकर अल्प-विकसित देशों के लिए, उन्होंने अपने देश के दरवाजे खोल

दिये हैं। परन्तु वे यह नहीं चाहते कि रूस के साधारण नागरिक रूस से बाहर प्रगतिशील देशों में जायं और उनके जीवन से अपने जीवन की तुलना करें।

जितने दिन मैं रूस में रहा, इंगलैंड के साम्यवादी दल के 'डेली वर्कर' अखबार को छोड़कर मुझे किसी दूसरे देश का एक भी अखबार नहीं दिखाई दिया। स्वयं रूस के पत्रों में ऐसे समाचार या विचार आपको कहीं नहीं मिल सकते, जो शासन या कम्यूनिस्ट पार्टी के विरोध में हों। इनमें प्रायः शासन और पार्टी की प्रशंसा, उत्पादन के आंकड़े, सफलताओं का वर्णन और ख़ुश्चोव तथा अन्य सोवियत नेताओं के भाषणों के ही विवरण प्रमुख होते हैं। यहां के अखबारों ने आइजन-होवर को भेजे ख़ुश्चोव के पत्र तो पूरे-के-पूरे छाप दिये, परन्तु आइजन-होवर ने ख़ुश्चोव को जो पत्र भेजे, उन्हें नहीं छापा। हमसे मिलनेवाले बहुत-से रूसियों को जब हमने बताया कि भारत के अखबार पण्डित नेहरू या किसी नेता या सरकार की भी टीका कर सकते हैं और उनके विरुद्ध वे लिख भी सकते हैं, ऐसा करने में उन्हें कोई भय या खतरा महसूस नहीं होता, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा कि भारत के निवासी जैसी स्वतंत्रता का उपभोग कर रहे हैं, वैसी स्वतंत्रता मिलने की आशा तो हम स्वप्न में भी नहीं कर सकते। परन्तु चीन के जितनी आजादी मिल जाय तो भी हम अपना अहोभाग्य समझेंगे।

हमने उनसे एक सीधा-सा सवाल पूछा कि यदि कम्यूनिस्ट वहां अल्प संख्या में हैं, और फिर भी आपपर राज्य करते हैं तो आप कम्यू-निस्टों को चुनावों के द्वारा हटा क्यों नहीं देते, खास तौर पर तब जब-कि आपके संविधान में जनतंत्री चुनावों का प्रविधान है? उन्होंने कहा कि संविधान में जनतंत्री चुनावों का प्रविधान होना एक बात है और उसपर अमल होकर सचमुच जनतंत्री चुनावों का हो जाना एकदम दूसरी बात है। जाहिर है कि किन्हीं भी पांच आदमियों की राय एक-सी नहीं हो सकती। इसलिए मतभेद तो होंगे ही। इसलिए राज-

नीति के क्षेत्र में अल्पमत और बहुमत भी होंगे ही। परन्तु रूस में विरोध होता ही नहीं। वास्तविकता यह है कि कम्यूनिस्टों का एक दल पहले से यह निश्चय कर लेता है कि फलां जगह के लिए कौन खड़ा होगा। बस, फिर दूसरे किसीको खड़ा होने ही नहीं दिया जाता। फिर भी यदि संविधान के प्रविधान के आधार पर कोई खड़ा होने की हिम्मत कर बैठता है तो उसका जीना दूभर कर दिया जाता है। वह हाथ टेक देता है। यहां कम्यूनिस्ट पार्टी इतनी शक्तिशाली है कि कामरेड मोलोतोव, मालेनकोव, बुलगानिन और ज़ुकोव जैसे प्रभावशाली पुरुष उसके सामने झुक जाते हैं। तब इस आतंक का मुकाबला एक साधारण आदमी कैसे कर सकता है ? इसलिए रूस की जनता ने समझ लिया है कि इस अल्पमत की सत्ता के सामने सिवा सिर नीचा करके पड़े रहने के उसके लिए कोई चारा नहीं है। यही वजह है कि रूस में जनसाधारण को इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है कि उनपर कौन राज कर रहा है और कैसे कर रहा है। इसकी अपेक्षा उन्हें अपने दैनिक जीवन में अधिक रस है। उनकी दिलचस्पी इस बात में अधिक हो गई है कि उनके रोजमर्रा के रहन-सहन का स्तर किस प्रकार अधिकाधिक ऊंचा हो।

कोउ नृप होउ हमहि का हानी
चेरी छांडि अब होब कि रानी

वे जानते हैं कि स्पुतनिक का आविष्कार रूस की एक बहुत बड़ी सफलता है। परन्तु उन्हें लगता है कि उससे रूस के साधारण मनुष्य का क्या भला हुआ? उन्हें इस बात का दुःख और शिकायत है कि उनके रहने के लिए पर्याप्त मकान नहीं है। वहां एक-एक कमरे में साधारणतः आठ-आठ, दस-दस मनुष्य रहते हैं, जिनमें न नहाने-धोने की और न पाखाने की पर्याप्त सुविधाएं होती हैं। इनके लिए उन्हें लम्बी कतारें बनाकर बड़ी देर तक खड़े रहना पड़ता है। वे जानते हैं कि एक स्पुतनिक के बनाने पर इतना पैसा लग जाता है कि जितने में एक पूरा-का-

पूरा नया शहर बस जाय। अपने प्रजाजनों की सुख-सुविधाओं का प्रबन्ध करने की बजाये सोवियत सरकार फौज और शस्त्रास्त्रों पर अधिक-से-अधिक धन खर्च कर रही है। इन स्पुतनिकों के कारण रूस के निवासियों की इज्जत संसार में भले ही बढ़ गई हो, परन्तु उनके अपने घर में उनका सुख रत्तीभर भी नहीं बढ़ा है।

सोवियत संघ में प्रत्येक मनुष्य से खूब काम लिया जाता है। साधारण मनुष्य की आय इतनी नहीं कि वह अपनी सारी जरूरतों को पूरी कर सके। निर्धारित मात्रा से अधिक उत्पादन करने पर ही उसे न्यूनतम मजदूरी से अधिक मजदूरी मिल सकती है। जहांतक उसके उदर-पोषण और जीवन-निर्वाह की नितांत आवश्यक वस्तुओं का प्रश्न है, वे चीजें तो सरकारी बाजार में सस्ते दामों में उसे मिल जाती हैं। हर व्यक्ति के लिए निश्चित मात्रा से ज्यादा वे ही चीज चाहिए, तब भी उसे अधिक भाव देकर वे चीजें मिलती हैं। अन्य घरेलू और रोजमर्रा की आवश्यक चीजों के दाम भी बहुत होते हैं। इससे मजदूरों और अन्य नौकरी-पेशा लोगों के लिए अपनी आमदनी हर तरह से बढ़ाने की कोशिश करते रहना अनिवार्य-सा ही हो गया है।

कारीगरों से अधिक मेहनत कराने का एक और तरीका अख्तियार किया जाता है। मान लीजिये कि आठ घंटे में किसी वस्तु का उत्पादन कम से-कम एक सौ की संख्या में करने का तय करके उसपर कम-से-कम मजदूरी के दर तय कर दिये गए। अच्छे कारीगर १२५-१५० तक उस वस्तु को बनाकर कुछ अधिक कमाई करने लगते हैं। कुछ समय बाद कम-से-कम उत्पादन की संख्या एक सौ से बढ़ाकर १२५ या १५० की कर दी जाती है। अब वह इससे बढ़कर उत्पादन करे तब ही उसे अधिक मजदूरी मिल सकेगी। इस तरह वहां के मजदूरों पर काम करने का बोझा बढ़ता ही जाता है। उन्होंने बताया कि इससे अधिक मजदूरों व अन्य काम करनेवालों का शोषण और क्या हो सकता है।

इसलिए वह अपने काम के समय में तो अधिक-से-अधिक परिश्रम

करने की कोशिश करता ही है, साथ ही काम के इन निश्चित आठ घण्टों के कठिन परिश्रम के बाद भी वह वहीं या अन्य कहीं, कुछ अधिक काम करने की कोशिश करता है, ताकि कुछ अधिक कमा सके।

सोवियत जनता का रहन-सहन का स्तर मामूली ही है। बेशक, अनेक बातों में वह भारत की जनता की अपेक्षा जरूर ऊंचा है। परन्तु यदि यूरोप के अन्य देशों की जनता के जीवन-मान से उसकी तुलना की जाय, और उसीके साथ तुलना की जानी चाहिए, क्योंकि वह मुख्यतः एक यूरोपीय राष्ट्र है, तो कहना होगा कि उसका स्तर बहुत नीचा है। यह सच है कि उनके यहां बेकारी की समस्या नहीं है। उनके पास संसार की कुल जमीन का छठा हिस्सा है और उनकी आबादी केवल बीस करोड़ है, जो कि संसार की आबादी का सिर्फ दसवां हिस्सा होगी। अपने नागरिकों के लिए उनके पास काफी रोजगार है। कभी-कभी तो वे काम करनेवाले आदमियों की तंगी भी अनुभव करते हैं। यद्यपि हर आदमी को वहां काम मिल जाता है, फिर भी वहां गरीब और अधभूखे लोग आम तौर पर दिखाई दे जाते हैं। कभी-कभी तो भिखारी के दर्शन भी हो जाते हैं।

यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा रूस की जनता का जीवन-स्तर बहुत नीचा होते हुए भी यह सच है कि रूस में रोजगार सबको मिल जाता है। हमें तो यह बात अपने-आपमें बहुत बड़ी लगती है, क्योंकि हम एशिया-अफ्रीका के लोग इस क्षेत्र में बहुत पिछड़े हुए हैं। परन्तु जब यूरोप के देशों के साथ उनकी तुलना करते हैं तो ऐसी कोई खास बात नज़र नहीं आती। अन्य देशों में भी अधिक बेकारी नहीं है, और न उनका रहन-सहन गिरा हुआ है। इस दृष्टि से रूस ने कोई बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करली है, ऐसा नहीं कहा जा सकता।

रूस की आबोहवा बहुत अच्छी है। परन्तु उसके अनुरूप वहां के लोगों के चेहरों पर ताजगी नहीं दिखाई देती। इसका कारण यही है कि साधारण नागरिक को जीवन का आनन्द लेने के लिए फुरसत और विश्रान्ति

बहुत कम मिल पाती है। कारखानों, खेतों, स्कूल, फैक्टरी आदि में स्त्रियों को भी उतना ही काम करना पड़ता है, जितना पुरुषों को। इसके अलावा उनको अपनी गृहस्थी की देख-भाल भी करनी पड़ती है। इस तरह उनपर काम का बोझ पुरुषों से अधिक पड़ जाता है। अतः हमने देखा कि इस कठिन परिश्रम के कारण रूस की अधिकांश स्त्रियों के चेहरों से रमणी सुलभ कोमलता लापता हो गई है।

वहां उपभोक्ता वस्तुओं की कमी सर्वत्र लगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस कमी का अनुभव होता था। भोजन और मकान को छोड़कर, जो कि जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएं हैं, वहां अन्य चीजें आसानी से प्राप्त नहीं होतीं। कीमतें भी उनकी काफी ऊंची हैं।

रूस में एक अच्छे गरम सूट की कीमत दो हजार रूबल (१ रु० = १.२ रूबल) होती है। जिसके पास दो अच्छे गरम सूट हैं, वह काफी पैसेवाला व्यक्ति माना जाता है। सूती कमीज की कीमत साठ रूबल और रेशमी कमीज की कीमत डेढ़सौ रूबल होती है। जूतों की एक जोड़ी, जो भारत में तीस रुपये में मिल जाती है, रूस में उसकी कीमत ढाईसौ रूबल होती है। युक्रेन के योजनामंत्री ने हमें बताया कि रूस में जूतों का औसत उत्पादन वर्ष में फी आदमी सात पड़ता है, जो रूस की आबोहवा को देखते हुए बहुत ही कम है।

रूस में स्त्रियों के एक मामूली चमड़े के हैंडबैग की कीमत चौरासी रुपये पड़ती है और एक साधारण तौलिया बयालीस रुपये में मिलता है। छोटे-छोटे खट्टे नींबू वहां तेरह रुपये के सेरभर मिलते हैं, और एक अच्छे बड़े नींबू के तीन रुपये लगते हैं। बड़ी डबल रोटी की कीमत तीन रुपये होती है और दोसौ ग्राम मक्खन की कीमत पांच रुपये। इतने ही वजन के शुद्ध घी के सात रुपये होते हैं। मक्खन निकला हुआ दूध तीन रुपये प्रति सेर और शुद्ध दूध दस रुपये सेर मिलता है। दांत के मामूली ब्रुश की कीमत वहां तीन रुपये है। साबुन की जिस टिकिया से हम यहां कपड़े धोते हैं, वह वहां नहाने के काम में ली जाती है और

उसकी कीमत होती है तीन रुपये। सूती मोजों की एक जोड़ी के नौ रुपये लगते हैं और केनवस के जूतों की कीमत सताईस रुपये है। बिजली का सामान जरूर यहां की तुलना में वहां सस्ता मिलता है। बिजली से चलनेवाला अच्छा ग्रामोफोन, जिसमें लाउडस्पीकर भी लगा होता है, वहां २९२ रुपये में मिल जाता है और टेलीवीजन का सैट ६६६ रुपये में।

हां, शिक्षा-सम्बन्धी सुविधाएं वहां खूब हैं। हर नागरिक को अपनी बुद्धि और प्रतिभा का विकास करने का पूरा अवसर मिलता है। परन्तु जहां-तक निःशुल्क डाक्टरी सहायता का प्रश्न है, हमें बताया गया कि वह अभी सन्तोषजनक नहीं हो पाई है। हर डाक्टर को प्रतिदिन चालीस से अधिक परिवारों की देख-भाल करनी पड़ती है। फलतः इलाज के लिए जानेवाले मरीजों को देर-देर तक ठहरना पड़ता है। इसलिए जिनके पास साधन हैं, वे खानगी डॉक्टरों से अपना इलाज करवा लेते हैं। यद्यपि रूसियों ने औषधि-विज्ञान और शल्य-चिकित्सा में काफी प्रगति कर ली है और वहां डॉक्टर भी बहुत बड़ी संख्या में हैं, फिर भी निःशुल्क डॉक्टरी सहायता का स्तर कुछ नीचा ही है। इसीकी वजह से इस तरह का काम करनेवाले सरकारी डॉक्टरों का वेतन केवल छः सौ रूबल प्रतिमास है, जबकि एक साधारण टैक्सी ड्राइवर का वेतन वहां इससे लगभग दूना होता है।

क्रीमिया में घूमते हुए हमने देखा कि बहुत-से मकानों के साथ-साथ कुछ अधिक जमीन भी जुड़ी हुई है। यह मकानवालों की निजी जमीन थी। कुछ लोग इन मकानों में स्थायी रूप से रहते थे। दूसरे मकान ऐसे लोगों के थे, जो शहरों में रहते हैं।

कभी-कभी एकान्तवास और खुली हवा का आनन्द लेने की उनकी इच्छा होती है तो वे यहां आकर रहते हैं। यहां अपनी इन जमीनों पर वे कुछ अतिरिक्त उत्पादन भी कर लिया करते हैं और इसे खुले बाजारों में—वहां भी बाजार ही कहते हैं—बेच देने का उन्हें पूरा

अख्तियार है। यों सारे देश में, गांव-गांव में, सरकारी बाजार और सरकारी दुकानें होती हैं, जिनमें सामूहिक खेतों की उपज सरकार द्वारा निर्धारित भावों पर बेची जाती है। जिनके पास सुविधा है, वे अपना माल खुले बाजारों में भी बेच सकते हैं और उसकी जो कीमत मिले, ले सकते हैं। आम तौर पर इन खुले बाजारों में माल ऊंची कीमत में बिकता है, कारण कि एक तो यह माल अधिक अच्छा होता है और दूसरे इनमें बे-मौसम की चीजें भी मिल जाया करती हैं।

सोवियत संघ में समानता नहीं है, यह बात तो एकदम एक नये आदमी को भी दीख जाती है। यूक्रेन के योजनामन्त्री ने स्वयं स्वीकार किया कि वहां न्यूनतम मासिक वेतन छः सौ रूबल है और अधिकतम वेतन पंद्रह हजार रूबल। स्वयं सरकारी आँकड़ों के अनुसार वहां उच्च-तम और न्यूनतम वेतन का अनुपात २५: १ होता है। परन्तु मैंने स्व-तंत्र रूप से जो पूछ-ताछ और जांच की, उससे पता चला कि यह अनु-पात अधिक नहीं तो कम-से-कम १००:१ तो है ही।

मैंने तीन सौ से कम रूबल पर लोगों को काम करते देखा है। दूसरी तरफ फौज के कुछ अधिकारियों और मन्त्रियों आदि को मासिक तीस हजार रूबल तक वेतन मिलता है। इसके अलावा इन लोगों को और भी कितनी ही सुविधाएं मुफ्त में मिलती हैं, जो कि साधारण आदमियों को नहीं दी जातीं, जैसे निवास, मोटर इत्यादि। वे अपनी बचत बैंक में जमा करवा सकते हैं और इस प्रकार अपनी निजी सम्पत्ति को बढ़ा सकते हैं। पार्टी के उच्चाधिकारियों के ग्राम-निवास अलग होते हैं, जहां वे सप्ताह के अंत में जाकर विश्राम करते हैं। शहरों में भी इन लोगों के बड़े-बड़े निवास-स्थान होते हैं, जिनमें कई कमरे होते हैं, जबकि साधारण लोगों को बहुत तंग और छोटे मकानों में अपनी जिन्दगी बितानी पड़ती है।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य है। वह यह कि दो हजार से कम मासिक आय पर आयकर की दर १० प्रतिशत है, जबकि सबसे अधिक

कमाई करनेवालों पर ऊंची-से-ऊंची दर केवल १३ प्रतिशत ही है।

जिन परिवारों में बच्चे हैं, उनमें काम करनेवाली नौकरानियों को चौबीस घण्टे की नौकर माना जाता है। रविवार को जरूर छुट्टी होती है। इनको भोजन के अलावा तीन सौ रूबल मासिक वेतन मिलता है। होटलों में और अन्यत्र जब-जब भी हमने नौकरों को इनाम (टिप) देना चाहा, तब-तब उन्होंने इसको पसंद किया, परन्तु यह इनाम उन्होंने लिया तभी जब आस-पास कोई देखनेवाला नहीं होता था।

कारखाने में काम करनेवाले एक साधारण मजदूर को मासिक छः सौ से आठ सौ रूबल तक वेतन मिलता है। डॉक्टर को भी छः सौ रूबल ही मिलते हैं। बी० ए० पास लेक्चरर को प्रायः बारह सौ से लेकर उन्नीस सौ रूबल तक वेतन दिया जाता है और एम० ए० पास लेक्चरर को पच्चीस सौ से बत्तीस सौ तक। असिस्टेण्ट प्रोफेसर का वेतन दो हजार से लगाकर चार हजार रूबल मासिक तक जाता है। डॉक्टरेट की उपाधि-प्राप्त प्रोफेसर को लगभग पैंतालीस सौ रूबल दिये जाते हैं। यदि वह आंशिक समय ही काम करता है तो उसे सोलह सौ रूबल मासिक मिलते हैं। 'इंस्टीच्यूट ऑव इंटरनेशनल अफेयर्स' के डायरेक्टर का वेतन सात हजार रूबल है और ऐकेडेमीशियन को बीस हजार से लेकर तीस हजार रूबल वेतन दिया जाता है।

हमें यह भी बताया गया कि नियुक्तियों और तरक्कियों में भी पक्षपात और सिफारिशें चलती हैं। विभागाध्यक्ष प्रायः अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं, परन्तु इनमें भी साम्यवादी दल के सदस्यों को प्राथमिकता दी जाती है। सारे महत्वपूर्ण पदों, जैसे कारखानों के प्रबन्धक या संचालक, शिक्षा-संस्थाओं के अध्यक्ष आदि पर केवल साम्यवादी ही नियुक्त किये जाते हैं। परन्तु इन सारी बातों की पड़ताल करके देखना हमारे लिए आसान नहीं था।

हमें सबसे अधिक आश्चर्य तो यह सुनकर हुआ कि स्वयं मास्को शहर की मुख्य सड़कों के एक हिस्से में सिर्फ पार्टी और शासन के उच्च-

अधिकारियों की गाड़ियां ही आ-जा सकती हैं। आम सड़कों पर भी केवल इनकी ही गाड़ियां हॉर्न बजा सकती हैं।

हमें यह भी पता लगा कि सरकारी अधिकारियों और जन-साधारण के बीच संपर्क नहीं के बराबर है। युक्रेन का सचिवालय एक बहुत बड़े भवन में है। इस राज्य के योजना-मन्त्री से मिलाने के लिए जब हमें वहां ले जाया गया तो इमारत के इस कोने से लेकर उस कोने तक, सिवा दरबान और मंत्री महोदय के सचिव के, हमें एक भी आदमी नहीं दिखाई दिया। यह तो नही माना जा सकता कि जनता की हर तकलीफ़ को सरकार खुद ही दूर कर दिया करती है और इसलिए लोगों को किसी भी मंत्री या अधिकारी से मिलने की जरूरत ही नहीं पड़ती। यह भी कोई नहीं मानेगा कि सोवियत रूस में या संसार के अन्य किसी भी देश में लोगों की कोई समस्याएं या शिकायतें ही नहीं होतीं, जिनकी ओर मंत्रियों या सरकारी अधिकारियों का खास तौर पर ध्यान दिलाने की जरूरत हो। भारत में शासन के सचिवालयों में तो सदा लोगों की भीड़ लगी रहती है। परन्तु ऐसा लगता है कि सोवियत रूस में लोग मंत्रियों या अधिकारियों से मिलने से डरते हैं, या उनको यह निश्चय हो गया है कि उनकी कहीं कोई सुनवाई नहीं होगी।

यह स्पष्ट था कि फौजी आदमियों के अलावा सरकारी अधिकारी ही वहां सर्वसत्ताधारी हैं। स्वयं कम्यूनिस्ट पार्टी के लोगों की जबानी हमने इन अधिकारियों के व्यवहार की शिकायतें सुनी। वे कहते थे कि ये अधिकारी लापरवाह, ढीले और अयोग्य हैं। पार्टी के बड़े-बड़े उच्च पदाधिकारियों तक को पता नहीं था कि ख्रुश्चोव का मासिक वेतन क्या है। जब मुझे यह जानने की उत्सुकता हुई तो मैंने पता लगाना चाहा कि उन्हें इतनी-सी बात भी क्यों नहीं मालूम ? उन्होंने जवाब में कहा कि उन्हें ऐसी बातों की जानकारी हासिल करने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

सोवियत संघ में खेलों का प्रचार बढ़ रहा है। उनका सबसे प्रिय

खेल फुटबॉल है। उसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं। मुख्य शहरों में बड़े-बड़े क्रीड़ांगण बने हुए हैं। विश्व-विद्यालयों तथा अन्य शिक्षा-संस्थाओं में भी खेलों की सुविधाएं बराबर उपलब्ध हैं।

रूस में संगीत, नृत्य और नाटक आदि की भी वृद्धि हो रही है। इनका स्तर भी अच्छा है। लोगों को संगीत तथा नृत्य का दिली शौक है। हमने एक सर्कस, कठपुतली का नृत्य, और एक रूसी सिनेमा भी देखा, जिसका नाम था—'बगुलों की उड़ती कतार'। सिनेमा का अभिनय और चित्रांकन बहुत कल्पनापूर्ण था। प्रेमी के युद्ध पर चले जाने पर नायिका की शारीरिक और मानसिक पीड़ा का दिग्दर्शन इस चित्र में किया गया है। नायिका का अभिनय इतना सुन्दर था कि वहां की भाषा नहीं जानने के बावजूद हमारे दिल पर उसका असर हुआ। हमने एक 'बैले'— नृत्य-नाट्य भी देखा, जिसके लिए रूस बहुत प्रसिद्ध है। उनकी यह प्रसिद्धि उपयुक्त ही है।

हमें कई ऐसे स्थानों पर ले जाया गया, जहां रोगी विश्राम और स्वास्थ्यलाभ करते हैं। ऐसे स्थान याल्टा में अधिक हैं। स्वास्थ्य लाभ के इन स्थानों में काफी सुविधाएं हैं। वातावरण आकर्षक, आनन्ददायक और स्वास्थ्य के अनुकूल है। हमें वहां के लोगों के साथ, तैरने, नौका-विहार करने और वॉलीबॉल खेलने में खूब आनन्द आया। हमें बताया गया कि ये स्थान योग्य मजदूरों और किसानों के लिए सुरक्षित रहते हैं, जिन्हें विश्रान्ति और छुट्टी की जरूरत होती है। ऐसे लोग यहांपर बहुत दूर-दूर से आते हैं। लेकिन कुछ लोगों ने हमें बताया कि असल में बहुत कम किसान और मजदूर लोग इन सुविधाओं से लाभ उठा पाते हैं। दरअसल पार्टी के उच्च अधिकारियों और उनके पिट्ठुओं के लिए ही ये स्थान सुरक्षित रहते हैं।

मैंने देखा कि रूसियों में अपने देश के लिए गहरा प्रेम और अभिमान है। इस विषय में साम्यवादियों या गैर-साम्यवादियों में कोई भेद नहीं है। दोनों अपनी मातृभूमि को समान रूप से प्यार करते हैं और उसकी नई-पुरानी, हर चीज पर उन्हें गर्व है। साम्यवादियों को भी क्रान्ति के

पहलेवाले युग का चीजों पर गर्व है। उन्होंने बड़े प्रेम से और एक प्रकार का गौरव अनुभव करते हुए ये चीजें हमें दिखाईं। पीटर 'महान' और 'भयंकर' ईवान तक के प्रति उनके दिल में आदर है। आज के रूस-निवासी, यहांतक कि साम्यवादी भी मानते हैं कि ये दोनों ही महान और शक्तिशाली शासक थे। उन्होंने रूस को शक्तिशाली बनाया। अपने जमाने में वे भी प्रगतिशील थे। यह दूसरी बात है कि आज की दृष्टि से वह शासन-प्रणाली पुरानी और प्रतिगामी रही हो।

लेनिनग्राद में एक कला-निकेतन (आर्ट गैलरी) है। इसपर रूसियों को बड़ा गर्व है। यह एक अनूठा संग्रहालय है, जिसमें समस्त यूरोप के पुराने कलाकारों की कृतियां बड़ी साज-संभाल से रखी गई हैं। कहा जाता है कि संसार के सर्वश्रेष्ठ कला-निकेतनों में इसका चौथा स्थान है। साम्यवादी सरकार ने पुराने ज़ारों के महलों और बगीचों तक को राष्ट्रीय स्मारकों के रूप में सुरक्षित रखा है। इन्हें वे विदेशी आगन्तुकों को बड़े गर्व के साथ दिखाते हैं।

इस विषय में एक बात मुझे खास दिखाई दी, और वह यह कि अपनी सफलताओं के बारे में उनके दिलों में एक उलझन पैदा हो गई है। यह सच है कि कुछ क्षेत्रों में उन्होंने अनेक बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं, परन्तु ऐसा मालूम होता है कि वे भीतर से कुछ ऐसा भी अनुभव करते हैं कि दूसरी अनेक बातों में वे पिछड़े हुए हैं और इसके लिए वे अपने-आपको कुछ दोषी महसूस करते हैं। यह इस बात से प्रकट हो रहा था कि जब कभी कोई चीज हमें वे दिखाते तो उसके साथ यह पूछे बिना उनसे नहीं रहा जाता कि हमें वह पसन्द आई या नहीं। यदि हम कह देते कि अच्छी है तो उन्हें बड़ा सन्तोष होता। मेट्रो और मास्को विश्वविद्यालय तो सचमुच बहुत बड़ी चीजें हैं। परन्तु इनके बारे में भी हमसे यह प्रश्न पूछे बगैर वे नहीं रह सके। जब हमने इनकी महानता की प्रशंसा की तो उनका चेहरा आनन्द से खिल गया।

इसी सिलसिले में मुझे एक बात और याद आ रही है। लेनिनग्राद

में यन्त्रों के पुर्जे बनानेवाले एक कारखाने को देखने के लिए हम गये। सच पूछिये तो उसे देखकर मैं कतई प्रभावित नहीं हुआ। उसका प्रबन्ध अच्छा नहीं था। चारों तरफ चीजें अस्त-व्यस्त बिखरी पड़ी थीं। सफाई का नामोनिशान नहीं था, मानो कोई देखनेवाला ही न हो। लगता था कि आदमी भी जरूरत से अधिक थे। यह कारखाना देखकर हम बाहर निकले। अखबारों के संवाददाताओं में से एक महिला भी हमारे साथ थी। उसने हमसे वही प्रश्न पूछा। जो चीज मुझे अच्छी नहीं लगी, उसकी प्रशंसा मैं कैसे करता? मैंने उसके सवाल को टालते हुए कहा कि लेनिन का नाम धारण करनेवाले इस कारखाने को देखने का हमें अवसर मिला, इससे हमें आनन्द हुआ। फिर इसे तो लेनिन-पुरस्कार भी मिल चुका है, आदि-आदि। परन्तु वह अपने प्रश्न पर ही अड़ी रही। मैंने भी उसके प्रश्न का सीधा जवाब नहीं दिया। इसपर उसे बहुत बुरा लगा। वह अपने असन्तोष को छिपा नहीं सकी और निराश होकर वहां से चलती बनी। हम जितने भी स्थानों पर गये, प्रायः सब जगह 'विजिटर्स बुक' थी और हमसे कहा गया कि इन स्थानों के बारे में हम अपने विचार इसमें लिख दें। जब किसी नये शहर में जाते तो हवाई अड्डे पर ही रेडियो के लिए हमारा सन्देश रेकार्ड कर लिया जाता। हमारी यात्रा के समाचार अखबारों में भी काफी व्यापक रूप में छपते थे।

हमने दूसरी अजीब बात यह देखी कि जितनी भी संस्थाओं में हम गये, उनके संचालकों में हमारे देश की परिस्थिति तथा अन्य चीजें जानने की जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। यह बात मैं रूस के साधारण लोगों के बारे में नहीं कह रहा हूं। भाषा की कठिनाई के कारण उनसे मिलकर बातचीत करने का तो अधिक अवसर ही हमें नहीं मिल पाया। फिर भी हमने देखा कि इस कठिनाई के बावजूद वे हमारे देश के विषय में जानकारी पाने को बहुत उत्सुक थे। परन्तु संस्था-संचालकों का तो प्रयत्न यही था कि वे किस तरह तथ्यों व आंकड़ों के सहारे अपनी सफलताओं से हमें प्रभावित करें। एक-दो जगहों को छोड़कर, किसीने भी न तो

हमारी पंचवर्षीय योजना के बारे में और न आजादी के बाद किये गए कामों के बारे में कुछ पूछा। सामान्य प्रगति और भावी योजनाओं के बारे में पूछना तो दूर ही रहा। वहां की सफलता के बारे में हमें जो आंकड़े दिये गए, वे निश्चय ही काफी दिलचस्प थे। परन्तु कहीं-कहीं हमें ऐसा भी लगा कि बात कुछ बढ़ा-चढ़ाकर भी कही जा रही है। कभी-कभी हम प्रश्न भी कर लेते और दूसरी जगहों से भी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते। तब पता चलता कि हमें दिये गए आंकड़े हमेशा सही नहीं होते। उदाहरण के लिए औद्योगिक प्रदर्शिनी में हमें दिये गए आंकड़े इतने प्रभावोत्पादक थे कि यदि वे सचमुच सही होते तो रूस को कहीं अधिक समृद्ध और प्रगतिशील होना चाहिए था, परन्तु प्रत्यक्ष में तो वह ऐसा नहीं दिखा।

: २ :

शासक-दल

सोवियत संघ में साम्यवादी दल के सदस्य सर्वत्र "कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं समर्थाः" अर्थात् सम्पूर्णतया सर्व-सत्ताधारी हैं। पार्टी के हर सदस्य के पास, यहांतक कि 'कोमसोमोल' के सदस्य के पास भी अपनी सदस्यता का परिचय-पत्र होता है। यह एक अधिकार-पत्र का काम देता है। जिसके पास यह है वह आदमी जहां चाहे जा सकता है और जो चाहे कर सकता है। उसे कोई रोक-टोक नहीं। मास्को में एक दिन ब्राडकास्ट के लिए हमें टेलीविजन स्टेशन पर ले जाया जा रहा था। हम बड़ी जल्दी में थे। इसलिए हमारा ड्राइवर निर्धारित रफ्तार से भी अधिक तेजी से कार चला रहा था। जब पुलिस के एक जवान ने हमारी कार रोकी तो हमारा दुभाषिया नीचे उतरा, उसने अपना परिचय-पत्र दिखाया और कुछ शब्द कहे। बस, वह अदब से देखता रह गया और हम आगे बढ़ गये।

एक दूसरी घटना। हम क्रीमिया के हवाई अड्डे सिम्फरोपोल की ओर कार से जा रहे थे। बीच में एक रेलवे क्रासिंग आया। फाटक बन्द था। रेल के आने में अभी कुछ देर थी। हमारा दुभाषिया नीचे उतरा। वह स्वयं इस प्रदेश का निवासी नहीं था। ड्यूटी पर जो औरत खड़ी थी, उसके मना करने पर भी उसने फाटक की सील तोड़ दी, फाटक खोल दिया और हमारी कार के जाने के लिए रास्ता बना दिया। वह औरत बेचारी हैरानी से उस दुभाषिये की तरफ देखती रह गई। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे और उसे कैसे रोके।

हवाई जहाज में, या जहां कहीं भी हम जाते, हमारे साथ विशेष अतिथि का-सा व्यवहार होता और खासतौर पर सुरक्षित जगहों पर हमें बैठाया जाता। सिम्फरोपोल से हम याल्टा जा रहे थे। यह समुद्र-तट पर एक सुन्दर स्वास्थ्यप्रद स्थान है। पिछले महायुद्ध के अंत में सन् १९४५ में बड़े तीन—स्तालिन, चर्चिल और रूजवेल्ट का सम्मेलन यहीं हुआ था। इस कारण सारे संसार में यह स्थान प्रसिद्ध है। डेढ़ सौ मील ग्रामीण प्रदेश के बीच में से होते हुए हम गये। हम ग्यारह आदमी थे—सात तो हम और चार स्थानीय युवक-संगठन के सदस्य। सिर्फ ग्यारह व्यक्तियों के लिए चार बड़ी-बड़ी कारें तैनात थीं। उन्होंने मोटर-साइकलवाले एक पुलिस के आदमी का भी प्रबन्ध कर दिया था, जो पायलेट की तरह हमारे आगे-आगे जाता था। यह स्थानीय व्यक्ति था। वह हमारे आगेवाली हर कार को इशारे से सूचित करता जा रहा था कि वह जरा रुक जाय या दाहिनी ओर सड़क के बिल्कुल किनारे हो जाय, ताकि हम आसानी से उसके आगे हो जायं। जो गाड़ियां सामने से आतीं उन्हें, रफ्तार कम करके, एकदम बांयें से गुजरने के लिए इशारा करता जा रहा था, ताकि हमें कोई कठिनाई न हो। हमारे पूछने पर कि हमारे लिए इतना सब इंतजाम करने की क्या जरूरत थी, हमें बताया गया कि वह रास्ता कठिन व पहाड़ी था। बहुत-से बड़े आड़े-तिरछे मोड़ उसपर हैं। कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय, इसलिए स्थानीय पुलिस को हिदायतें हैं कि विदेशी मेहमानों के साथ इस प्रकार के मार्गदर्शक दिये जायं। अपने देश में तो इस प्रकार पुलिस के गार्ड केवल विशिष्ट सरकारी मेहमानों को ही दिये जाते हैं। इसलिए जब हमने देखा कि हमारे जैसे गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मंडल को इतना महत्व दिया जा रहा है, तो हमें कुछ अटपटा-सा लगा और संकोच भी हुआ।

रूस में साम्यवादी दल और उसके सदस्यों की सत्ता के प्रति कोई सन्देह नहीं करता। उनके परिचय-पत्रों का असर जादू की तरह होता है। किसी काम को करवाने के लिए उन्हें अलग से संबंधित अधिकारियों के

किसी पत्र आदि की जरूरत नहीं होती। इसी प्रकार शासन के अधिकारियों को भी कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्यों को कोई काम करने के लिए अलग से कोई सूचना देने की जरूरत नहीं होती। पार्टी के सदस्य का वहां स्वयं पहुंच जाना ही काफी होता है। सारा काम पार्टी के नाम पर होता है। दरअसल सारी सत्ता पार्टी के ही हाथों में है। उनका तो कहना और मानना है ही कि अन्ततः पार्टी जो कुछ भी करती है, सब जनता के हित में ही करती है। परन्तु वास्तव में पूरा लाभ तो पार्टी के सदस्य ही उठाते हैं। उन्हें कोई रोक नहीं सकता। सारा काम पूरी गोपनीयता के साथ किया जाता है। शासन भय और आतंक के बल पर चलता है। बातें अवश्य उदारता की की जाती हैं। परन्तु आम जनता में सर्वत्र अविश्वास और भय व्याप्त है। हां, यह सच है कि आज वह इतना नहीं जितना स्तालिन के जमाने में था। फिर भी किसीको पूरा चैन और संतोष नहीं है।

रूस के युवक-संगठन 'कोमसोमोल' के प्रमुख सदस्यों ने हमें बताया कि उनका एक काम यह भी है कि वे युवकों के हितों की सर्वत्र देख-भाल करें – क्या खेतों में और क्या कारखानों में। इस संस्था का रूस में बड़ा असर है। उदाहरणार्थ कोमसोमोल के कुछ अधिकारियों ने हमें कहा कि किसी कारखाने का मुख्य व्यवस्थापक, जो स्वयं एक विख्यात वैज्ञानिक भी है, युवकों का जैसा ध्यान रखना चाहिए, नहीं रख रहा है। उनका दावा है कि वे प्रयत्न करके उसे अपने पद से हटा देंगे।

सोवियत संघ में बच्चों का केवल एक संगठन है। उसका नाम है—'यंग पायोनियर्स।' इसकी सदस्य-संख्या १४५ लाख है। इसका संचालन भी कोमसोमोल ही करता है। उसमें पूरा समय देनेवाले वैतनिक कार्यकर्त्ता हैं, जिनकी नियुक्ति और नियंत्रण कोमसोमोल के हाथों में है। परन्तु वेतन चुकाया जाता है सरकार के शिक्षा-मंत्रालय के द्वारा।

युवकों का एक मात्र संगठन कोमसोमोल है। इसकी सदस्य-संख्या १८० लाख है। इस संगठन का संचालन और नियन्त्रण पूरी तरह से कम्यूनिस्ट पार्टी करती है। इसका बजट भी करोड़ों रूबल का है,

जिसका अधिकांश शासन से ही मिलता है। स्वयं कम्यूनिस्ट पार्टी के बजट, उसकी आय के साधनों आदि के बारे में हमें बहुत अधिक जानकारी नहीं मिल सकी। केवल इतना ही ज्ञात हो सका कि इसके मातहत जितने संगठन और संस्थाएं काम करती हैं, उन्हें सहायता के तौर पर काफी धन-राशि सरकार से मिलती रहती है। इन तमाम संगठनों का उपयोग कम्यूनिस्ट पार्टी की ताकत बढ़ाने और उसे बनाये रखने के लिए होता है।

बच्चों का 'यंग पायोनियर्स' संगठन बहुत अच्छा है। बच्चों को वह जो शिक्षा और प्रशिक्षण दे रहा है, वह भी उपयोगी तथा हितकर है। बच्चे स्वस्थ, तेजस्वी और बुद्धिमान होते हैं। परन्तु मेरी समझ में नहीं आया कि इन सबसे साम्यवादी दल के प्रति वफादारी की शपथ क्यों दिलाई जाती है। यदि साम्यवादी समाज में कोई अन्तर्विरोध नहीं है, यदि सोवियत रूस की जनता के आपसी हितों में कोई संघर्ष नहीं है, यदि सरकार मजदूरों, किसानों और शेष जनता के हितों का प्रतिनिधित्व सही रूप में करती है, और इसलिए विरोधी दलों की कोई जरूरत नहीं है, जैसा कि वहां कहा जाता है, तो कम्यूनिस्ट पार्टी को टिकाये रखने और उसकी ताकत को बढ़ाने के लिए शासकीय कोष से रोजमर्रा इतना खर्च करने की जरूरत क्यों होनी चाहिए ? फिर सरकारी खर्च से चलनेवाले बच्चों और युवकों के ये संगठन शासन के मातहत क्यों नहीं ? ये कम्यूनिस्ट पार्टी के ही मातहत क्यों हैं ?

शासन लाखों कार्यकर्त्ताओं का खर्च देता है, परन्तु उनपर नियंत्रण सिर्फ कम्यूनिस्ट पार्टी का ही है। वस्तुतः वही उनसे काम लेती है और उनका उपयोग अपने संगठन की ताकत बढ़ाने में करती है। दावा तो यह है कि उनका संविधान लोकतंत्री है, वे इसी लोकतंत्र की पद्धति से चुनाव भी करते हैं और मानते हैं कि ये ही सिद्धान्त सबसे अच्छे हैं, परन्तु हम समझ नहीं पाये कि वहां यह सब जो हो रहा है, इसका मेल लोकतंत्र के सिद्धान्तों से कैसे बैठाया जा सकता है।

वे दावा करते हैं कि कोमसोमोल की प्राथमिक इकाइयों में अब उन्होंने

बिना किसी दखल के लोकतंत्री पद्धति के चुनाव शुरू कर दिये हैं, परन्तु वहां भी गुप्त मतदान की पद्धति नहीं अपनाई गई है। उन्होंने हमें बताया कि कम्यूनिस्ट पार्टी के पिछले अधिवेशन में यह अनुभव किया गया कि ठेठ नीचे के स्तर पर गुप्त मतदान की कोई आवश्यकता नहीं है। मतदाताओं को अपनी इच्छा के अनुसार चुनाव करने की आजादी दी जा सकती है। इससे यह साफ जाहिर होता है कि ऊपर के किसी भी स्तर के चुनावों में मतदान की और विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता नहीं है।

कामरेड वारानोव्स्कीने, जो युकरेन गणतंत्र में योजना-उपमंत्री हैं, हमें बताया कि यों तो उनके यहां पहले से ही विकेन्द्रीकरण था, परन्तु अब रूस के गणतन्त्रों को और भी अधिक अधिकार दे दिये गए हैं। पहली क्रान्ति के बाद देश में यांत्रिकों और वैज्ञानिकों की कमी के कारण सारे उद्योगों को केन्द्रीय सरकार के आधीन कर दिया गया था, परन्तु अब तो काफी वैज्ञानिक तैयार हो गये हैं और इसलिए अब वे उद्योगों को विकेन्द्रित करना चाहते हैं। विकेन्द्रीकरण में कई लाभ हैं। नौकरशाही तरीकों में जो अनावश्यक देरी होती है, वह इसमें नहीं होगी। सही और पूरी जानकारी ऊपर नहीं पहुंचने के कारण कभी-कभी जो गलत निर्णय हो जाते हैं, वे नहीं होंगे। फिर प्रत्यक्ष स्थान पर अधिकारियों के मौजूद होने के कारण परिस्थिति का अध्ययन हो सकेगा और निर्णय तुरन्त लिये जा सकेंगे। एक बात और है। हर जगह की परिस्थिति अलग-अलग होती है। दूर बैठकर इन सब बातों पर ठीक से विचार नहीं हो पाता। पहले देश के ४० प्रतिशत उद्योग राज्यों के अधीन थे। अब यह संख्या ९० प्रतिशत तक पहुंच गई है। चूंकि अब प्रत्येक राज्य अपनी समस्याएं खुद हल कर लेता है, इसलिए काम सरलता से और जल्दी-जल्दी निपट जाता है। उनके अधिकार भी बढ़ गये हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि केन्द्रीय सरकार अपने निर्णय राज्यों को सलाह लेकर ही करती है। वे देशभर में जितनी भी चीजें पैदा करते हैं, उनमें से चार सौ चीजों के बारे में, जो सारे राष्ट्र के लिए आवश्यक हैं,

केन्द्र स्वयं निर्णय करता है। केन्द्रीय योजना-आयोग में सारे राज्यों के प्रतिनिधि होते हैं, जो आयोग को अपने राज्य की आवश्यकताओं और उत्पादन-क्षमता के बारे में जानकारी देते रहते हैं। अन्त में सबकी जरूरतों का अच्छी तरह अध्ययन करने के बाद यह निश्चय किया जाता है कि हर वस्तु का कुल कितना उत्पादन किया जाय, और उसमें से कितना उत्पादन कौन-सा राज्य करे। प्रत्येक राज्य कितना उत्पादन करे, इसका निर्णय हो जाने के बाद बाकी सब चीजों का अमल राज्य-सरकारों पर छोड़ दिया जाता है। इस विकेन्द्रीकरण की नीति के फलस्वरूप इस वर्ष उत्पादन ११ प्रतिशत बढ़ गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि रूसियों का, अपने देश के भीतर भी, प्रवास करना बहुत सीमित है। हमें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि लेनिनग्राद में हमारा प्रबन्ध करनेवाले युवक-समिति के प्रमुख कार्यकर्ता भी कभी मास्को नहीं गये थे, जो कि वहां से बहुत दूर नहीं है। रेल से केवल एक रात की यात्रा है।

स्तालिन की मृत्यु के बाद वहां जरूर शासन-नीति में कुछ उदारता आई है। विशेषकर लड़ाई के दिनों में स्तालिन रूसियों का 'हीरो' बन गया था। उन्होंने समझ लिया था कि जबतक रूस किसी ऐसे मजबूत आदमी के हाथों में संगठित नहीं होगा, जो सारे राष्ट्र में एकता ला सके और मित्र-राष्ट्रों के साथ कड़ाई से पेश आ सके, तबतक वे युद्ध में कभी सफल नहीं होंगे। इसीलिए तो, गत महायुद्ध में, मरते समय रूसी सिपाही की जबान पर ये शब्द होते थे—"मैं अपनी मातृभूमि और स्तालिन के लिए जान दे रहा हूं।" रूस को नष्ट होने से बचाने के लिए यह जरूरी था कि वे लड़ाई में विजयी हों। इसलिए प्रत्येक रूसी स्तालिन के पीछे हो गया। लड़ाई के बाद स्तालिन ने इस स्थिति और अपनी लोक-प्रियता का पूरा-पूरा लाभ उठाया और वह वहां का तानाशाह बन बैठा। उसने अपने साथ केवल हां-में-हां मिलानेवालों को रखा। शेष सबको दूर हटा दिया। सारे राष्ट्र में आतंक का साम्राज्य छाया हुआ था। निःसन्देह यह स्थिति बहुत दिन तक

तो नहीं टिक सकती थी। कुछ उदारता का आना अनिवार्य था। आज के रूसी नेताओं के पल्ले ऐसा कोई पराक्रम नहीं है, जिससे वे रूस की जनता के दिलों पर उतना अधिकार पा सकें। यदि वे चाहते हैं कि उनके हाथों में सत्ता बनी रहे और वे जनता में अप्रिय भी नहीं बनें, तो जनसाधारण को कुछ आराम देना अनिवार्य हो गया था।

आज स्तालिन के बारे में शासन का अधिकृत रुख यह है कि वह एक महापुरुष था और उसने रूस के लिए बहुत-कुछ किया था, जिसके कारण उसका नाम देश के इतिहास में सदा के लिए अमर हो गया है। परन्तु उससे भी कुछ गलतियां तो हुई ही थीं। वे अब उन ग़लतियों को दुरुस्त करने में लगे हुए हैं। इनमें से मुख्य भूल थी व्यक्ति-पूजा। वे कहते हैं कि अब हमने इस गलती का पूरा पर्दाफाश कर दिया है और इससे हमें लाभ हुआ है। लोगों को बिना कारण जेल में डाल दिया जाता, उन्हें फांसी पर भी लटका दिया जाता या गोली से उड़ा दिया जाता था। इस भूल को हमने सुधार लिया है और अब हमें आशा है कि भविष्य में कानून को नजर अंदाज नहीं किया जायगा। उनका मानना है कि देश के बाहर और भीतर भी उनके दुश्मन इतने अधिक हैं कि उनके लिए सावधानी, सतर्कता, और एकता से रहना बहुत आवश्यक है। वे अनुभव करते हैं कि उनपर एक महान जिम्मेदारी आई है, जिसे पूरी करने के लिए उन्हें अपने-आप रास्ता ढूंढ़ना होगा। जाहिर है कि इसमें भूलें होंगी और भूलें करते-करते ही आगे के लिए रास्ता निकलेगा। चीनियों को यह कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि रूसियों की भूलों, प्रयोगों और अनुभवों का लाभ उन्हें अपने-आप मिल जायगा।

रूस में कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य अनुभव करते हैं कि स्तालिन के समय की अपेक्षा अब सत्ता का आधार काफी अधिक व्यापक बना दिया गया है। यों तो स्तालिन की भांति ही ख़ुश्चोव भी सरकार और दल दोनों के प्रधानमंत्री हैं, परन्तु आज सारी सत्ता अकेले उनके हाथों में केन्द्रित नहीं है। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय वह अकेले नहीं करते, बल्कि सारी पार्टी करती है। आधारभूत नीति के बारे में निर्णय करने का पूरा अधिकार

प्रीसीडियम को भी नहीं है। ऐसे निर्णयों में पार्टी के अन्य सदस्यों का भी हाथ रहता है। इससे प्रकट है कि स्वयं पार्टी के सदस्य भी सत्ता के केन्द्रीकरण को पसन्द नहीं करते। परन्तु एक बात स्पष्ट है। कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य लोकतन्त्र के सिद्धान्तों को चाहते तो हैं, परन्तु केवल अपने बीच। वे सत्ता को छोड़ना नहीं चाहते। दूसरों के लिए नहीं, केवल अपने लिए लोकतन्त्र लागू करना चाहते हैं।

बात यह है कि यदि किसी एक आदमी के हाथ में सत्ता आ जाती है तो फिर वह उसे अपने ही हाथों में रखना चाहता है। यदि परिस्थिति-वश केवल वह सर्वशक्तिमान नहीं रह पाता तो सत्ता एक गुट के पास आ जाती है। फिर वह गुट अपने हाथ में आई सत्ता से चिपटे रहना चाहता है। और जब वह देखता है कि वह भी उस सत्ता की रक्षा नहीं कर सकता तो और भी कुछ लोगों को अपना साझीदार बना लेता है। इस तरह शासन की बागडोर अधिक लोगों के हाथों में पहुंच जाती है। रेल के तीसरे दर्जे में सफर करनेवाले मुसाफिरों की मनोवृत्ति से वहां के शासन की तुलना की जा सकती है। जब कोई नया मुसाफिर उस डब्बे में घुसना चाहता है तो अन्दर के सब मुसाफिर मिलकर उसको रोकते हैं। परन्तु यदि इस सारे विरोध और प्रतिकार के बावजूद वह अन्दर घुस आता है, तो वह भी उन मुसाफिरों में से एक बन जाता है और डब्बे के अन्दर आना चाहनेवाले नये मुसाफ़िरों को रोकने में शरीक हो जाता है। यह खींचातानी समय-समय पर होती ही रहती है।

मुझे लगता है कि रूस में भी यह प्रक्रिया काम करेगी और समय के साथ-साथ सत्ता में अधिकाधिक लोग शरीक होते रहेंगे। हां, यदि इसी बीच पार्टी या फौज में कोई जोरदार तानाशाह पैदा होकर सर्वसत्ता-धारी बन जाय तो बात अलग है।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि इस बीसवीं सदी के प्रगतिशील युग में भी कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता अपने देश की साधारण जनता को इतने अंधेरे में कैसे रखे हुए हैं? आम जनता को बाहरी संसार

की परिस्थिति के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं। दूसरे देशों का जीवन कैसा है, उनका रहन-सहन का स्तर कैसा है, उनके विचार क्या हैं, इन सब बातों के बारे में वे कुछ भी जानते। जनता को हमेशा इकतरफा समाचार दिये जाते रहे हैं, जो अत्युक्तिपूर्ण और एक खास दृष्टिकोण को लिये रहते हैं। अपने देश की इतनी बड़ी आबादी को अज्ञान के गहरे गर्त में रखने में वे किस प्रकार सफल हुए हैं, यह मेरे लिए अभी तक एक प्रश्न चिन्ह ही बना हुआ है। आखिर उन्हें ऐसा करने की जरूरत ही क्या है? खासकर तब जबकि इसके लिए उन्हें इतनी कीमत चुकानी पड़ती है। यह पहेली तब और भी जटिल बन जाती है जब हम देखते हैं कि रूसी लोग न केवल अपने ही देश पर शासन कर रहे हैं, बल्कि संसार के लगभग आधे भाग पर उनका प्रभाव है। और जब हम देखते हैं कि इस सबमें उनके अपने अधिकांश देश-भाइयों का भी पूरा क्रियात्मक सहयोग नहीं है, तो और भी आश्चर्य होता है कि वे किस तरह अपना कारोबार चलाते हैं। पता नहीं यह इस तरह कबतक चल सकेगा। यह भी संभव हो सकता है कि शीघ्र ही फौज अपने हाथ में सत्ता ले ले या स्वयं पार्टी में फूट पड़ जाय और देश में विप्लव हो जाय। मोलोतोव, मालेनकोब, बुलगानिन और जुकोव जैसे चोटी के नेताओं को मिनटों में राजनीति के रंगमंच से हमेशा के लिए हटा दिया गया। यह परिस्थिति कबतक बनी रहेगी और कबतक लोग यह सब चुपचाप बरदाश्त करते रहेंगे—ये ऐसे महत्वपूर्ण सवाल हैं, जो स्वाभाविक ही सारी दुनिया के लोगों को विचलित किये हुए हैं।

परन्तु कुल मिलाकर मुझे लगता है कि रूस के लोग आगे ही बढ़ रहे हैं। उनका रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठ रहा है। उनका सैनिक बल भी बढ़ रहा है। परन्तु दिल में यह सवाल जरूर उठता है कि यह सब किस कीमत पर? जनसाधारण मुझे बहुत सुखी नहीं दिखे। उनसे अत्यधिक परिश्रम कराया जाता है। उनके जीवन में न विश्वास है और न आनन्द। जीवन में किसी बात की निश्चिन्तता नहीं। हर आदमी

अधिकाधिक भौतिक सुखों के पीछे पड़ा है। परन्तु उसे यह भी नसीब नहीं। वे इतनी प्रगति कर रहे हैं और संसार में इतने शक्तिशाली हैं, फिर भी साधारण मनुष्य को इससे विशेष लाभ नहीं पहुंचता। यह सब देखकर मुझे तो और भी निश्चय हो गया है कि हमारी यह लोकतंत्र की पद्धति ही हमारे देश के लिए सबसे अच्छी है जिसमें व्यक्ति को पूरी स्वतन्त्रता है। हां, हमारी प्रगति की रफ्तार जरूर धीमी है। फिर भी वह स्थिर और निश्चित है। यद्यपि हमारा रहन-सहन का स्तर फिलहाल नीचा है, फिर भी लोग वहां से अधिक सुखी हैं और शांति से रहते हैं। स्वभावत: ये विचार सर्वांगीण नहीं हो सकते। हम वहां इतना कम समय रहे कि इतने बड़े देश की वास्तविक स्थिति का ज्ञान इतने थोड़े समय में हो ही नहीं सकता। यह तो मेरे मन पर जो प्रभाव हुआ है, उसे मैंने निष्पक्ष भाव से और स्पष्ट रूप से लिख दिया है। संभव है, यदि मुझे रूस की स्थति का और अधिक अध्ययन करने का मौका मिले तो मुझे अपने कुछ विचार बदलने भी पड़ें।

इस प्रकरण को समाप्त करने से पहले सावधानी के तौर पर मैं एक बात कह दूं। रूस की आम जनता को और वहां के कम्यूनिस्ट शासन को एक नहीं मानना चाहिए। दोनों के बीच का अंतर अलग-अलग स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। रूसी जनता का असली रूप वही है, जो हम तॉल्स्तॉय और दोस्तव्स्की के उपन्यासों में पढ़ते हैं। उन्हें अपने अतीत और उसकी परम्पराओं तथा संस्कृति पर गर्व है। वे स्नेहशील और आतिथेय हैं। सरल स्वभाव के और भले हैं—जैसे किसी भी देश के लोग आमतौर पर होते हैं। परन्तु कम्यूनिस्ट शासन की बात दूसरी है। उसमें गुप्तता, सर्वसत्ताधारिता, तानाशाही और नीति-हीनता है। वह आतंक से काम लेता है और शरीर तथा मन को भी फौजी अनुशासन में जकड़ देने की उसकी प्रवृति है। इसलिए रूस के शासन की रीति-नीति देखकर उसपर से वहां की आम जनता के स्वभाव, आशाओं और आकांक्षाओं का सही प्रतिबिंब पड़ता हो, यह जरूरी नहीं है।

: ३ :

यंग पायनियर्स

सोवियत रूस में एक बड़ी महत्वपूर्ण और दिलचस्प संस्था की प्रवृत्तियों को देखने और अध्ययन करने का हमें सुअवसर मिला। उसका नाम है, 'यंग पायनियर्स'। १६ जून को हम 'यंग लेनिन पायनियर्स' संगठन के सुप्रीम कौंसिल के दफ्तर में गये। कामरेड फिदोतवा उसके उपसभापति हैं। उन्होंने और कामरेड जिरेवा ने हमें यंग पायनियर्स की प्रवृत्तियों के बारे में सारी जानकारी विस्तारपूर्वक समझाई। हमारे देश के बच्चों के प्रति यंग पायनियर्स की शुभ कामनाओं के प्रतीक के रूप में उन्होंने हमें एक बिगुल और एक ड्रम भी भेंट किया।

यंग पायनियर्स स्कूल में जानेवाले बच्चों का एक विशाल राजनैतिक संगठन है। छत्तीस वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई थी। इस संस्था की सदस्यता ऐच्छिक है।

स्कूलों में जानेवाले लड़के और लड़कियों को, जो इसमें शरीक होते हैं, शपथ लेनी पड़ती है कि "मैं सोवियत यूनियन का यंग पायोनियर हूं। अपने साथियों के सामने मैं वचन देता हूं कि मैं अपनी सोवियत मातृभूमि को प्यार करूंगा। महान लेनिन के उपदेशानुसार तथा कम्यूनिस्ट पार्टी के मार्गदर्शन में मैं चलूंगा, अध्ययन करूंगा तथा जूझूंगा।"

यह शपथ लेने के बाद यंग पायनियर को एक लाल टाई दी जाती है और उसे संगठन का सदस्य बना लिया जाता है।

इस प्रवृत्ति और संगठन के संचालकों के सामने अपना लक्ष्य स्पष्ट है। वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि यंग पायनियर को क्या बनना

है। यंग पायनियर मातृभूमि और कम्यूनिस्ट पार्टी का भक्त होता है। वह कोमसोमोल का सदस्य बनने के लिए अपनेको तैयार करता है। सोवियत मातृभूमि को स्वतन्त्र और समृद्ध बनाने के लिए जिन-जिन लोगों ने अपने प्राण अर्पण कर दिये, उनकी स्मृति को वह अपने हृदय में सदा संजोता रहता है। संसारभर में उसके बाल-मित्र होते हैं। वह लगन और मेहनत के साथ अध्ययन करता है और व्यवहार में नेक और विनयशील होता है। उसे कॉमरेड या सहयोगी कहा जाता है। वह अपने से छोटों की संभाल करता है और बड़ों की सेवा-सहायता। वह राष्ट्र की संपत्ति की संभाल करता है। उसमें साहस और धैर्य होता है और वह कठिनाइयों से डरता नहीं। सदा सत्य बोलता है। अपने दल के सम्मान की रक्षा का उसे सदा ध्यान रहता है। व्यायाम के लिए वह नित्य सवेरे खेलों में भाग लेता है। प्रकृति का वह भक्त होता है। पेड़-पौधों, हरियाली, पशु-पक्षियों की वह रक्षा करता है। संक्षेप में, यंग पायनियर दूसरों के लिए एक आदर्श बालक होता है।

पायनियरों के दल अधिकतर अपने विद्यालयों से संलग्न रहते हैं और उनके काम-काज में मदद करते हैं। छात्रालयों और शिविरों में भी पायनियरों के दल होते हैं। स्कूल का दल प्राथमिक दल कहलाता है। उसके मातहत अनेक छोटे-छोटे दल होते हैं। एक दल में तीस से लेकर चालीस पायनियर होते हैं। साधारणत: एक दल एक कक्षा (क्लास) के बराबर होता है। यदि किसी बड़े मकान में एक ही विद्यालय के बहुत-से पायनियर रहते हैं तो वे वहां भी अपना एक स्वतंत्र दल बना लेते हैं। कोमसोमोल की भांति उनके भी जिला-संगठन और नगरीय, प्रादेशिक और केन्द्रीय कौंसिलें होती हैं।

अपने दलों का संचालन पायनियर स्वयं ही करते हैं। वे अपने मन्त्री और नेताओं का चुनाव भी खुद ही कर लेते हैं। आमतौर पर कोम-सोमोल इनका मार्गदर्शन करता है। प्रत्येक बड़े दल के मुख्य नेता की नियुक्ति कोमसोमोल करता है। इस पद के लिए वह अपना अच्छा-से-

अच्छा कार्यकर्ता भेजता है।

हर पायनियर-दल का संचालन उन्हींका चुना हुआ एक नेता, सलाहकार के रूप में कोमसोमोल का एक प्रतिनिधि और कोमसोमोल द्वारा नियुक्त एक पूरा समय देनेवाला सवैतनिक कर्मचारी मिलकर करते हैं। कुल मिलाकर इस प्रकार पूरा समय देनेवाले शिक्षक पचास हजार हैं। इनका वेतन शिक्षा-मन्त्रालय द्वारा दिया जाता है। चूंकि बच्चे कमाते नहीं हैं, इसलिए उन्हें कोई फीस नहीं देनी होती। ट्रेड यूनियन की केन्द्रीय कौंसिल बच्चों के इस संगठन को उसके साधारण कामकाज के लिए, जिसके अन्दर खेल और टूर्नामेंट भी आ जाते हैं, प्रतिवर्ष १६,५०,००,००० रूबल देती है। इसके अलावा इनके शिविरों आदि के आयोजनों के लिए भी वह रकम देता है।

इस संगठन की सदस्य-संख्या लगभग १,४५,००,००० है। समस्त राष्ट्र में सात वर्ष से लेकर सत्रह वर्ष की उम्र के स्कूल जानेवाले बच्चों की कुल संख्या तीन करोड़ है। उनमें से दस और पंद्रह वर्ष की बीच की उम्रवाले बच्चे इस संगठन के सदस्य हैं। उनकी यह उपर्युक्त संख्या है।

देश में सात लाख छोटे और दो लाख बड़े दल हैं। स्कूलों की संख्या भी इतनी ही है। रूस में प्राथमिक शिक्षा की पढ़ाई चार वर्ष की है, माध्यमिक शिक्षा की तीन वर्ष की और उसके बाद उच्च माध्यमिक शिक्षा की तीन वर्ष की। इस प्रकार स्कूली शिक्षा कुल मिलाकर दस वर्ष की होती है। खेलकूद और मनोरंजन-सम्बन्धी लगभग सारी प्रवृत्तियों का प्रबन्ध यंग पायोनियर्स के दल करते हैं। अपने सदस्यों के फुरसत के समय के सदुपयोग का व्यवस्थित इंतजाम भी वे ही करते हैं। प्रत्येक स्कूल अथवा मकानों की एक इकाई के साथ उसका अपना खेल का मैदान भी होता है। इसके अलावा लगभग दस हजार अन्य संस्थाएं हैं, जो बच्चों के खेलकूद आदि में दिलचस्पी लेती हैं, प्रवासियों के केन्द्रों की देखभाल करती हैं और नौजवानों को विविध यंत्रों आदि के प्रशिक्षण का प्रबन्ध करती हैं। यंग पायोनियर्स के सदस्य बच्चों को अपनी रुचि के अनुसार

इन प्राविधिक' विषयों में रस लेने के लिए हर प्रकार से अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जाता है। हवाई जहाज और जल-जहाज आदि के बनाने में जिनको रुचि है, ऐसे बच्चों और किशोरों के लिए विशेष विभाग खुले हुए हैं।

यंग पायनियर्स के बच्चे यदि कोई प्रशंसनीय काम करते हैं तो सरकार की तरफ से उनको विशेष रूप से मान्यता भी दी जाती है। हाल ही में यंग पायनियर, लोला कारपारस्काया ने एक बच्चे को जलने से बचा लिया। उसको विशेष रूप से सम्मानित किया गया। एक दूसरे लड़के ने अनेक भेड़ों को बर्फानी तूफान से बचा लिया। उसका भी नाम सम्मान-प्राप्त किशोरों की सूची में लिख लिया गया।

बच्चों को पैदल यात्राओं के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। वे अपनी गरमी की छुट्टियां किस प्रकार बिताते हैं, इसको बड़ा महत्व दिया जाता है। शहरों, गांवों और सामूहिक खेतों पर सर्वत्र ग्रीष्म-कालीन शिविर आयोजित किये जाते हैं। गांवों के शिविरों में लगभग तीस लाख बच्चे प्रति वर्ष भाग लेते हैं। इन देहाती शिविरों के लिए पिछले वर्ष १ अरब ६० करोड़ रूबल का खर्च मंजूर किया गया था। इन शिविरों के लिए शिक्षक यंग पायनियर्स की केन्द्रीय कौंसिल भेजती है। शरीर-श्रम को इन शिविरों में सबसे अधिक महत्व दिया जाता है।

हर लड़के और लड़की के पास एक खास पायनियर की वर्दी होती है, जो विशेष अवसरों पर पहनी जाती है। वर्दी की बनावट बच्चों की अपनी रुचि की होती है। हां, रंग निर्धारित होते हैं। कीमत माता-पिता चुकाते हैं।

पायनियर बेकार पड़ी हुई उपयोगी चीजें, जैसे लोहे के टुकड़े आदि एकत्र करने का अभियान भी करते हैं और उन्हें कारखानों को बेच देते हैं। युक्रेन के यंग पायनियर्स ने एक बार इस तरह सत्तर वैगन कपास एकत्र कर ली, जो उन्होंने लेनिनग्राद के एक कारखाने को भेंट कर दी।

सोवियत संघ की अपनी यात्रा के दौरान पायनियर्स के ऐसे अनेक

शिविरों में हम गये। २५ जून को पहले-पहल हम ऐसे एक शिविर में गये, जो काले समुद्र के किनारे याल्टा के पास आरटेक में लगा था। उसका नाम था 'यूनियन लेनिन पायनियर कैंप'। इसमें तीनसौ पैंतीस यंग पायनियर्स लड़के-लड़कियां थे, जो सोवियत संघ के विभिन्न गणराज्यों से आये थे। बच्चे अपनी वर्दियों में बड़े सुन्दर और खुश लग रहे थे—सभ्य और हँसमुख। उन्होंने बड़े प्रेम से हर्ष-ध्वनि के साथ हमारा स्वागत किया। हमारे दिलों पर इन बच्चों के स्नेह का बड़ा असर हुआ।

शिविर चालीस दिन का था। हम आखिरी दिन पहुंचे थे। बच्चों ने हमें बताया कि यद्यपि शिविर बहुत अच्छा रहा, परन्तु कहीं घर से इसकी तुलना की जा सकती है? अब तो वे इस बात पर खुश हो रहे थे कि वापस घर जा रहे हैं। कितने ही बच्चों को अपने घर की याद सताने लगी थी। इनके बीच एक भारतीय बच्ची—कल्पना साहनी—को देखकर हमें बड़ी खुशी हुई। वह बहुत अच्छी रूसी बोल लेती थी और हर तरह से उनमें घुल-मिल गई थी।

बच्चों का बहुत-सा समय तो समुद्र के रेतीले तट पर खेलने और समुद्र में तैरने में बीत जाता था। उन्होंने अपनी एक छोटी-सी प्रदर्शिनी भी की थी। इसकी सारी रचना और सजावट प्रायः बच्चों ने ही की थी और अधिकांश चीजें बच्चों की ही जमा की हुई या बनाई हुई थीं। भोजन के समय उन्होंने हमारी बहुत खातिर की। भाषा की कठिनाई बाधक नहीं हुई। उसके बाद उन्होंने हमें विश्राम करने के लिए कहा और अपना संगीत सुनाया। प्रतिमा से उन्होंने कुछ भारतीय गीत भी सुनाने को कहा। हमने उन्हें कुछ भारतीय ग्रामोफोन रिकार्ड भेंट में दिये।

शिविर एक सैनेटोरियम के ढंग का था। यहांपर प्रतिवर्ष ऐसे चार शिविर होते हैं। ये शिविर लम्बी अवधि तक चलते हैं। ग्रीष्मकालीन शिविर तो काफी अधिक लम्बा—पूरे मौसम का होता है। काम करने-वाले स्थायी होते हैं। इन चारों शिविरों पर अनुमानतः २,६०,००,०००

रूबल सालाना खर्च हो जाता है।

इस शिविर का दैनिक कार्यक्रम कुछ इस प्रकार था—प्रातः सात बजे उठना, आठ बजे नाश्ता, नौ बजे समुद्र तट पर सैर, डाक्टरी-जाँच, भिन्न-भिन्न दलों में अध्ययन, तैरना, खेल आदि, फोटोग्राफी, सुतारी का काम, बिजली और अन्य यन्त्रों की ड्राइंग, मॉडल बनाना, प्रकृति का अध्ययन, साहित्य, नृत्य, संगीत, शतरंज और लड़कियों के लिए सीना-पिरोना आदि विषय वहां पढ़ाये जाते हैं। खेलों में वहां वॉलीबॉल और बास्केट बॉल होता है। एक बजे भोजन। इसके बाद दो घंटे विश्राम। शाम को पांच बजे चाय और उसके बाद खेल। कुछ बच्चे किश्तियां लेकर सैर पर निकल जाते हैं। यह सब आठ बजे तक चलता है। फिर रात का भोजन। और उसके बाद गायन या पठन। सिनेमा, चिट्ठी-पत्री लिखना आदि दस बजे तक चलता है। दस बजे सो जाना सबके लिए लाजिमी है।

शिविर पर पहुँचते ही सबसे पहले बच्चों को दस भिन्न-भिन्न समूहों में बांट दिया जाता है। प्रत्येक समूह में साधारणतया तीस बच्चे होते हैं। वे स्वयं ही अपना समूह पसन्द कर लेते हैं और प्रतिदिन के अध्ययन के लिए विषय भी चुन लेते हैं। यद्यपि अध्ययन करना महत्वपूर्ण माना जाता है फिर भी इन वर्गों में उपस्थिति आवश्यक नहीं।

समुद्र के किनारे इस तरह के और भी शिविर होते रहते हैं। परन्तु हमने जो शिविर देखा वह सबसे नया और सोवियत संघ में सबसे अधिक प्रसिद्ध था। निःसन्देह उसकी योजना बहुत अच्छे ढंग से की गई थी और वह बड़ा आकर्षक था। पण्डित नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी जब सोवियत संघ की यात्रा पर आए थे, तब उनको भी इसी शिविर में लाया गया था।

इन शिविरों में प्रत्येक राज्य से कितने पायनियर लिये जायं यह कोमसोमोल की केन्द्रीय कौन्सिल निश्चित करती है। जिलों से लिए जाने वाले पायनियर की संख्या राज्य निश्चित करता है। तदनुसार ठेठ नीचे की

स्कूल पायनियर समितियां अपनी-अपनी संख्या निश्चित कर लेती हैं। सर्वश्रेष्ठ पायनियरों को ही चुनकर यहां भेजा जाता है। इस प्रकार चुनकर यहां भेजा जाना बच्चों के लिए बड़े सम्मान की बात मानी जाती है। पैंतालीस प्रतिशत जगहें उन बच्चों के लिए सुरक्षित रखी जाती हैं, जिनके माता-पिता गत महायुद्ध में मारे गए थे। इसी प्रकार जो पढ़ाई में तेज हैं अथवा बहुत गरीब हैं, उनको भी प्राथमिकता दी जाती है। हमें कहा गया कि चुनाव योग्यता और जरूरत दोनों बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है। पायनियर खुद ही चुने जाने योग्य बच्चों के कई नाम सुझाते हैं। शिक्षकों की समिति इनमें से अंतिम नामों का चुनाव करती है। शिविर से विदा होने से पहले प्रत्येक पायनियर को एक प्रमाण-पत्र दिया जाता है, जिसमें लिखा जाता है कि उसने किन-किन विषयों का अध्ययन किया तथा किस विषय में उसे विशेष रुचि है।

इससे पहले एक बार हम लोग मोटर में सिम्फरोपोल से याल्टा जा रहे थे। रात का भोजन रास्ते में एक अच्छे रेस्तरां में किया, जो एक सुन्दर टेकड़ी पर बना है। रात के आठ बजे होंगे। टेकड़ी के ऊपर से हमने देखा कि नीचे एक 'कैंप फायर' हो रहा है। जब हमें बताया गया कि वह यंग पायनियर्स का शिविर है, तो हम टेकड़ी से उतरकर शिविर के संचालकों की अनुमति लेकर उसमें शरीक हो गये। बच्चे बहुत खुश हुए। उन्होंने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया और स्वाभाविक रूप से अपने कार्यक्रम में पूरी तरह से भाग लेने के लिए हमें मजबूर कर दिया। सब लड़के और लड़कियां अपनी वर्दियों में थे। उनकी संख्या चार सौ के करीब होगी। कोई गा रहा था, कोई खेल रहा था। सब आनन्द कर रहे थे। इस 'आलुस्था पायनियर कैंप' के बच्चों ने हमें गीत सुनाये और नृत्य किया। प्रतिमा को भी गाने के लिए कहा। यह कोई पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम तो था नहीं। पूर्व-सूचना नहीं देने पर भी हम इस शिविर में सम्मिलित हो सके और उनके साधारण कार्यक्रम में भाग ले सके, इससे हमें बड़ी खुशी हुई।

२८ जून को हम याल्टा से कीव के लिए रवाना होनेवाले थे। उस दिन सुबह हमारे रवाना होने से ज़रा पहले अस्सी पायनियर अपने नेता के साथ हमारे होटल पर हमसे मिलने और हमें विदा देने के लिए आ पहुंचे। इसकी पूर्व-सूचना उन्होंने हमें नहीं दी थी। उन्होंने हमें अपने लाल-स्कार्फ भेंट किये और चाहा कि हम उनकी शुभेच्छाएं और प्रेम भारत के बच्चों को पहुंचा दें। उनके उत्साह और उमंग का पार नहीं था। वे सब बहुत प्यारे लग रहे थे। उनकी इस विदाई से हम सब अभिभूत हो गये, क्योंकि वह हार्दिक और सहज थी।

३० जून को हम कीव के निकट एक और पायनियर-शिविर में गये। वह उसी समय खुला था, इसलिए उसका नामकरण नहीं हो पाया था। वह भूगर्भ का अध्ययन करनेवाले बच्चों के लिए था। गर्मी के मौसम में यहां उनके तीन शिविर होते हैं। प्रत्येक शिविर छब्बीस दिन का होता है। शेष नौ महीनों में भी यहां कुछ कम अवधिवाले अनेक छोटे-छोटे शिविर लगते रहते हैं। इनमें ७ से १४ वर्ष के बच्चों को लिया जाता है। ये प्रायः युक्रेन के ही होते हैं। कुछ बच्चे लेनिनग्राद तथा आर्कटिक प्रदेशों तक से आते हैं।

उस शिविर में दो सौ चालीस व्यक्ति थे। हम जिस समय वहां पहुंचे, वह उनके विश्राम का समय था। परन्तु हमारे पहुंचने से पहले एक व्यक्ति को मोटर साइकिल पर वहां भेज दिया गया था और उसने हमारे आने की सूचना उन्हें पहले से ही दे दी थी। इसलिए जब हम पहुंचे तो हमने देखा कि फाटक पर बच्चे दोनों ओर कतार बनाये और अपने हाथों में फूल लिये हमारे स्वागत के लिए तैयार खड़े हैं। जैसे ही हमने प्रवेश किया, बच्चों ने दोनों तरफ से हमपर फूल बरसाना शुरू कर दिया। बहुत ही रोमांचकारी अनुभव था यह हम सबके लिए! सामने ही एक बड़े गत्ते पर लिखा था—"हम युक्रेन के पायनियर अपने भारतीय मित्रों का स्वागत करते हैं।"

सारे बच्चे क्षणभर में हमारे मित्र बन गये। प्रेम उनमें छलक रहा

था। हममें से हरेक के साथ दस-दस, पंद्रह-पंद्रह बच्चे हो लिये और लगे हमें अपने सारे शिविर में घुमाने और हर चीज दिखाने। शिविर एक विशाल क्षेत्र में लगा हुआ था, जिसमें बहुत बड़े और सुन्दर बगीचे और खेल के मैदान भी थे। जब बच्चे इस प्रकार हमें घुमा रहे थे तब उनके साथ कोई बुजुर्ग शिक्षक आदि नहीं थे। बड़े आत्म-विश्वास के साथ उन्होंने हमारा मार्ग-दर्शन किया और चारों तरफ घुमा-घुमाकर अच्छी तरह से अपनी सारी प्रवृत्तियां दिखाते रहे। ढेर सारी चेरी और स्ट्राबेरी उन्होंने इकट्ठी कर लीं और हमें दीं। उनका आग्रह था कि हम उनके सामने ही इन्हें खाकर समाप्त कर दें। उन्होंने हर पेड़ और पौधे का इतिहास बताया। उन्हें किसने लगाया—उन्होंने या उनके पहलेवाले बच्चों ने—और वह उनके शिविर के लिए कितने उपयोगी हैं, आदि। खेत और बगीचे में काम करने में उन्हें बड़ा मजा आता था।

भोजन के बाद मैंने आठ बच्चों को अपने पास बुलाया। सब लड़के थे। दस-बारह वर्ष के होंगे। हमारे दुभाषिये के द्वारा मैंने उनसे पूछा कि वे भारत के बारे में क्या जानते हैं। उन्होंने तुरन्त जवाब दिया। झिझक का तो नाम ही नहीं था। उन्होंने कहा, "भारत एक बड़ा देश है। बम्बई और कलकत्ता संसार के बड़े-से-बड़े शहरों में से हैं। भारत बड़ा समृद्ध है। वहां खूब सोना, चांदी और दूसरी धातुएं भी हैं। वहां जाड़ा नहीं होता। भारत के लोग शान्तिप्रिय हैं।"

ये हैं कुछ और प्रश्न और उनके जवाब—

प्रश्न—आपने इतने प्रेम से हमारा स्वागत क्यों किया ?

उत्तर—आप ऐसे देश से आये हैं, जो बहुत दूर है।

प्रश्न—आपने इतना प्रेम दिखाया, इसका कारण क्या यह है कि हम बहुत दूर से आये हैं या इसलिए कि हम भारत से आये हैं ?

उत्तर—ओह, इसलिए कि आप भारत से आये हैं।

प्रश्न—तो भारतवालों से इतना विशेष प्रेम क्यों ?

उत्तर—इसलिए कि हम उनसे मित्रता बढ़ाना चाहते हैं।

प्रश्न—हमसे ऐसा प्रेम बढ़ाने के लिए आपको किसने सिखाया ?

उत्तर—लेनिन ने।

प्रश्न—क्यों ?

उत्तर—क्योंकि यदि हम भारत से और दूसरे देशों से प्रेम बढ़ायेंगे तो फिर कभी युद्ध नहीं होगा।

प्रश्न—आप भारत में किसीको जानते हैं ?

उत्तर—जवाहरलाल नेहरू, राधाकृष्णन्, राजकपूर, नरगिस।

प्रश्न—जवाहरलाल नेहरू के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—वह भारत के प्रधानमन्त्री हैं। वह सारी सरकार को चलाते हैं। जब वह किसी दूसरे देश में जाते हैं तो वहां के बड़े-से-बड़े नेताओं से मिलते हैं। वह चाहते हैं कि संसार के सारे देश आपस में व्यापार करें। उनकी एक लड़की है। हमने दोनों को टेलीविजन पर देखा है। उन्होंने कीव के बच्चों के लिए दो हाथी भेंट किये हैं। हमारे नेताओं ने उन्हें एक हवाई जहाज भेंट किया है।

एक बारह वर्ष के बच्चे ने कहा कि भारत को उद्योग खूब बढ़ाने चाहिए और जहाज बनाने चाहिए। जब अंग्रेज भारत पर राज करते थे तब नेहरू को आठ वर्ष जेल में काटने पड़े थे।

प्रश्न—क्या आप नेहरू को पसन्द करते हैं ?

उत्तर—जरूर-जरूर, बहुत अधिक। उनके चेहरे से प्रेम बरसता है। उनकी हँसी बड़ी मीठी है। वह बड़े सरल हैं। हम उन्हें इसलिए चाहते हैं कि उन्हें काम से प्रेम है और वह जानते हैं कि काम कैसे करना चाहिए।

प्रश्न—आपने महात्मा गांधी का भी नाम सुना है ?

उत्तर—हां, हमारे अखबारों में उनके बारे में कुछ आया था।

सचमुच वह सारी बातचीत बड़ी मजेदार थी। उनका सामान्य ज्ञान आश्चर्यजनक था और बर्ताव मोहक। हां, गांधीजी के बारे में उनके अज्ञान और लापरवाही की तरफ जरूर हमारा ध्यान आकर्षित हुआ।

शाम को वे हमें अपने खेल के मैदान पर ले गये। वहां हम उनके

साथ वॉलीबॉल खेले। खेल के बाद वे हमें सभा-भवन पर ले गये और संगीत तथा नृत्य द्वारा उन्होंने हमारा मनोरंजन किया। एक बच्चे ने, जो मेरे पास बैठा था, देखते-देखते पेंसिल से मेरा चित्र बना लिया और भारत के बच्चों के प्रति अपना प्रेम और शुभेच्छाएं प्रकट करते हुए वह चित्र मुझे भेंट किया।

वे सब-के-सब चाहते थे कि हम भी उन्हें भारत की तरफ से प्रेम के प्रतीक स्वरूप कुछ चीज़ जरूर दें। उस समय हमारे पास भारत की योजनाओं के चित्रवाले कुछ कार्ड थे। वही हमने उन्हें दे दिये। उनकी इच्छा यह थी कि हम उनके साथ भारत के सिक्कों की अदला-बदली करें। जब सारी चीजें समाप्त हो गईं तब उन्होंने हमसे कहा कि अपने 'विजिटिंग-कार्ड' ही दे दो। मतलब, उन्हें हमारी और भारत की स्मृति के रूप में किसी-न-किसी चीज के पाने की बड़ी इच्छा थी। फिर चाहे वह कोई भी चीज़ हो। परन्तु शर्त यह थी कि वे अपनी तरफ से बगैर कुछ दिये, हमसे कुछ भी लेना पसन्द नहीं करते थे। तो उन्होंने हमें पोस्टकार्ड दिये, अपने सिक्के दिये, और कई तरह के बिल्ले दिये। दो बच्चे हमें अपने फाउण्टेन पेन देना चाहते थे। किन्तु जब हमने इन्हें लेने से इन्कार कर दिया तो वे बड़े उदास हो गये। सब हमारे प्रति प्रेम से अभिभूत हो गये थे।

उन बच्चों की हार्दिक इच्छा थी कि वे भारत से संपर्क रखें। उनकी यह दिलचस्पी क्षणिक नहीं थी, क्योंकि भारत लौटने के बाद उनमें से कई बच्चों के पत्र मुझे यहां मिले हैं। इनमें उन्होंने अपनी शुभेच्छाएं प्रकट की हैं और भारतीय बच्चों से मित्रता करने की इच्छा जताई है। मुझे विश्वास है प्रतिनिधि-मण्डल के दूसरे सदस्यों को भी इस प्रकार के पत्र जरूर मिले होंगे।

सोवियत रूस में पांच जगहों पर इन 'यंग पायनियर्स' की अपनी रेलें भी हैं। प्रत्येक रेल के चार-चार, पांच-पांच स्टेशन हैं, जो थोड़े-थोड़े सले पर फारक्खे गए हैं। ये रेलें मामूली रेलों की अपेक्षा बहुत छोटी हैं

श्रौर इनका सारा काम यंग पायनियर ही करते हैं। कीव में जब हम बच्चों की यह रेल देखने के लिए गये तो तेरह वर्ष के बच्चे, इवगानी कोवा ने हमारा स्वागत किया। रेलवे के मुखिया की ड्यूटी पर वही था। इस रेल की लम्बाई चार किलोमीटर है, जिसके अन्दर तीन स्टेशन हैं। हर प्रकार से वह एक साधारण रेल के समान है। सारा काम, उदाहरणार्थ सिगनल देना, समय पर रेलों को चलाना, लाइन बदलना, स्टेशनों का प्रबन्ध श्रौर कागजों की खाना-पूरी करना आदि, बच्चे ही करते हैं। इससे बच्चों का आत्म-विश्वास बढ़ाने में बड़ी मदद मिलती है। उन्हें विश्वास हो जाता है कि जिम्मेवारी का जो भी काम उन्हें सौंपा जाता है, उसे वे भली प्रकार कर सकते हैं, भले ही वह कितना भी बड़ा श्रौर खतरनाक हो। केवल इंजिन-विभाग में एक बड़ा आदमी उनके साथ रहता है, जो जरूरत पड़ने पर उनकी मदद कर देता है। बच्चों ने अपनी गाड़ी में बैठाकर हमें सैर भी कराई।

हमें बताया गया कि केवल युक्रेन राज्य में २४००० पायनियर सर्कल हैं, जिनमें ६,००,००० सदस्य हैं। केवल कीव के उपनगरों में, जिस प्रकार के शिविरों में हम गये थे उस तरह के, बयासी शिविर श्रौर हैं। इनमें भेजे जानेवाले बच्चों के खर्च के लिए माता-पिता प्रत्येक बच्चे के लिए नव्वे रूबल देते हैं, जो असली खर्च का लगभग तीस प्रतिशत होता है। बाकी का खर्च ट्रेड यूनियन उठाती हैं। शिविर में आनेवाले बच्चों में से दस प्रतिशत बच्चे निःशुल्क होते हैं।

शिविरों पर किये जानेवाले खर्च के विभाजन के बारे में जो बातें अलग-अलग जगह हमें बताई गई, उनमें जाहिरातौर पर कोई भूल मालूम होती है। शायद शिविर अलग-अलग प्रकार के हैं श्रौर उनका संचालन भी अलग-अलग प्रकार से किया जाता है। परन्तु हमें इस बारे में सही बात की पूरी जानकारी नहीं मिल सकी।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह सारा आन्दोलन बड़ा महत्वपूर्ण श्रौर प्रभावोत्पादक है। निःसन्देह बच्चों को तैयार करने की यह पद्धति

बड़ी कारगर है । इन शिविरों के स्वस्थ, हँसमुख, बुद्धिमान और उत्साही बच्चों को देखकर हमें लगा कि सोवियत संघ की यह नई पीढ़ी अधिक मैत्री-परायण तथा मिलनसार होगी । इसके साथ ही हमें इस बात पर बराबर आश्चर्य होता रहा कि यह सारा संगठन पूरी तरह से कोमसोमोल के मातहत और उसके नियन्त्रण में क्यों रक्खा गया है। कोमसोमोल तो स्वयं कम्यूनिस्ट पार्टी के नियन्त्रण और आधीनता में है । लोकतंत्री विचारों के होने के कारण हम समझ नहीं पाये कि जिस संगठन का सारा खर्च शासन उठाता है, उसका नियन्त्रण-संचालन केवल एक राजनैतिक दल के हाथों में दे देना कहांतक उचित है । यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है और संभव है कि आनेवाले वर्षों में इसके बहुत गम्भीर परिणाम हों। इससे या तो रूस के सारे लोग एक-दलीय शासन-पद्धति में आस्था रखनेवाले मानव-यन्त्र बन जायंगे या एक-दलीय शासन-पद्धति के सिद्धान्त का ही विस्फोट हो जायगा। भविष्य नौजवानों के हाथों में है और इनका जिस प्रकार से वहां निर्माण हो रहा है, उसको देखते हुए लगता है कि भविष्य शायद बेहतर ही होगा।

जो हो, इन बाल-मित्रों से मिलना हमारे लिए निःसन्देह एक बड़ा सुन्दर अनुभव रहा। सोवियत रूस की हमारी यात्रा की यह एक विशेष घटना है। आनेवाले वर्षों में शीघ्र ही सोवियत रूस का शासन करनेवाली इस भोली-भाली प्यारी पीढ़ी के निर्मल प्रेम को हम कभी नहीं भुला सकते। उसने अपने प्रेम से हमारे दिलों को जीत लिया। सोवियत रूस के बच्चों का हमारे चित्त पर क्या असर हुआ, वह संक्षेप में उन चंद पंक्तियों में आ जाता है, जो हमने एक शिविर की 'विजिटर-बुक' में हिन्दी में लिख दी थीं। वे इस प्रकार हैं—

"आपके इस यंग पायनियर कैंप को देखकर भारतीय युवक कांग्रेस के हम सातों प्रतिनिधि बहुत खुश हुए । आपके बच्चों ने जिस तरह प्रेम-पूर्वक हमारा स्वागत किया है, उसे हम कभी नहीं भूल सकेंगे।

"आपने बच्चों के लिए बड़ा सुंदर इन्तजाम किया है। इसके लिए आपको हार्दिक बधाई है। बच्चे स्वस्थ, हँसमुख, प्रसन्न और होशियार हैं। वे बड़े मिलनसार और अतिथि-सत्कार में निपुण हैं। स्वाभाविक प्रेम और आत्म-विश्वास से उन्होंने हमारे साथ बर्ताव किया। हम लोग उनके इस असीम स्नेह को अपने साथ ले जा रहे हैं और अपने देश में लौटकर आपका यह स्नेह अपने देश के बच्चों को देंगे।

"आप शान्ति को जी-जान से पसंद करते हैं। उसमें आप बच्चों को—इस नई पीढ़ी को—पूरी सफलता मिले, यही हमारी शुभ कामना है।"

: ४ :

कोमसोमोल

सोवियत रूस की 'यंग कम्यूनिस्ट लीग' का नाम 'कोमसोमोल' है। यह रूस का एकमात्र युवक-संगठन है। इसका विस्तार अत्यन्त विशाल है। कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के साथ हुई हमारी एक मुलाकात में हमें बताया गया कि यद्यपि यह एक राजनैतिक संगठन है, तथापि यह कम्यूनिस्ट पार्टी की संस्था नहीं है। तब भी, इसका संगठन, संचालन और मार्गदर्शन पूर्णत: कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा ही होता है। यह भेद की बात समझ सकना हमारे लिए मुश्किल था। हम समझ नहीं पाये कि एक राजनैतिक संगठन को किस तरह से स्वतंत्र माना जाय, जबकि वह पूरी तरह से एक ही पार्टी के नियंत्रण में है।

चालीस वर्ष पूर्व कम्यूनिस्ट पार्टी ने कोमसोमोल का निर्माण किया था। इस समय उसकी सदस्य-संख्या १,८०,००,००० है। उसकी सदस्यता सबके लिए खुली नहीं है। जैसा कि उन्होंने बताया, केवल उन्हीं लोगों को उसका सदस्य बनाया जाता है, जो उसके योग्य हों। इस बात को उन्होंने अधिक साफ नहीं किया। परन्तु इसका अर्थ यही था कि किसी-को भी इस संगठन में तभी शरीक किया जाता है, जब उसको ठोक-बजाकर पूरी तरह से परख लिया जाता है और वह उनकी परीक्षा, पार्टी के आचार-विचार आदि में सही पाया जाता है।

हमें यह भी बताया गया कि कोमसोमोल का मुख्य हेतु युवकों को कम्यूनिस्ट पार्टी के काम के लिए तैयार करना है। कोमसोमोल के ध्येय-सूत्र ये हैं—"अपने देश को प्यार करो, अच्छे युवक बनो। सोवियत भूमि के

सभी निवासियों का आदर समानता के आधार पर करो। इनमें रंग और जाति का भेद मत मानो। मानवता, मित्रता, सेवा-सहायता समूह-वाद और श्रम की प्रतिष्ठा को आत्मसात करो। युवकों की परवरिश इस प्रकार करो कि वे बलवान और बहादुर बनें।"

कोमसोमोल, उनके शब्दों में, 'लोकतन्त्री केन्द्रीकरण' के सिद्धान्त पर काम करता है। उनके विचार में लोकतंत्र की सर्वोत्तम पद्धति यही है। ऐसा माना जाता है कि इस संगठन का काम सदस्यों की सम्मिलित सम्मति से चलता है। इसमें सब सदस्य अपने विचार स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट कर सकते हैं। कोमसोमोल का सारा कार्यक्रम इन्हीं रायों के आधार पर बनाया जाता है।

कम्यूनिस्ट पार्टी के उस समय के ताजा अधिवेशन में यह तय किया गया कि प्राथमिक शाखा के चुनावों में मतदान हाथ उठाकर हो, गुप्तरूप से चिट्ठियां डालकर नहीं, जैसा कि पहले होता था। उनका मानना है कि कम-से-कम संगठन की प्राथमिक इकाइयों के स्तर पर तो सदस्यों को अपने विचार स्वतन्त्रतापूर्वक और निःसंकोच रूप से प्रकट करने देने चाहिए। इसका सीधा अर्थ यही होता है कि प्राथमिक शाखाओं के स्तर पर भी, कम-से-कम अभीतक तो, आज़ादी नहीं थी। ऊपर के स्तरों पर तो आज भी नहीं है।

यद्यपि वे कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी स्वतंत्र राय रखने का अधिकार है और यह भी कि किन्हीं भी पांच जनों की राय एक-सी नहीं हो सकती, तथापि जहांतक कोमसोमोल के लोगों का ताल्लुक है, नीचे लिखी बातों में सब एक मत हैं—

१. साम्यवाद का प्रचार और विस्तार हो।

२. उनके संगठन में वही लिये जायं, जो साम्यवाद में विश्वास रखते हैं।

३. आधुनिकतम यन्त्रों की सहायता से अधिक-से-अधिक उत्पादन किया जाय।

४. विज्ञान और यन्त्र-शास्त्र की प्रगति का पूरा-पूरा लाभ मज-

दूरों को दिया जाय ।

५. नये-नये कारखाने, बिजलीघर, इस्पात के कारखाने, आण-विक बिजलीघर, कोयले की खानें, रासायनिक उद्योग बनाने में मदद की जाय, खेती का उत्पादन बढ़ाया जाय और पशु-संवर्धन को प्रोत्साहन दिया जाय ।

कोमसोमोल ने निश्चय किया है कि इन सब कामों के लिए वह राष्ट्र को दस लाख युवक तथा युवतियां तैयार करके देगा ।

श्री मिसियासेत्सेव कोमसोमोल-संगठन के दस उच्चतम अधि-कारियों में से एक हैं । उनका दावा है कि उनकी शिक्षा-प्रणाली संसार में सर्वश्रेष्ठ है । उन्होंने कहा कि अब इस बात को पश्चिम के राष्ट्र भी मानने लगे हैं । वह कहते हैं कि उनकी शिक्षा-पद्धति बच्चों को केवल साक्षर नहीं, बल्कि संस्कारशील भी बनाती है । अपने नये कार्यक्रम में उन्होंने हाईस्कूल की पढ़ाई में औद्योगिक और यान्त्रिक प्रशिक्षण को भी शामिल कर लिया है । युवकों को इन विषयों की जानकारी देने के लिए उन्होंने नई किताबों का प्रकाशन आरम्भ किया है । अखबार, रेडियो, टेलि-विजन और मासिक पत्रिकाओं का उपयोग भी इस कार्य के लिए ये कर रहे हैं । वह चाहते हैं कि उनके युवकों को राजनीति का अच्छा ज्ञान हो, उनके विचार निश्चित और पक्के हों तथा मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों से उन्हें पूरी तरह परिचित होना चाहिए । उनका सारा प्रयास युवकों को इस लायक बनाने में लगा हुआ है कि आवश्यकता पड़ने पर वे शासन का भार संभाल लें ।

कोमसोमोल के पिछले अधिवेशन में श्री ख़ुश्चोव ने कोमसोमोल के अगले कार्यक्रम की नई रूपरेखा प्रस्तुत की । हमने पूछा कि आप तो कहते हैं कि आपका सारा कार्यक्रम सदस्यों की राय से निश्चित होता है तब आपका अगला कार्यक्रम श्री ख़ुश्चोव ने कैसे निश्चित किया ? उन्होंने कहा, "बेशक, आपका कहना सच है । हम अपना कार्यक्रम सदस्यों की राय से ही बनाते हैं । परन्तु हमारे

सदस्य जानते हैं कि हमारे नेताओं का ज्ञान उनसे भी बढ़कर है। इसलिए हमें उनके मार्गदर्शन की जरूरत रहती है। हम मानते हैं कि हमारे नेताओं द्वारा बनाया कार्यक्रम हमारे लिए सर्वोत्तम है। इसलिए हम उनको हमेशा अपने अधिवेशनों में बुलाते हैं और उनकी सलाह और मार्गदर्शन पाकर हमें बड़ी खुशी होती है। यदि उनकी सलाह हमारी ज़रूरतों और आकांक्षाओं को पूरा नहीं करेगी तो स्वाभाविक ही उनका बताया हुआ कार्यक्रम लोकप्रिय नहीं होगा। अपने नेताओं की राय हम इसलिए मानते हैं कि हमें विश्वास है कि उनके विचार पार्टी के विचार हैं।" उनकी राय में पार्टी की राय से चलना बहुत जरूरी है, नहीं तो पार्टी टूट जायगी। वे मानते हैं कि ख्रुश्चोव ने कोमसोमोल के गत अधिवेशन में अपने भाषण में जो बातें कहीं, वे युवकों की सही आकांक्षाओं को ही प्रकट करती थीं।

हम श्री फरसोप से भी मिले। वह लेनिनग्राद की कोमसोमोल के द्वितीय मंत्री हैं। इस शाखा की सदस्य संख्या ३,८०,००० है, जो ५००० दलों में बंटी है। इस प्रदेश में सैंतालीस जिले हैं, जिनमें से बीस केवल लेनिनग्राद शहर में हैं। पांच सौ पूरा समय देनेवाले कार्यकर्त्ता इनके दैनिक कार्यों में लगे रहते हैं। इनका मुख्य कार्य युवकों को अच्छे कार्यकर्त्ता बनने की तालीम देना होता है और इसके लिए राजनीति की सही शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा विश्राम व मनोरंजन की व्यवस्था की जाती है।

हमें बताया गया कि उनके सदस्यों में से १६,००० उत्तर और पूर्व के प्रदेशों में स्वेच्छा से निर्माण-कार्य करने के लिए गये हैं। २०,००० अन्यत्र नई जमीन को तोड़ने में लगे हुए हैं। मकानों के निर्माण में तीस लाख श्रम-घण्टों (एक मनुष्य एक घण्टा काम करे, वह एक श्रम-घण्टा) का काम किया गया। उनके ग्रीष्मावकाश का कुछ समय सामूहिक खेतों पर काम करने में बीता।

हमने उनसे पूछा कि स्वेच्छा से काम करने से उनका क्या मतलब है,

और इस प्रकार जो लोग स्वेच्छापूर्वक काम करना स्वीकार करते हैं, उनके लिए क्या शर्तें होती हैं तथा उन्हें क्या मुआवजा दिया जाता है। इसके उत्तर में उन्होंने हमें बताया कि इन लोगों के भोजन और निवास का खर्च उस राज्य का कोमसोमोल उठाता है और प्रवास-खर्च प्रत्येक स्थान की संस्था। स्वयंसेवक प्रतिदिन आठ घण्टे काम करते हैं। उन्हें अपने काम का पूरा मेहनताना मिल जाता है। अगर कोई स्वयंसेवक अपने स्थान से बाहर जाना स्वीकार कर लेता है तो उसे सामान्य दरों से ड्योढ़ा मेहनताना दिया जाता है। कभी-कभी वे सबकी आय को इकट्ठी कर लेते हैं और फिर आपस में बांट लेते हैं। ये शिविर प्रायः छुट्टियों में एक महीने के लिए होते हैं। हमको बताया गया कि ऐसे एक शिविर में प्रत्येक स्वयं-सेवक को पारिश्रमिक के रूप में, अपने सारे खर्च काट लेने के बाद, २००० रूबल (करीब १६६० रुपये) मिले। हमने उनसे पूछा कि जब आप उन्हें मेहनताना देते हैं तो इसे ऐच्छिक श्रम कैसे कहते हैं ? हमने यह भी पूछा कि क्या यह एक तरह की बेगार नहीं है, जबकि देश के नाम पर उनसे काम लिया जाता है और यदि वे नहीं करते हैं तो उन्हें नीचा समझा जाता है ? इसपर हमें कहा गया कि पहले उनको मेहनताना नहीं दिया जाता था। किन्तु अब उनके पास धन की कमी नहीं है, तब उन्हें पैसा क्यों नहीं दिया जाय ? फिर भी वह स्वेच्छा से किया गया काम है ! किन्तु अन्त में वे हमारी बात मान गये कि यह मजदूरों की कमी को पूरा करने का एक तरीका था।

पुरुषों और स्त्रियों को समान मेहनताना दिया जाता है। स्त्रियों को अपेक्षाकृत हलका काम देने की कोशिश करते हैं। लेनिनग्राद क कोमसोमोल के सदस्यों में कम्यूनिस्ट पार्टी के २००० सदस्य हैं। इस कोमसोमोल-समिति का वार्षिक व्यय ६३ लाख रूबल का है।

क्रीमिया की कोमसोमोल के पहले मन्त्री श्री एरिक पोकरोवस्की ने हमें बताया कि वे विद्यार्थियों से २० कोपेक (लगभग १६ नये पैसे) मासिक

शुल्क के रूप में लेते हैं और मजदूरों से उनके वेतन का डेढ प्रतिशत से अधिक नहीं। क्रीमिया के कोमसोमोल में एक लाख सदस्य हैं। वे धातु के बेकार टुकड़े सड़कों और खेतों में से इकट्ठा करके सरकार को बेच देते हैं। इसी प्रकार वे पुराने अखबार भी इकट्ठे करके बेचते हैं। इन्होंने अपने परिश्रम से सिम्फरोपोल में एक बड़ा पार्क बना लिया है, जिसका मूल्य दस लाख रूबल कूता गया है। इनमें से एक सर्वोत्तम कार्यकर्ता को नगर की म्युनिसिपैलिटी ने ६००० रूबल भेंट किये। ऐसी भेंटें या तो कार्यकर्ता स्वयं रख लेता है या संगठन को दे देता है। कभी-कभी कोमसोमोल के सदस्य अपने कारखानों में, स्वेच्छा से, अधिक समय काम करके इस प्रकार जो अधिक पैसा मिलता है, उसे अपने संगठन को दे देते हैं। क्रीमिया के कोमसोमोल का कुल वार्षिक व्यय बीस लाख रूबल के लगभग होता है। अपने कार्यकर्ताओं को वे औसतन ६०० से ७०० रूबल मासिक वेतन देते हैं। अगले पांच वर्षों के लिए उनका मुख्य कार्यक्रम शराब के लिए अधिक-से-अधिक अंगूरों की खेती बढ़ाना है। इस अवधि में वे इस राज्य की कुल जेरकाश्त जमीन का पांचवां हिस्सा अंगूरों की खेती में ले आना चाहते हैं।

हमें यह कुछ अजीब-सा लगा कि आमतौर पर जो काम सरकार के करने के होते हैं, वे युवक-संगठनों द्वारा अपने प्रमुख कार्यों के रूप में क्यों ले लिये जाते हैं ? इसका कारण शायद यही है ये संगठन ऐच्छिक युवक-संस्थाएं न होकर सरकारी काम करने की एजेंसी बन गये हैं और हमारे यहां के 'अधिक अन्न उपजाओ'-विभाग की तरह काम करते हैं।

कोमसोमोल की प्राथमिक इकाइयां कारखानों, खदानों, स्कूलों, सामूहिक खेतों, सरकारी खेतों और यंत्रों की मरम्मत करनेवाले कारखानों पर जहां-जहां भी युवक काम करते और पढ़ते हैं, होती हैं। एक इकाई बनाने के लिए कम-से-कम तीन सदस्य होने चाहिए। ऐसी अनेक इकाइयों को मिलाकर एक जिला बनता है। मास्को में इस

प्रकार के बाईस जिले हैं। कुछ प्राथमिक केन्द्रों की सदस्यता ५००० है और इसकी संचालक-समिति में तीन से लेकर पंद्रह सदस्य हैं। जिला-समिति में चालीस से लेकर एक सौ बीस सदस्य होते हैं।

कोमसोमोल राज्य या केन्द्रीय सरकार के पदों के लिए अपने सदस्यों की सिफारिश करती है। इसकी केन्द्रीय कौन्सिल किसी भी शासकीय संस्था के काम में सक्रिय हस्तक्षेप कर सकती है। जो लोग सोवियत कानूनों का भंग करते पाये जायं, उनका भी वे विरोध कर सकते हैं।

इसका एक उदाहरण हमें बताया गया। किसी बड़े पन-बिजली स्टेशन का एक मुखिया है। वह एक देश-प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी है। युवकों की भलाई का वह पूरा ध्यान नहीं रखता था, फिर भी वहां की स्थानीय कोमसोमोल-समिति इसके साथ रिआयत करती रही। इससे कोमसोमोल की केन्द्रीय कौंसिल अपनी स्थानीय समिति से नाराज रही। उसने इस वैज्ञानिक के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की सिफारिश ऊपर भेज दी।

उनका दावा है कि हर रूसी युवक को यह निश्चय हो गया है कि साम्यवाद ही सबसे उत्तम पद्धति है। इसीकी वजह से उनका देश दारिद्र्य में से ऊपर उठकर इतना बलवान बना है। इस विषय में उनके बीच कोई मतभेद नहीं है। यद्यपि हर युवक साम्यवाद को मानता है, तथापि कोमसोमोल के लिए वे केवल 'योग्य' और 'अच्छे' युवकों का ही चुनाव करते हैं।

कोमसोमोल अपने सदस्यों से नाममात्र का जो शुल्क लेता है, उससे संस्था को कोई विशेष आमदनी नहीं होती। फिर भी संगठन के अनुशासन की दृष्टि से वह लिया जरूर जाता है। कोमसोमोल विभिन्न देशी और विदेशी भाषाओं में कोई चालीस पत्रिकाएं और एक सौ इक्कीस समाचार-पत्र निकालता है, जिनसे उसे काफी आय हो जाती है।

कोमसोमोल के सदस्यों में से साम्यवादी दल, समय-समय पर.

अच्छे-अच्छे युवकों को चुनकर अपना सदस्य बनाता रहता है। इस प्रकार कोमसोमोल को साम्यवादी दल का स्थायी स्रोत कहा जा सकता है। चुनावों में कोमसोमोल के सदस्यों और पार्टी के लोगों के बीच कभी संघर्ष नहीं होता।

इसमें संदेह नहीं कि यह संगठन बहुत व्यापक और शक्तिशाली है। परन्तु एक दल-विशेष के हित के लिए शासकीय कोष से इस प्रकार धन खर्च करना कहांतक उचित है, यह मेरी समझ में नहीं आया। एक पार्टी को इस प्रकार सरकार की बराबरी का दर्जा देना, क्या जनता के प्रति अन्याय नहीं है ? पार्टी को शासन के काम-काज में हस्तक्षेप करने का जो अधिकार दे दिया गया है, यह भी क्या उचित है ? कोमसोमोल के सदस्य हर समय और हर जगह पार्टी का बोलबाला रखना चाहते हैं और उसका प्रभाव बढ़ाने का सतत उद्योग करते रहते है। जब लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए पार्टी को इस तरह बराबर प्रयत्न करते रहना पड़ता है तो क्या उसकी लोकप्रियता का दावा संदिग्ध नहीं है ? इस प्रकार के कुछ सन्देह हमारे दिलों में उठते रहे।

: ५ :

युवक नेताओं के बीच

जब हम सोवियत संघ पहुंचे तब कामरेड रोमानोवस्की और कामरेड पोपोव ब्रुसेल्स गये हुए थे। ये दोनों वहां के युवकों के मुख्य नेता थे। कामरेड रोमानोवस्की उस समय सोवियत युवक-संगठन-समिति के सभापति थे[1] और कामरेड पोपोव उप-सभापति। पोपोव तो भारतीय युवक कांग्रेस के अधिवेशन में रूस के प्रतिनिधि की हैसियत से भारत आये थे, और हमें रूस आने का निमंत्रण उन्होंने ही दिया था। तबसे हमारा उनके साथ व्यक्तिगत परिचय हो गया था। चूंकि ये दोनों सज्जन वहां नहीं थे, इसलिए प्रारम्भ में संगठन के बारे में हमारी कोई बातचीत नहीं हो सकी। इस बीच कामरेड शेवचेंको, जो समिति के दूसरे उप-सभापति थे, हमसे दो बार मिल चुके थे। परन्तु इस बातचीत का विषय केवल यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित करना ही था। इसलिए जब हम रूस की थोड़ी यात्रा कर चुके और मास्को लौटे तब इन सब प्रमुख नेताओं के साथ वार्तालाप का बदस्तूर आयोजन किया गया।

कामरेड रोमानोवस्की, कामरेड पोपोव और शेवचेंको के अतिरिक्त इस बातचीत में कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के पहले मंत्री कामरेड सोमिचास्की[2] और कामरेड मूर्तज़ाई भी थे। कामरेड मूर्तज़ाई

---

[1] अब कामरेड रोमानोवस्की सोवियत रूस की केन्द्रीय सरकार म सांस्कृतिक विभाग के उपमंत्री नियुक्त हो गये हैं।

[2] अब वह वहां के प्रतिरक्षा-मंत्रालय में गुप्तचर-विभाग के उच्चतम अधिकारी हो गये हैं।

कोमसोमोल के एक मंत्री और उज़बेकिस्तान के एक युवक नेता थे। 'कोमसोमोल प्रवदा' के संपादक कामरेड निप्पोमिसेट और संवाददाता कामरेड केसिस भी मौजूद थे। अब तो कामरेड केसिस भारत में ही आ गये हैं। वह यहां अपने पत्र के स्थायी संवाददाता नियुक्त हुए हैं।

सभापति और अन्य युवक नेताओं ने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया। कुशल प्रश्न हुए और हमारी मुख्य बातचीत शुरू हुई।[1]

कामरेड रोमानोवस्की ने कहा, "हमारे निमन्त्रण को स्वीकार करके आप यहां आये इसकी हमें बहुत खुशी है। युवक-संघ और सोवियत संघ के तमाम युवकों की तरफ से आपका स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। सोवियत संघ की जनता और खास तौर पर यहां के युवकों को भारत और उसकी जनता से बहुत प्रेम है। इसके कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो अंतर्राष्ट्रीय शान्ति है, जो इन दोनों राष्ट्रों का उद्देश्य है। हमें यह जानकर बड़ा आनन्द हुआ कि आप यहां कुछ स्थानों की सैर कर चुके हैं, यहां के युवक-संगठनों को आपने देखा है तथा उनके प्रतिनिधियों से भी आप मिल चुके हैं। इनके बारे में आपके क्या विचार हैं, यह हम जानने को उत्सुक हैं। क्या आप कुछ बतायेंगे ?"

मैंने कहा, "आपकी समिति ने यहां आने के लिए हमें जो निमन्त्रण दिया और यहां पहुंचने पर जिस प्रकार हमारी यात्रा का प्रबन्ध किया तथा हर जगह हमारी सुख-सुविधाओं का जो इतना अधिक ख्याल रक्खा, उस सबके लिए हम बहुत आभारी हैं। हमारे स्वागत-सत्कार में जिन-जिन मित्रों ने इतना कष्ट उठाया, उन सबके प्रति हम अपनी कृतज्ञता और आभार आपके द्वारा पहुंचाना चाहते हैं। जहांतक इस देश की जनता और काम-काज के बारे में हमारे विचारों की बात है,

---

[1] बातचीत का यह विवरण हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के एक सदस्य श्री सतपाल मित्तल द्वारा लिखे गए नोटों पर आधारित है।

इतने थोड़े समय में कोई राय कायम करना बहुत कठिन है। हमारी सबसे बड़ी कठिनाई तो भाषा की रही है। फिर भी कुल मिलाकर हमारे दिलों पर जो असर पड़ा है, वह आपको संक्षेप में बताने का मैं अवश्य प्रयत्न करूंगा।

"यह तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि रूस की जनता और यहां के युवकों और युवतियों के दिलों में भारत की जनता के प्रति काफी आदर और प्रेम है। जहां-जहां भी हम गये, बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया गया। अनेक जगहों पर वह स्वागत स्वयंस्फूर्त था। कीव में तो लोगों ने हमें बुरी तरह घेर लिया और हम सबको अपने प्रेम से मानो अभिभूत ही कर डाला। इन सब बातों का हमारे दिलों पर बहुत गहरा असर हुआ है। हमने यह भी देखा कि यहां की जनता सच्चे दिल से शान्ति चाहती है।

"अपनी यात्राओं के दौरान बच्चों और युवकों के संगठनों का अध्ययन करने का हमने खासतौर पर प्रयत्न किया। इस सम्बन्ध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने का और यह जानने का प्रयत्न किया कि अपने देश के युवक-संगठनों को मजबूत करने में आपके इन अनुभवों से हम कितना लाभ उठा सकते हैं।

"हमने बच्चों का 'यंग पायनियर्स' संगठन तथा युवकों का 'कोमसोमोल' संगठन—दोनों देखे। यंग पायनियर्स के द्वारा बच्चों का यहां जितना ध्यान रक्खा जाता है, उसे देखकर हम बहुत प्रभावित हुए हैं। युवक-संगठन कोमसोमोल को भी हमने भली प्रकार देखा और जाना कि वह भी बड़ा विशाल तथा शक्तिशाली संगठन है। कीव में सोवियत रूस के प्रथम युवक-दिवस के समारोह में हम सम्मिलित हो सके, इससे हमें बहुत आनन्द हुआ। यह समारोह बड़ा प्रभावोत्पादक था। युवकों के शिक्षण और शारीरिक विकास, खेल-कूद और संस्कृति-निर्माण पर वे जितना ध्यान दे रहे हैं और जितनी तेजी से प्रगति कर रहे हैं, यह देखकर हमें हर्ष हुआ।"

विज्ञान और यन्त्र-शास्त्र के क्षेत्र में रूस की तीव्र प्रगति और इसके लिए उठाये गए कष्टों का भी मैंने जिक्र किया। मैंने उन्हें बताया कि वहांपर जनता को इतने दिनों के बाद भी अपनी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों के लिए बहुत अधिक ऊंची कीमतें देनी पड़ रही हैं। यह समस्या अभी तक हल नहीं हो पाई है। इसी प्रकार रहने के मकानों की समस्या की तरफ भी वे अभी ठीक से ध्यान नहीं दे पाये। फिर स्पुतनिक के निर्माण पर मैंने उन्हें बधाई दी और यह आशा प्रकट करते हुए कि उसका उपयोग शान्ति के लिए ही किया जायगा, मैंने कहा, "यदि इसका उपयोग शान्ति के लिए किया गया तो कहा जायगा कि आप लोगों ने सारी मानव-जाति के लिए बड़ा त्याग किया और बहुत कष्ट उठाये। परन्तु यदि स्पुतनिक का उपयोग युद्ध के लिए किया गया तो माना जायगा कि यह सब त्याग आपने केवल अपने राष्ट्रीय स्वार्थ के लिए किया।"

इसी प्रकार मास्को विश्वविद्यालय, ओरिएण्टल इंस्टीट्यूट्स जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल, उद्योग तथा कृषि-प्रदर्शनियां इत्यादि देखकर हमें जो खुशी हुई, उसका भी उल्लेख किया और कहा कि इन चीजों के निर्माण पर किसी भी देश को गर्व होना स्वाभाविक है।

मैंने कहा कि अनेक बातों में हमारे उद्देश्य, हमारी दृष्टि और हमारे विचार अलग-अलग हैं। फिर भी जिन बातों में हमारे विचार मिलते हैं, उनमें हम अवश्य एक साथ काम कर सकते है। उदाहरणार्थ, हम दोनों राष्ट्र चाहते हैं कि संसार में शान्ति रहे तो अंतर्राष्ट्रीय शान्ति के पक्ष में संसार में जन-मानस जाग्रत करने का काम तो हम दोनों राष्ट्र जरूर कर सकते हैं।

रोमानोवस्की—"आपसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि मास्को, लेनिनग्राद, याल्टा और कीव की जनता ने आपके योग्य ही आपका स्वागत किया। इस देश के बारे में आपके विचार सुनकर भी हमें बड़ी

खुशी हुई, खासकर इस तथ्य के उल्लेख से कि रूस की जनता शान्ति चाहती है।

"मुझे यह भी लगता है कि हमारे बीच विचार का, सिद्धान्तों का और दृष्टि का भेद होने पर भी कई बातें ऐसी हैं, जो हमें एकता के बन्धन में बांधे हुए हैं।

"यह सच है कि हमारे सिद्धांत अलग अलग हैं। हम उन्हें एक दूसरे पर जबर्दस्ती नहीं लाद सकते। फिर भी अपने आपसी सम्बन्धों को हम अधिक मजबूत बना सकते हैं। मुख्य बात हमारे आपसी मतभेद नहीं बल्कि वे बातें हैं, जिनमें हम दोनों को समान दिलचस्पी है।

"आपकी यह यात्रा और पिछले वर्ष हमारे प्रतिनिधि-मण्डल की भारत-यात्रा हमारे आपसी संबंधों को मज़बूत बनानेवाले सक्रिय कदम हैं। अब हमारे मित्र यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि आपकी यह यात्रा हमारे आपसी सम्बन्धों को और भी दृढ़ बनाने में प्रत्यक्ष रूप से किस प्रकार सहायक हो सकती है? हम एक साथ मिलकर कौन-कौन-से काम कर सकते हैं?"

उत्तर में मैंने कहा, "पूरा विचार किये बग़ैर किसी निश्चित नतीजे पर पहुंचना ज़रा कठिन है। यह तो हमारे देश में वापस पहुंचने पर मित्रों के साथ बैठकर इस यात्रा के प्रकाश में सारी स्थिति का विचार और चर्चा करने पर ही निश्चय किया जा सकता है।

"दरअसल आपकी समिति के साथ हमारा यह पहला ही प्रत्यक्ष संपर्क है। युवक-समारोह के अवसर पर दर्शक के रूप में हम लोगों का आना एक अलग बात थी। हमें अभी एक दूसरे को समझना है। इसलिए अच्छा है कि हम इस आपसी संपर्क को जारी रक्खें, जिससे हम एक दूसरे की प्रवृतियों को अच्छी तरह से समझ सकें। साहित्य का आदान-प्रदान और पत्र-व्यवहार तो ज़ारी रह सकता है।"

रोमानोवस्की—"भारत के युवक-आन्दोलन के प्रति हमारा रुख स्पष्ट है। भारत के पुनर्निर्माण में युवक-कांग्रेस जो काम कर रही है,

कर सकते हैं। हमारी कई मातहत समितियां इसकी बहुत मांग कर रही हैं। अपनी भारत की यात्रा में मैं वहां के युवक कांग्रेस के कई संगठनकर्ताओं तथा संचालकों से मिला था। मैंने देखा कि वे काफी होशियार हैं। उन्होंने मुझे प्रभावित भी किया। मैं तो उसी समय इस तरह का पत्र-व्यवहार शुरू करने के बारे में आपके संगठन की इजाजत लेना चाहता था।

"इस वर्ष हम कई गोष्ठियां कर रहे हैं। उनमें से कुछ ये हैं—

१. विज्ञान का शांति के लिए उपयोग।

२. रूसी विद्यार्थियों द्वारा अनेक भाषाएं सीखना।

३. विद्यार्थियों की स्थापत्य कला।

"इस वर्ष हम बच्चों तथा युवकों के अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-शिविर भी कर रहे हैं।

"इन सब प्रसंगों पर अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए आपको हमारा निमंत्रण है।

"विद्यार्थियों में यात्रा का शौक पैदा करने की दृष्टि से हमने एक नई प्रवृत्ति शुरू की है। इस कार्य के लिए हमने अपनी समिति के अन्तर्गत एक विद्यार्थी-पर्यटन-विभाग खोला है। वह इस प्रकार काम करेगा कि जिससे विद्यार्थियों को एक दूसरों के देशों में जाने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। रूस के युवक व विद्यार्थी जब दूसरे देशों में जायं तब उनका वहां का संपूर्ण खर्च वहां के युवक या विद्यार्थी उठा लेवें। जब वे लोग रूस आवें तो उनका खर्च हमारे यहां के वे ही प्रतिनिधि खुद उठा लें। हां, प्रवास का खर्च ये विद्यार्थी खुद उठावेंगे और उसकी अदायगी तो अपने-अपने देश की मुद्रा में ही हो सकती है। इसमें विदेशी मुद्रा एकत्र करने की झंझट नहीं रहेगी। इससे प्रत्येक देश के युवकों को दूसरे देश के युवकों के साथ निकट संपर्क स्थापित करने तथा वहां का रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि का अध्ययन करने का अच्छा अवसर मिलेगा। इस प्रकार हम अपने देश से सैंकड़ों प्रतिनिधि-

मण्डल विदेशों में भेजने के लिए और बाहर से आनेवाले इतने ही मण्डलों का हमारे देश में स्वागत करने के लिए तैयार हैं।

"ये कुछ ठोस प्रस्ताव हैं, जिनकी विस्तृत चर्चा भी की जा सकती है।"

मैं—"आपके ठोस प्रस्ताव और गोष्ठियों का कार्यक्रम सुनकर हमें खुशी हुई। ये अच्छे हैं। हमें आशा है, इनसे हमारे दोनों के देशों का लाभ ही होगा।

"परन्तु मैं आपके सामने हमारी कुछ मर्यादाएं रखना चाहूंगा, जिनके कारण इच्छा होते हुए भी इन सबपर अमल करने में हमें शायद कठिनाई हो। हमारी इस असमर्थता का अर्थ यह नहीं कि आपके प्रस्ताव हमें पसन्द नहीं या हम उनके खिलाफ हैं। कई बार केवल कार्यकर्ताओं और साधनों की कमी के कारण बहुत-सी बातें हम नहीं कर पाते हैं। मैं आशा करता हूं कि आप और आपके मित्र हमारी बात को सहीतौर पर समझने की कोशिश करेंगे और किसी प्रकार की गलतफहमी नहीं होने देंगे। हमारा युवक-संगठन एकदम नया है। उसकी स्थापना हुए केवल पांच-छः वर्ष हुए हैं। हमारे साधन बहुत अल्प हैं। हमारी पद्धति तथा संगठनों की रचना भी भिन्न प्रकार की है। इनकी सदस्य-संख्या भी बहुत अधिक नहीं है। फिर सरकार से हमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई मदद नहीं मिलती।"

रोमानोवस्की ने बीच में कहा, "परन्तु भारत में युवक-कांग्रेस का प्रभाव तो बहुत है।"

मैं—"आपका कहना बिल्कुल ठीक है, कामरेड। मैंने यह कभी नहीं कहा कि उसका कोई प्रभाव नहीं है। भारत के विद्यार्थियों, युवकों और जनता पर उसके प्रभाव की बात मैं आपसे नहीं कर रहा था। निःस्संदेह उसका इन सबपर काफी प्रभाव है। मैं तो उसके विस्तार, सदस्य-संख्या और साधनों की बात कर रहा था। चूंकि सरकार से हमें कुछ भी मदद नहीं मिलती, हमें हर बात में

केवल अपने कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत उत्साह व सद्भावना पर निर्भर रहना पड़ता है। हमारे ये सब कार्यकर्ता स्वयंसेवक के तौर पर काम करते हैं। उन्हें कुछ भी मुआवजा नहीं दिया जाता। सच तो यह है कि हमारे सारे संगठन का आधार ही स्वेच्छापूर्वक दी जाने-वाली सहायता और सहयोग है। यदि हमारे पास साधन हों तो निःसन्देह हम भी बिना किसी कठिनाई के करोड़ों की संख्या में अपने सदस्य बना सकते हैं। इसलिए हमारी शक्ति और प्रभाव सदस्यों की संख्या पर नहीं, बल्कि हम नवयुवकों की जा सेवा करते हैं, उसपर निर्भर है।"

रोमानोवस्की—"आर्थिक कठिनाइनां तो हमारे सामने भी हैं। परन्तु अगले साल कम-से-कम एक प्रतिनिधि-मण्डल तो हम जरूर भेजना और बुलाना चाहते हैं।"

मैंने विनोद में कहा, "जनाब ! मैं न ता रोमानोवस्की हूं और न अपने देश की युवक-कांग्रेस का सभापति। आपने जितने भी सुझाव और प्रस्ताव हमारे सामने रखे हैं, वे सब मैं बड़ी खुशी के साथ अपने संग-ठन के सामने पेश करूंगा। हमारे संगठन के इन सभी प्रस्तावों पर पूरी तरह से गौर कर लेने पर आपको जरूर उचित उतर भेजा जायगा। मैं आशा करता हूं कि इस बारे में मेरी स्थिति को आप समझ रहे हैं।"

रोमानोवस्की—"अवश्य ! मैं आपकी बात पूरी तरह से समझता हूं और उससे सहमत भी हूं। अगर इसी प्रकार के प्रश्न और प्रस्ताव भारत में हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के सामने रखे जाते तो हम भी उनके जवाब में ठीक यही कहते। आपका जवाब अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अनुरूप है।"

मैं—"आपकी इजाजत हो तो अब मैं 'वर्ल्ड असेम्बली ऑफ यूथ' के बारे में संक्षेप में कुछ चर्चा करना चाहूंगा।"

रोमानोवस्की—"अवश्य ! शौक से कहिये।"

इसी समय उन्होंने हमें तीन बजे श्री ख्रुश्चोव के साथ होनेवाली

हमारी मुलाक़ात की विधिवत सूचना दी।

मैंने कहा, "आपके प्रधानमन्त्री के इस सौजन्य के लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। जब हम उनसे मिलें तो राजनैतिक शिष्टाचार की किन विधियों (प्रोटोकोल) का पालन करना हमारे लिए जरूरी होगा, कृपया हमें बता दीजिये। क्या इस मौके पर हमारे देश के राजदूत को भी अपने साथ में ले जाना उचित होगा ? प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य यह भी जानना चाहते हैं कि क्या आपके प्रधानमन्त्री के साथ हमारे प्रतिनिधि-मंडल का चित्र भी लिया जा सकता है ?"

रोमानोवस्की—"कामरेड ख्रुश्चोव ने हमें सूचित किया है कि वह आपके प्रतिनिधि-मण्डल से तीन बजे मिलेंगे। मिलने-सम्बन्धी शिष्टाचार आदि के बारे में हमें कोई सूचना नहीं मिली है। जहांतक चित्र का संबंध है, स्वयं श्री ख्रुश्चोव से प्रार्थना करनी होगी। परन्तु मेरा ख्याल है, यह सम्भव होगा।"

मैं—"तो अब मैं 'वर्ल्ड असेंबली ऑफ यूथ' के बारे में चर्चा शुरू करूं ? आप जानते हैं कि इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अधिवेशन इस वर्ष के अगस्त मास में भारत में हो रहा है। अतः उसकी भारतीय शाखा के सभापति के नाते मैं आपको सूचित करना चाहता हूं कि इसकी भारतीय समिति की प्रेरणा से इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की कार्यकारिणी ने अपने एक प्रस्ताव द्वारा यह निश्चय किया है कि वह आपकी समिति को प्रेक्षक के तौर पर इसमें भाग लेने के लिए निमन्त्रित करे। मैं जानता हूं कि इसका उत्तर आप तुरन्त तो नहीं दे सकते। अतः मैं चाहता हूं कि आपकी समिति इसपर सहानुभूतिपूर्वक विचार करे और यथासमय अपने निर्णय की सूचना हमें देने की कृपा करे।"

रोमानोवस्की—"आपकी संस्था की अंतर्राष्ट्रीय समिति की तरफ से भी हमारे पास निमन्त्रण और प्रस्ताव की प्रतिलिपि आ गई है। हमने इसपर विचार और निर्णय भी कर लिया है। 'वे' से सह-

योग करने के लिए हम सदा तैयार रहे हैं। इसके सभापति और मंत्री से हमारा पत्र-व्यवहार बराबर चल रहा है कि हम सब मिलकर कोई सर्वसामान्य कार्यक्रम बनायें। सन् १९५६ में हमने इन दोनों सज्जनों से विनती की थी कि वे रूस आयें, हमारी प्रवृत्तियों का अध्ययन करें और यह सोचें कि हम सब मिलकर कोई सामान्य कार्यक्रम बना सकते हैं या नहीं। परन्तु उन्होंने हमारे निमन्त्रण को स्वीकार नहीं किया। इसके अध्यक्ष श्री लारेन्स से लन्दन में मैं मिला था और तब उनसे फिर यह विनती की थी। किन्तु उन्होंने गोलमोल उत्तर देकर बात को टाल दिया। अपनी समिति की तरफ से मैंने कुछ और भी ठोस प्रस्ताव उनके सामने रखे थे। परन्तु उनकी ओर से कोई जवाब नहीं मिला। इस सबका अर्थ यह है कि वे हमारे साथ कोई संपर्क रखना नहीं चाहते।

"यद्यपि इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था के प्रकाशनों में सोवियत रूस के विरोध में प्रचार चलता रहता है, फिर भी हमारी इच्छा यही रही है कि हम एक दूसरे से कोई समझौता कर लें। परन्तु नतीजा क्या हुआ यह तो आप जानते ही हैं। इन सब बातों को देखते हुए हमारी समिति ने निश्चय किया है कि हम इसके अधिवेशन में भाग नहीं लें। आप और भारत के अन्य मित्र इस बारे में अन्यथा नहीं समझें। हमें निमन्त्रण भिजवाने का आपने जो प्रयत्न किया, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। परन्तु हम क्यों नहीं आ सकते, इसका कारण तो स्पष्ट ही है। आप यह नहीं समझें कि आपके प्रयत्न और सदाशय का हम निरादर कर रहे हैं। हमें आशा है कि इस इन्कारी का हमारे सम्बन्धों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

"हमें लगता है कि सभा-सम्मेलनों में प्रत्यक्ष भाग लेने के लिए जाने के पहले आपस में कुछ प्रारम्भिक बातचीत हो जाना आवश्यक है। फिर केवल प्रेक्षक के तौर पर भाग लेने के लिए जाना भी ठीक नहीं। कोई सामान्य कार्यक्रम हम बनायें, इस दिशा में हमारे प्रयत्न

बराबर जारी रहेंगे। सुलह-समझौता और चर्चा का रास्ता बन्द हो जाय, ऐसी कोई बात हमारी तरफ से नहीं होगी।

"इसलिए यदि इसके सभापति और मंत्री इस विषय पर चर्चा करने के लिए रूस आ सकें तो अब भी हम उनका यहां स्वागत करेंगे।"

मैं—"सभापतिजी ! मैं आपकी बात समझता हूं और आपकी स्पष्टवादिता की कद्र करता हूं। मेरा तो कर्त्तव्य था कि मैं अपनी और अपनी समिति की इच्छा आपको बता दूं। यह कर्तव्य मैं अदा कर सका, इसकी मुझे खुशी है।"[1]

हमारी यह चर्चा कोई तीन घण्टे तक चली। चर्चा अत्यन्त दिलचस्प और शिक्षाप्रद रही। उनके सारे चोटी के नेता उसमें उपस्थित थे। उनकी परिपाटी के अनुसार उनकी तरफ से केवल उनके सभापति कामरेड रोमानोवस्की बोल रहे थे और हमारे प्रतिनिधि-मंडल की तरफ से उसके नेता की हैसियत से मैं। कामरेड रोमानोवस्की रूसी भाषा में बोल रहे थे। मैं भी बोलना तो चाहता था हिन्दी में ही, परन्तु दुभाषिया हिन्दी नहीं जानता था। इसलिए मुझे अंग्रेजी की ही शरण लेनी पड़ी। हमारी बातचीत के बीच दूसरा कोई नहीं बोला। एक प्रकार से यह अनुभव बहुत अच्छा रहा। रोमानोवस्की सामान्य कम्यु-निस्टों से कुछ अलग प्रकार के आदमी हैं। साधारणतया वे लोग बस काम

---

१ 'वर्ल्ड असेम्बली ऑफ यूथ' (WAY) के बारे में कोई गलतफहमी नहीं हो इसलिए यह बता देना जरूरी है कि कामरेड रोमानोवस्की का कथन तस्वीर का केवल एक रुख है। चूंकि उस समय विवाद में पड़ना उचित नहीं था इसलिए मैंने बात को आगे न बढ़ाकर उसे वहीं खत्म कर दी। साम्यवादी युवक-संगठनों और 'वे' के बीच सहयोग में जो बाधा आ रही है उसका मुख्य कारण 'वर्ल्ड फेडरेशन आफ डेमाक्रेटिक यूथ' का असहयोग था, जिससे सोवियत युवक समिति संलग्न है। 'वे' ने उससे सहयोग करने के व प्रयत्न किये परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। 'वे' अब भी इसके लिए यत्नशील कि सहयोग के लिए कोई सामान्य कार्यक्रम मिले। हम आशा करें कि आगे-पीछे, देर अबेर दोनों को इसमें सफलता मिलेगी।

से काम की बात करते हैं। पर रोमानोवस्की की बातचीत में बड़ी शिष्टता, सौजन्यता और आकर्षण था।

इस मुलाकात के लिए आने से पहले मेरे मन में कुछ शंका थी। क्योंकि इस स्तर पर और ऐसे लोगों से—जो इस विषय में बड़े निपुण हैं—बातचीत करने का हममें से किसीको अनुभव नहीं था। उनमें से हर व्यक्ति एक-एक ऐसे संगठन का मुखिया था, जिसकी सदस्य-संख्या दस लाख में गिनी जाती है और जिसका वार्षिक बजट करोड़ों का होता है। उनमें से अधिकांश विदेशों में अपने प्रतिनिधि-मंडल लेकर हो आये थे और कूटनीतिक चर्चाएं कर चुके थे। लेकिन हमारे लिए तो यह पहला ही मौका था और मुझे छोड़कर हममें से एक भी सदस्य इसके पहले अपने देश के बाहर तक नहीं गया था। परन्तु बातचीत समाप्त हो जाने पर हमारे रूसी मित्रों ने हमारी बातचीत के तरीके और उसके ऊंचे स्तर पर प्रसन्नता प्रकट की। हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्यों को भी कुल मिलाकर हमारी बातचीत अच्छी लगी। हमने अपना काम अच्छी तरह किया, इसपर उन्हें प्रसन्नता हुई। उनकी भी राय रही कि बातचीत के बीच एक भी बात ऐसी नहीं कही गई, जो हमारी शान के खिलाफ हो। इसका कारण यही था कि हम सब आपस में खूब सलाह मशविरा कर लिया करते। सबका परस्पर विश्वास था और एक टीम के रूप में मिल-जुलकर सब काम करते थे। स्वयं मेरे लिए यह बड़े सन्तोष की बात रही।

इस बातचीत में हमारे एक रूसी मित्र भी शामिल थे। वह अंगरेजी जानते थे। उन्होंने बाद में हम लोगों को बधाई दी कि रूस के युवक संगठनों के नेताओं पर हमारी बातचीत का असर बहुत अच्छा पड़ा। यह सज्जन भारत भी आ चुके थे और हमारे देश से उनको प्रेम है। उन्होंने कहा कि हम सब जानते हैं कि कामरेड रोमानोवस्की एक बड़े चतुर व्यक्ति हैं और ऐसी चर्चाओं का उन्हें बहुत अनुभव है। फिर भी चर्चा दोनों तरफ से समान स्तर पर ही रही।

: ६ :

ख़ुश्चोव से भेंट

सोवियत युवक-समिति के सदस्यों से हुई चर्चाओं के बीच हम
उन्हें यह सुझाया था कि यदि संभव हो तो प्रधानमन्त्री ख़ुश्चोव औ
अन्य नेताओं से भी हम मिलना चाहेंगे। उन्होंने हमारे इस सुझाव प
हँसते हुए कहा कि हम आपके लिए सबकुछ कर सकते हैं, परन्तु य
बात हमारे बस की नहीं। हमने उन्हें याद दिलाया कि जब उनके प्रति
निधि भारत आये थे तब हमने उन्हें अपने प्रधानमन्त्री से मिलाया था
अतः यदि वे भी इस प्रकार की भेंट की व्यवस्था कर सकें तो यह अनुचि
नहीं होगा। उन्होंने हमारी बात का अनुमोदन तो किया, परन्तु साथ ह
कहा कि आपको समझना चाहिए कि यह भारत नहीं, रूस है। रूसी सरका
के सदस्य प्रायः किसीसे नहीं मिलते। वे तो साधारणतः विदेशी सरकार
के प्रतिनिधि-मण्डलों से भी नहीं मिलते। "फिर आपका प्रतिनिधि-मण्ड
तो गैर-सरकारी है और वह भी युवकों का। इसलिए इस संबंध में कु
भी करना हमारे लिए संभव नहीं होगा। फिर भी चूंकि आपने इच्छ
प्रकट की है तो हम इसे विचारार्थ प्रधानमन्त्री के दफ्तर में पहुंचा देंगे।"

इसपर हमने तो प्रधानमन्त्री से मिलने की सारी आशा छोड़ दी थ
और हमारे लिए बनाये गए कार्यक्रम के अनुसार उस देश के विभिन्
भागों की यात्रा के लिए निकल पड़े थे।

दो सप्ताह बीत गये। उस समय हम काव में थे। एक दिन हमा
एक दुभाषिया ने, जो मास्को से हमारे साथ आया था और युवक
समिति का प्रतिनिधि भी था, हमसे एकाएक कहा कि उसकी समिति

पुछवाया है कि हम सोवियत सरकार के नेताओं से क्यों मिलना चाहते हैं। क्या हम किन्हीं खास समस्याओं पर उनसे बातचीत करना चाहते हैं ? हमने बताया कि ऐसी कोई बात नहीं है। हम तो उनसे रूबरू मिलकर उन्हें धन्यवाद देना चाहते थे कि रूस की जनता ने हमारा बहुत प्रेम से स्वागत किया। मालूम हुआ कि इससे उसे सन्तोष हो गया। इसके बाद उसने हमारे कीव के कार्यक्रम को इस तरह बैठाया कि वह एक रोज पहले समाप्त हो गया। फिर इस बारे में उसने हमें कोई संकेत भी नहीं किया, केवल इतना पूछा कि चूंकि कीव का कार्यक्रम, एक प्रकार से, समाप्त ही हो गया है इसलिए यदि कीव से हम लोग एक रोज पहले मास्को चले चलें तो हमें कोई एतराज तो नहीं है ? उसने बताया कि यहां जो महत्वपूर्ण मुलाकातें रह गई हैं, वे एक दिन पहले निपटाई जा सकती हैं। इससे युवक-संगठन के नेताओं के साथ महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा करने के लिए मास्को में हमें एक दिन अधिक मिल जायगा। जिस ढंग से उसने यह बात हमारे सामने रक्खी, हमारे लिए दूसरा कोई चारा ही नहीं रह गया। परन्तु हमने उसका कोई ख्याल नहीं किया, क्योंकि इससे मास्को में हमें एक दिन अधिक जो मिल रहा था। हां, हमें इतना तो लगा कि इसमें कोई खास बात जरूर है। परन्तु हम कल्पना नहीं कर सके कि वह क्या हो सकती है।

मास्को पहुंचने पर कार्यक्रम के अनुसार सोवियत युवक-समिति के नेताओं के साथ बातचीत के लिए हमें ले जाया गया। बातचीत समाप्त होने के कुछ पूर्व ही कामरेड रोमानोवस्की ने हमें यह खुशखबरी सुनाई कि दोपहर को तीन बजे हमें प्रधानमन्त्री से मिलने जाना है। हमें लेने के लिए वह ठीक ढाई बजे आयंगे। उस समय हम तैयार रहें। उन्होंने खास तौर पर कहा कि समय का बराबर ध्यान रहे। एक मिनट की भी देर न हो।

ठीक पौने तीन बजे हमारी गाड़ियां सुविख्यात क्रेमलिन पहुंच गईं। हमें पहली मंजिल पर ले जाया गया। कामरेड

रोमानोवस्की के अलावा 'यंग कम्यूनिस्ट लीग' के प्रथम सचिव कामरेड सेमिचास्की भी प्रधानमन्त्री के दफ्तर के पड़ौस वाले कमरे में हमारे साथ आ मिले।

ठीक तीन बजकर एक मिनट पर हमें प्रधानमन्त्री के कमरे में जाने के लिए इशारा किया गया। मन में एक अजीब उत्तेजना थी। हम एक ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए जा रहे थे जो सोवियत संघ का सर्वेसर्वा था। यह मुलाकात रूस यात्रा की हमारी सबसे महत्वपूर्ण मुलाकात होने वाली थी। यह वही व्यक्ति है आधे संसार पर जिसकी सत्ता चलती है और जिसकी इच्छा पर आज समस्त मानव जाति का भाग्य है।

दरवाजा खुला। प्रतिनिधि मण्डल के नेता की हैसियत से सबसे पहले मैंने अंदर कदम रखा। दूसरे साथी भी मेरे पीछे-पीछे आये। कमरा लम्बा था और प्रधानमन्त्री की मेज कमरे के दूसरे छोर पर थी। हमारे कमरे के अन्दर दाखिल होने से पहले ही हमारे मेजबान अपनी कुर्सी से उठे और हमारा स्वागत करने के लिए दरवाजे की तरफ कई कदम बढ़कर आये और प्रतीक्षा में खड़े रहे। ज्योंही हम अंदर दाखिल हुए, उन्होंने न केवल हाथ जोड़े बल्कि मुस्कुरा कर नमस्ते कहते हुए हमारा स्वागत किया। जिस गरम जोशी के साथ उन्होंने हमारा स्वागत किया उससे हमें बड़ा आश्चर्य और आनन्द हुआ। उन्होंने हम सबसे एक-एक करके हाथ मिलाया और हमारी यात्रा के अंतरंग दुभाषिए मित्र कामरेड मिशा ने क्रमशः हम सबका परिचय कराया।

परिचय के बाद मनुभाई पटेल ने श्री ख्रुश्चोव को एक गांधी टोपी भेंट की। उन्होंने इसे बड़े प्रेम से हंसते हुए स्वीकार की और उसी समय पहन भी ली। जितनी देर हम उनके साथ रहे वह टोपी भी उनके सिर पर शोभा पाती रही। यह भी कैसा संयोग हुआ कि टोपी उनके सिर पर ऐसी ठीक बैठी मानो नाप देकर उनके ही लिए बनवाई गई हो। वह उनके माथे पर खूब फब रही थी।

इतने ही में स्वयं श्री ख्रुश्चोव ने सुझाया कि क्यों न हम

सब मिलकर अपनी तसवीर खिचवा लें ? इस मैत्रीपूर्ण सुझाव को सुनकर हम बहुत खुश हुए । सच तो यह है कि युवक-समिति के नेताओं के कहे अनुसार, हम स्वयं श्री ख़ुश्चोव से इसकी प्रार्थना करने वाले थे । हमने उन लोगों से कह भी रक्खा था कि वे किसी फोटोग्राफर को तैयार रक्खें । इसलिए जब यह प्रस्ताव स्वयं मेज़बान की तरफ से आया तो हमें स्वभावत: बड़ी खुशी हुई । हमारे अन्दर दाखिल होने से पहले ही कई फोटोग्राफर वहां मौजूद थे और फिल्म व तस्वीरें लेने के लिए उपयुक्त अवसर देखकर खड़े हो गये थे । इन फोटोग्राफरों के अलावा श्री ख़ुश्चोव के साथ कमरे में और कोई नहीं था । उनका भी काम होते ही वे चुपचाप कमरे से बाहर हो गए ।

कमरे में एक तरफ लम्बी दीवार के समानान्तर एक लम्बी मेज लगी हुई थी । फोटो खिचने के बाद श्री ख़ुश्चोव हमें उस मेज पर ले गये । इस मेज का आकार अंग्रेजी के 'टी' (T) जैसा था । स्वभावत: मैंने समझा कि मेज के शिरोभाग वाली कुर्सी पर वह स्वयं बैठेंगे । परन्तु नहीं । उन्होंने हमारे दुभाषिये श्री मिशा को वहां बैठने के लिए संकेत किया और स्वयं हमारे सामने वाली कुर्सी पर बैठे । स्पष्टत: उनका संकेत इस ओर था कि हम सब समान स्तर पर मिल रहे हैं और हमारी यह मुलाकात अनौपचारिक है । इसका हमारे दिलों पर बड़ा असर हुआ और उनकी इस भावना को हम सबने मन ही मन सराहा ।

यह देखकर हमें और भी खुशी हुई कि हमारी बातचीत के लिए सरकारी दुभाषिये को बुलाने की अपेक्षा यह काम उन्होंने मिशा को ही सौंपा और सो भी अंग्रेजी से नहीं बल्कि हिन्दी से । हमारे मित्र मिशा के लिए भी यह एक विशेष अवसर था, क्योंकि मेरा ख्याल है कि अपने जीवन में प्रधानमन्त्री से मिलने और उनके दुभाषिये का काम करने का उसको यह पहला ही अवसर मिला था । हम सबको इससे और भी ज्यादा खुशी हुई ।

हमारा ख्याल था कि हमारी इस मुलाकात के बारे में पहले श्री

ख्रुश्चोव कुछ कहेंगे और उसके बाद, जैसा कि युवक समिति से तय हुआ था, शिष्टाचार के नाते हम इस प्रेमपूर्ण और सौजन्यपूर्ण स्वागत के प्रति धन्यवाद देंगे; फिर मुलाकात समाप्त हो जायगी। परन्तु वहां तो उलटी ही बात हो गई और हमें उससे बहुत प्रसन्नता हुई। श्री ख्रुश्चोव ने हमारा स्वागत किया और यह इच्छा प्रकट की कि हमने इस यात्रा में सोवियत रूस में क्या-क्या देखा, यह संक्षेप में बतायें। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अगर हमें कोई सवाल पूछना हो तो वह शौक से उसका जवाब देंगे। सचमुच यह हम सबके लिए अकल्पनीय था। अतः हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।

सच बात तो यह है कि हम इसके लिए तैयार ही नहीं थे। हमारा इस तरफ खयाल भी नहीं गया था कि सवाल-जवाब का मौका मिलेगा, इसलिए दिमाग में पहले से ऐसे कोई सवाल नहीं थे। लेकिन जब उन्होंने यह मौका दिया तो हमने भी सोचा कि इससे पूरा फायदा उठाया जाय। मैंने इस बात का खासतौर पर ध्यान रक्खा कि हमारे सवाल सार्वजनिक हों और उनमें कोई विवाद की बात न आने पाये जिससे कोई पेचीदगी खड़ी हो या हमारे मेजबान को किसी तरह की दुविधा हो।

सवालों की शुरूआत से पहले मैंने रूस के बारे में हमारे प्रतिनिधि-मंडल के विचारों से उन्हें अवगत कर दिया। उन्हें बताया कि रूस की जनता ने हमारा जो हार्दिक स्वागत किया तथा जहां-जहां हम गये वहाँ हमारा जो सम्मान हुआ, उससे हमें अपार प्रसन्नता हुई है। खास-तौर पर यंग-पायनियर्स' का काम सराहनीय है। उसका हम पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। हमने देखा कि 'कोमसोमोल' भी एक बड़ा और शक्ति-शाली युवक संगठन है। रूस की जनता ने हमारे प्रति जितना प्रेम दिखाया और जिस उदारता के साथ हमारा आतिथ्य किया, उसके लिए हम उसके और युवक संगठनों की सोवियत समिति के आभारी हैं। भारत लौटने पर हम ये सारी बातें अपने देश के युवकों से कहेंगे और उन्हें बतायेंगे कि रूस में हमने क्या-क्या देखा और हमें वहां

कितना सौहार्द मिला।

इसके बाद हमारे प्रश्न और श्री ख्रुश्चोव के उत्तर शुरू हुए। प्रश्नोत्तर इस प्रकार हैं—[1]

मैं—"भारत के युवकों को आप कोई सन्देश देना चाहेंगे ?"

ख्रुश्चोव—"भारत के नौजवानों से सबसे पहली बात मैं यह कहना चाहता हूं कि वे अपने रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठाएं। मैं चाहता हूं कि वे खूब परिश्रम के साथ अध्ययन करें ताकि भावी जीवन में वे अच्छे कार्यकर्त्ता बन सकें। आप जानते हैं कि जीवन स्थिर नहीं है। वह बराबर आगे बढ़ता रहता है। इसलिए मैं चाहता हूं कि वे आगे बढ़कर ऊँचे स्तर पर काम करें। इस युग में यन्त्र-शास्त्र और विज्ञान बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। मैं जानता हूं कि भारत के युवक अपनी मातृभूमि को प्यार करते हैं और उसके विकास और पुनर्निर्माण में जुटे हुए हैं। मैं चाहता हूं कि वे और भी अधिक अच्छी तरह काम करें और अपने पूर्वजों का गौरव बढ़ाएं। भारत और सोवियत युवकों के बीच मैत्री बढ़े और हम एक दूसरे के अधिक निकट आएं। मानवता को युद्ध और विनाशकारी शक्तियों से जूझकर उन पर विजय पानी है और मनुष्य मात्र के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाना है। हर व्यक्ति खूब परिश्रम करेगा तो मानव जाति की साधन सम्पत्ति बड़े परिमाण में बढ़ सकती है और दुनिया के हर प्राणी का जीवन-स्तर ऊँचा उठ सकता है। भारत के नौजवानों को मेरा यह सन्देश आप सुना दें।"

इस प्रेम भरे सन्देश के लिए मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और विश्वास दिलाया कि उनका संदेश मैं भारत के नौजवानों तक अवश्य पहुंचा दूंगा।

---

[1] बातचीत के समय हमने नोट नहीं लिये थे। १२ जुलाई, १९५८ के 'न्यूज़ एण्ड व्यूज़ फ्राम दी सोवियत यूनियन' में इस मुलाकात का जो विवरण छपा था, मुख्यतः उसीके आधार पर मैं इन प्रश्नों और उत्तरों को उद्धृत कर रहा हूं। यह पत्रिका नई दिल्ली स्थित रूसी दूतावास के सूचना विभाग का प्रकाशन है।

मैंने कहा—"आप जब भारत आये थे, तब मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपके लिए आयोजित अनेक सभाओं में भी मैं उपस्थित था। क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि हमारा देश आप को इतना अच्छा क्यों लगा ?"

ख्रुश्चोव—"सोवियत रूस की जनता को भारत सचमुच अच्छा लगता है। वह उसे प्यार करती है। आपके प्रति हमारा इस सहानुभूति का खास कारण तो यह है कि आपने विदेशियों के राज में बहुत लम्बे समय तक तकलीफें उठाई हैं। अब आप आजाद हो गये हैं और अपने देशवासियों के सुख के लिए अपने साधनों का विकास करने में लग गये हैं। इसकी हमें बड़ी खुशी है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी आप पंचशील के आधार पर सब देशों के साथ शांतिपूर्वक रहना चाहते हैं, यह भी अच्छा है। सोवियत रूस के लोग भी इन सिद्धान्तों की कद्र करते हैं।"

मैं—"क्या आप यह बताएंगे कि वर्तमान स्थिति में संसार में शान्ति बनाए रखने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या है ?"

ख्रुश्चोव—"शान्ति की ताकत बढ़ाने के लिए सबसे पहले लोगों को बताया जाना चाहिए कि वे शान्ति की सुरक्षा और उसे सुदृढ़ बनाने के लिए क्या करें। इस समय युद्ध की शक्तियां अपने जोरदार साधनों के द्वारा अपने विचार फैला रही हैं। हमें चाहिए कि शान्ति के दुश्मनों की इन हलचलों का हम पर्दाफाश करें। शान्ति की रक्षा के लिए हमें सुसंगठित हो जाना चाहिए। पंचशील के सिद्धान्तों का हमें संसार के कोने-कोने में प्रचार करना चाहिए।"

इसके बाद श्री ख्रुश्चोव ने संयुक्त राज्य अमरीका के बारे में बोलना शुरू किया और बताने लगे कि किस प्रकार उसके आधीन आक्रमण-कारी दल संसार को युद्ध की तरफ ढकेल रहे हैं। उन्होंने ग्वेटमाल लैटिन अमरीका के कुछ देशों और लेबनान की घटनाओं का भी जिक्र किया। उन्होंने यह भी बताया कि काश्मीर के मामले में अमरीका गलती पर है। उन्होंने कहा, "अमरीका हिन्दुस्तान की अपेक्षा पाकिस्तान का पक्ष

क्यों लेता है, यह मेरी समझ में नहीं आता। हमारा प्रतिनिधि-मण्डल स्वयं काश्मीर गया था। वहां की स्थिति अपनी आंखों से देखने के बाद उसकी निश्चित राय है कि बख्शी गुलाम मोहम्मद की वर्तमान सरकार काश्मीर की जनता के हित में बहुत अच्छा काम कर रही है।" उन्होंने मुझसे कहा, "आप जब कभी बख्शीजी से मिलें तो उन्हें बताएं कि हमारी काश्मीर यात्रा के समय उन्होंने जितने प्रेम से हमारा आतिथ्य किया, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।" श्री ख्रुश्चोव ने कहा कि कश्मीर के बारे में भारत का पक्ष सही है। अमरीका तो पाकिस्तान का पक्ष इसलिए ले रहा है कि पाकिस्तान बगदाद-सन्धि और दक्षिण-पूर्वी-एशियाई-गुट के राष्ट्रों का सदस्य है। परन्तु यह उसकी गलती है। उन्होंने आगे कहा कि भारत एक स्वतन्त्र नीति का पालन करते हुए आक्रमणकारी सैनिक गुटों में शरीक होने से इन्कार कर रहा है, यह अच्छा है। यही कारण है कि अमरीका की अपेक्षा सोवियत रूस भारत को अधिक चाहता है और उसका हिमायती है।

मैंने कहा—"क्षमा करें। हमने आपका बहुत सा समय ले लिया। परन्तु मैं एक बात और पूछना चाहता हूं।"

ख्रुश्चोव—"इसका ख्याल न करें। आप बहुत दूर से आ रहे हैं। अब तो खैर इन जेट हवाई जहाजों की बदौलत भारत हमारे इतने निकट आ गया है कि हम मास्को में नाश्ता करके दिल्ली में दोपहर का भोजन कर सकते हैं और रात के भोजन के समय वापस मास्को लौट सकते हैं। भारत के निवासी विशाल हृदय हैं। इसलिए हम और भी देर तक बैठें तो मुझे आनन्द ही होगा।"

पैंतीस मिनट तो पहले ही हो चुके थे। मुझे लगा कि अब हमें अधिक समय लेकर इस सौजन्य और अतिथ्य का अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए।

मैंने अपना अंतिम प्रश्न पूछा, "जब हम अपने प्रधानमन्त्री से मिलें, तब उनसे कहने के लिए आप कोई सन्देश देना चाहेंगे ?"

श्री ख्रुश्चोव ने कहा, "बड़ी खुशी के साथ। सबसे पहले आपके प्रधानमंत्रीजी के स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए मेरी शुभ कामनाएं आप उन तक पहुंचा दें। यदि वह अच्छे-चंगे रहे, तो जो शुभ काम वह कर रहे हैं, उसे आगे काफी समय तक करते रहेंगे। ये मेरी हार्दिक शुभकामनायें हैं।"

हमारी बातचीत समाप्त होते ही हमारे प्रतिनिधि मण्डल के सब सदस्य श्री ख्रुश्चोव के हस्ताक्षर लेने के लिए आगे बढ़े, जो उन्हें तुरन्त मिल गये।

अंत में हमारे कल्याण और भविष्य के लिए श्री ख्रुश्चोव ने जो इतनी आत्मीयता के साथ शुभेच्छाएं प्रकट कीं, उसके लिए मैंने उनके प्रति अपना आभार प्रकट किया—न केवल प्रतिनिधि-मण्डल की तरफ से, बल्कि भारत की समस्त तरुण पीढ़ी की तरफ से। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि भारत पहुंचने पर हम उनकी शुभ-कामनाएं हमारे भाइयों तक अवश्य पहुंचा देंगे।

अपनी सारी पूर्व परंपराओं को छोड़कर श्री ख्रुश्चोव ने हमें यह मिलने का अवसर दिया था, इसके लिए अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने तथा हमारी इस यात्रा की स्मृति के रूप में हमने बातचीत के बाद श्री ख्रुश्चोव को हाथीदांत की अशोम-स्तंभ की एक प्रतिकृति भेंट की। चलने से पहले मैंने उनसे कहा कि भारत पहुंचने पर वहां के युवक आन्दोलन पर कुछ पुस्तकें और 'गांधीवादी पूंजीपति के नाम' ('टु ए गांधीयन कैपिटलिस्ट') नामक पुस्तक भी मैं आपके अवलोकनार्थ भेजूंगा। इस पुस्तक में महात्मा गांधी और मेरे पिताजी के बीच हुआ पत्र-व्यवहार है। मैंने उन्हें यह भी बताया यह पुस्तक मैं उन्हें खासतौर पर क्यों भेजना चाहता हूं। गांधी जी की राजनैतिक और अन्य प्रवृत्तियों के बारे में तो बहुत कुछ लिखा व कहा गया है। परन्तु उनका जनसंपर्क बहुत विशाल था, और बहुत से लोग उनसे मार्ग-दर्शन मांगते रहते थे। गांधीजी भी उनके जीवन में बड़ी दिलचस्पी लेते और अपनी बहुविध

प्रवृत्तियों के बीच भी बराबर उनका मार्गदर्शन करते थे। गांधीजी के जीवन के इस मानवीय पहलू के बारे में विदेश में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। भारत पहुंचते ही इस पुस्तक की एक प्रति मैंने उनके पास भेज दी।

इस प्रकार चालीस मिनट की यह स्मरणीय भेंट परस्पर धन्यवाद और शुभेच्छाओं के आदान-प्रदान के साथ समाप्त हुई। संसार के वर्तमान युग के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति से हम मिले थे। सचमुच ही यह घटना जीवन में भुलाई नहीं जा सकती।

श्री ख्रुश्चोव ने जिस सहृदयता से हमारा स्वागत किया और हमारे प्रश्नों के उत्तर दिये, उससे हम बहुत प्रभावित हुए। वह बहुत शान्ति से बैठे रहे, किसी प्रकार की जल्दबाजी नहीं की। उन्होंने जरा भी यह प्रकट नहीं होने दिया कि सरकारी काम में व्यस्त रहने के कारण उन्हें हमसे बातचीत करने की फुरसत नहीं है। वह बड़ी आत्मीयता के साथ बातचीत कर रहे थे। बीच-बीच में उनकी आँखों में विनोद भी झलक जाता था—हंसी की बात पर वह जोर से कहकहा भी लगा देते थे। इन सारी बातों का हम पर बड़ा असर हुआ। केवल एक बात—संयुक्त राज्य अमरीका की नीति की निंदा— हमें जरा खटकी। हमारे प्रश्नों के साथ उसका कहीं कोई सम्बन्ध नहीं था। ऐसा लगा कि इसके लिए कोई प्रसंग नहीं होने पर भी ये अनावश्यक बातें वह अकारण ही और बहुत कठोर शब्दों में कह गये।

तास ने इस मुलाकात के समाचार तुरन्त सारे संसार में पहुंचा दिये। इस प्रसंग पर जो चित्र और फिल्में ली गईं उनका भी बड़ा प्रचार किया गया। इससे हमारे कुछ साथियों की यह गाँठ दृढ़ हो गई कि ख्रुश्चोव के दिमाग में पहले से कोई बात चल रही थी, उसे प्रकट करने के लिए उन्होंने इस भेंट का उपयोग कर लिया।

चूंकि यह भेंट मात्र एक शिष्टाचार थी, मैंने अपने साथियों से कह दिया था कि वे इसके नोट न लें। यह अच्छा नहीं

दिखेगा। परन्तु बाद में जो कुछ हुआ उससे मुझे इस बात पर अफसोस हुआ कि हमारे पास इस महत्वपूर्ण चर्चा के कुछ भी नोट नहीं हैं। फिर भी चलने से पहले मैंने श्री ख्रुश्चोव से पूछ लिया था कि हम इस बातचीत को प्रकाशित तो कर सकते हैं ? उन्होंने इसे तुरन्त स्वीकार कर लिया। इसलिए यह और भी आवश्यक हो गया कि हमारे पास मुलाकात का अधिकृत विवरण हो। परन्तु ऐसी परिस्थिति में हमारे पास अब सिवा इसके कोई चारा नहीं रह गया कि हम अपने मेजबानों से ही इस मुलाकात का अधिकृत विवरण मांगें। यह देना उनके लिए कठिन नहीं था। क्योंकि ज्यों ही हमारी बातचीत शुरू हुई, दो आदमी हमारे पास आकर बैठ गये थे और उन्होंने सारी बातचीत को विस्तार से लिख लिया था।

चूंकि अब मैं तुरन्त भारत लौटना चाहता था, इसलिए मैंने उनसे पूछा कि क्या हमें बातचीत की रिपोर्ट तुरन्त मिल सकती है। परन्तु इस में देरी लग गई दो-दिन बाद मैंने उन्हें फिर याद दिलाई कि भारत के लिए रवाना होने से पहले वह मुझे मिल जाती तो ठीक था, ताकि यदि मैं अपने प्रधानमंत्री से मिलूं तो उन्हें एक प्रति दे सकूं। तब जाकर कहीं उन्होंने मुझे बताया कि कि वे यथासंभव जल्दी ही सरकारी विवरण प्राप्त कर रहे हैं। परन्तु जबतक स्वयं श्री ख्रुश्चोव इसे देखकर मंजूर नहीं कर लेंगे, वह नहीं दी जा सकेगी। उस समय वह चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति के साथ लेनिनग्राद गये थे। उनकी मंजूरी के लिए विवरण वहां भेजा गया था।

हमारा प्रतिनिधि मण्डल सरकारी नहीं था। और न हमारी बातचीत महत्वपूर्ण ही थी। उसमें न तो कोई विवाद की बात थी और न कोई गूढ़ कूटनीतिक महत्व की। इसलिए कोई भी बड़ा और जिम्मेदार अधिकारी अपनी जिम्मेवारी पर उसे प्रकाशनार्थ दे सकता था। परन्तु यह नहीं किया गया। यह परिपाटी उनके यहां है ही नहीं। जब तक उनके नेता मंजूरी नहीं दे देते, बिलकुल मामूली और मासूम चीजें

भी बाहर नहीं जा सकतीं। भारत में हमें भी इससे सबक लेना चाहिए। ऐसे मामलों में और खासकर जहां विदेशियों का सम्बन्ध आता है, हमेशा बहुत सावधान रहने की जरूरत है। भावार्थ में जरा भी इधर या उधर नहीं होना चाहिए। कोई बात प्रकाशन के लिए देने से पूर्व यह अच्छा है कि जिन व्यक्तियों का उस चीज से सम्बन्ध है, उसे अच्छी तरह देख लें और निश्चय कर लें कि उसमें कोई अनावश्यक या गलत बात तो नहीं है। यह चीज़ अगर दूसरों पर छोड़ दी जाती है तो उसमें भूल हो जाने का सदा अन्देशा रहता है। और नहीं तो किसी बात पर जोर देने में ही थोड़ी सी भूल हो सकती है। इतने से भी कभी-कभी बड़ा अन्तर पड़ जाता है और अकारण गलतफहमियां होकर सीधी बातें उलझ जाती हैं। जो समाचार पहलेपहल आते हैं उन्हें हमेशा मोटी सुर्खियों में छापा जाता है। बाद में उनका प्रतिवाद भी दे दिया जाय तो उसे सब नहीं पढ़ते। एक बार जो गलती हो जाती है सो हमेशा के लिए ही हो जाती है। उसे सुधारना बड़ा कठिन होता है।

तास ने तुरन्त इस मुलाकात के समाचार सारे संसार में फैला दिये। भारत के कुछ समाचार पत्रों में भी वे छप गये। शीर्षक था—'भारत का हिमायती रूस, न कि अमरीका।'

: ७ :

पहला 'युवक दिवस'

सोवियत संघ की युवक-समाजवादी लीग (कोमसोमोल) ने २९ जून का दिन 'युवक दिवस' के रूप में सारे देश में मनाने का प्रस्ताव रखा, जो रूस की सरकार ने स्वीकार कर लिया। वैसे यह दिन ऐतिहासिक या अन्य किसी दृष्टि से खास महत्व का नहीं था, परन्तु जून स्कूली छुट्टियों का आखिरी महिना होता है और मौसम भी बड़ा सुहावना रहता है। इसीलिए यह दिन तय किया गया।

यह उनका प्रथम युवक-दिवस-समारोह था। युक्रेन की राजधानी कीव में उत्सव में भाग लेते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। ता० २८ जून की शाम को हम कीव पहुंचे। फौरन ही हमें 'सिनेरामा' देखने ले जाया गया। रूस में इसे पनोरमा कहते हैं। फिल्म अच्छी थी। देश के ऐतिहासिक और आर्थिक महत्व के कई स्थानों को चल-चित्र द्वारा बताया गया था। इनमें मास्को के पिछले युवक उत्सव का भी चित्र था। यह हमें खासतौर पर अच्छा लगा।

युवक-दिवस के दिन सुबह प्रारम्भ में तो कुछ बूंदा-बांदी होती रही, किन्तु शीघ्र ही आकाश साफ़ और मौसम सुहावना हो गया। युद्ध-काल में युक्रेन के अन्य नगरों की तरह कीव नगर पर भी जर्मनों का अधिकार हो गया था। परिणामतः शहर का मध्य भाग अत्यन्त ध्वस्त हो गया था। लेकिन पुनर्निर्माण के बाद अब यह नगर बड़ा सुंदर बन गया है। उसकी रचना योजना-बद्ध है एवं साफ़-सफ़ाई भी अच्छी दिखाई दी। इसकी आबादी १२ लाख की है।

सुबह युवकों के विभिन्न दलों ने गत महायुद्ध के ज्ञात और अज्ञात शहीदों के स्मारकों पर बड़े समारोह-पूर्वक पुष्पमालाएं चढ़ाईं। ऐसे स्मारक शहर में बहुत हैं।

युवक-दिवस का मुख्य कार्यक्रम शाम के ४.३० बजे से शुरू हुआ। बम्बई के 'सरदार पटेल स्टेडियम' के समान वहां एक 'खुश्चोव स्टेडियम' है जिसमें ७५ हजार लोग बैठ सकते हैं। बड़े शानदार ढंग से उसे सजाया गया था। बीचोंबीच लेनिन का एक भव्य चित्र था और उसके दोनों ओर रूसी सरकार के नेताओं के बड़े-बड़े चित्र। वोरोशिलोव और बुलगानिन के चित्र भी वहां देखने में आये।

आधा घन्टे के भीतर ही भीतर सारा स्टेडियम भर गया। प्रस्तुत कार्यक्रम कोमसोमोल की ओर से आयोजित किया गया था। अतः स्थानीय कोमसोमोल के मन्त्री के छोटे से भाषण से समारोह का आरंभ हुआ।

फिर लेनिन के चित्र के साथ परेड शुरू हुई। उद्घोषवाक्य लिखे बोर्ड जगह-जगह दीख रहे थे। मृतवीरों की गौरव-झांकियां भी थीं। जुलूस में पुरानी परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाले नमूने उपस्थित किये गये थे, जिनमें पुरानी जातियां, वंश, फौज, नाविक, सेना आदि के दृश्य थे। बच्चे, औरतें और खिलाड़ी विभिन्न पोशाकों में जुलूस में उपस्थित थे। पूरा जुलूस रंग-बिरंगे दृश्य, उत्साह और आनन्द से भरा हुआ था। जगह-जगह झण्डे और पताकायें लहरा रही थीं। बहुत से खिलाड़ी भी जुलूस में शामिल थे, जिनकी बाद में प्रतियोगिताएं हुईं। आठ से दस साल की उम्र के बच्चों के बीच भी प्रतियोगिताएं हो रही थीं। इतनी बड़ी भीड़ की उपस्थिति में बिना किसी संकोच के ये बच्चे अपने करतब दिखाते रहे। इसके बाद कुछ नृत्य भी दिखाये गये, जो बहुत सुंदर थे। लेकिन छोटे बच्चों के नृत्य बहुत कमाल के थे। कमल-नृत्य तो बहुत ही अप्रतिम रहा।

इसीके बाद 'पुशबॉल मैच' खेला गया, जो हमारे लिए, और हमने

देखा कि वहां के लोगों के लिए भी, नई चीज़ थी। इसे एक बहुत बड़े रबड़ के गेंद के साथ खेला जाता है। गेंद इतनी बड़ी होती है मानो कोई हाथी का बच्चा ही हो। इसका उद्देश्य विशेषत: जनता का मनोरंजन करना होता है। फुटबॉल मैच के साथ उत्सव समाप्त हुआ। सारा कार्यक्रम अत्यन्त सुसंगठित और प्रभावकारी था।

इसके बाद हमें एक बगीचे में ले जाया गया। युवक-समिति ने वहां एक सभा का आयोजन किया था। वहां करीब ५००० लोग उपस्थित थे। हम सबको मंच पर ले जाया गया। बड़ी हर्ष-ध्वनि के साथ हमारा स्वागत हुआ।

एक युवा फिल्म अभिनेत्री ने अध्यक्षता ग्रहण की। एक वृद्धा ने, जो कम्युनिस्ट पार्टी की बड़ी पुरानी सदस्या है, पहला भाषण दिया। फिर उस स्त्री का भाषण हुआ, जिसे सबसे ज्यादा बच्चों की कुशल माता बनने के उपलक्ष में पुरस्कृत किया गया था। जो युवती सबसे अधिक बच्चों की मां होती है और जो उनकी सबसे अच्छी सम्भाल करती है, उसे वहां नायिका के रूप में गौरवान्वित किया जाता है। उसके बाद हमसे कुछ शब्द कहने के लिए कहा गया। हमें सिर्फ़ तीन मिनट दिये गये थे, स्वभावत: मुझे बहुत संक्षेप में बोलना पड़ा। मैंने हिन्दी में कहा, "हम हिन्दुस्तान से आये हैं। उस हिन्दुस्तान से, जो गांधीजी और जवाहरलाल नेहरू का देश है। हम आपके और आपके देश के लिए हमारे युवक संगठन और हमारे देश की ओर से सद्भावना और शुभ-कामना लाये हैं। हमारे नेताओं ने हमें यही सिखाया है कि शांति के लिए कार्य करो। हमें बहुत खुशी है कि रूसी युवक भी शांति के लिए काम करते हैं। सोवियत संघ और हिन्दुस्तान के युवकों के बीच दोस्ती हमेशा कायम रहे।"

उपस्थित समुदाय ने ये शब्द बहुत ही हर्ष के साथ ग्रहण किये। हर वाक्य का अनुवाद पूरा होते ही तालियों की गड़गड़ाहट होती थी। हमने देखा कि यह सारा उत्साह और प्यार हार्दिक

था। उसके बाद हमने उन्हें एक कांसे और चांदी की तश्तरी पर खुदी तांडव मुद्रा में नटराज की मूर्ति भेंट की। लोगों ने उसे बहुत अधिक पसन्द किया। अपनी तरफ से हम सबको फूल और लम्बी डबलरोटी भेंट की जो ऐसे प्रसंगों पर खासतौर पर बनाई जाती है। उन्होंने कहा कि हमारे यहां अपने मेहमानों को ये चीजें भेंट देने की प्रथा है। हमारे देश की और वहां की प्रथाओं में यह समानता देख कर हमें आश्चर्य भी हुआ और आनन्द भी। फूल और रोटी सुंदरता और उपयोगिता का सुंदर समागम है। इन दोनों चीजों के प्रति दोनों जगह समान आदर है और इसके प्रकाशन के प्रतीक भी समान ही हैं।

इसके बाद हमने हमारा प्रसिद्ध राष्ट्रीय-गीत, 'कदम-कदम बढ़ाये जा' सामूहिक रूप में गाया, जिसका नेतृत्व प्रतिमा मुकर्जी ने किया। हमारा रूसी मित्र और हिन्दी दुभाषिया मिशा भी गांधी टोपी पहन कर इस समूह-गान में शामिल हुआ। लोगों ने जोर से और देर तक हर्ष-ध्वनि करके इस गायन का स्वागत किया। उन्होंने आग्रह किया कि हम और भी कुछ गाएं। तब हमने रूस का अत्यन्त प्रसिद्ध समूह गीत 'कच्यूशा' रूसी भाषा में ही व उन्हीं की राग में गाया। प्रतिमा ने, जिसने यह गीत सीख लिया था, फिर हमारा नेतृत्व किया। उसे भी लोगों ने पहले जैसे उत्साह के साथ ही ग्रहण किया। वक्त थोड़ा सा बचा था परन्तु उपस्थित लोगों के आग्रहवश अध्यक्ष को प्रतिमा से हिंदी व बंगाली गीत गाने के लिए कहना पड़ा। हमें तीन मिनिट दिये गए थे, पर हो गए तीस मिनट। बड़ा ही सुखद और मधुर अनुभव रहा। जनता का सत्कार कल्पनातीत था।

अब हम नदी की ओर गये। जलराशि को बिजली की तेज रोशनी से नहला सा दिया था। सुन्दर रोशनी से सजाई गई किश्तियां हमारे सामने से गुजरने लगीं। किनारे पर खड़े लोग प्रत्येक किश्ती का हर्ष-ध्वनि के साथ स्वागत करते जाते थे। सारे शहर में

आनंद उमड़ रहा था। हर आदमी, औरत और बच्चा बाहर निकल पड़ा था। सड़कों पर अपार भीड़ थी। बैठ कर देखने के स्थान लोगों से ठसाठस भरे हुए थे। कहीं एक इंच भी जगह खाली नहीं थी। अन्त में नदी के दूसरे किनारे पर बड़ी मनमोहक आतिशबाजी शुरू हुई। वह सारा दृश्य बड़ा भव्य था।

साढ़े ग्यारह बज गये। होटल पर लौटने का समय हो गया। इस बीच हममें से हरएक को बीसियों जने घेर लेते और हमसे बातचीत करना चाहते। उत्सुकता और प्रेम उनके चेहरों पर झलकता था। एक नजर भर हमें देखने और हमारे साथ हाथ मिलाने या नमस्कार करने के लिए हर आदमी मानो बैचेन था। कई हमारे पास आते और सिर्फ 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई' कहकर दोस्ती का परिचय देकर चले जाते। भाषा की कठिनाई के कारण और कुछ तो बोल नहीं सकते थे।

बच्चे और औरतें भी आनंदविह्वल हो रही थीं। प्रतिमा और सांफाधारी सरदार पूरणसिंह 'आजाद' सबसे अधिक कुतूहल के पात्र बने हुए थे। पैदल वापस लौटना हमारे लिए असंभव हो गया। लोग हमसे झूम पड़ते। एक-एक इंच भी आगे बढ़ना कठिन हो रहा था। बच्चे हमारे हाथ पकड़ लेते और आगे बढ़ने ही नहीं देते। इस तरह भीड़ द्वारा घेरे जाने का अनुभव हमें अपनी जिंदगी में पहले कभी नहीं हुआ था। हां, हमने अपने नेताओं को जरूर इस तरह घेरा था। पर तब तो हम घेरने वालों में थे। इस बार हम घिरने वाले थे, सो भी विदेशियों द्वारा उन्हीं के देश में। बड़ा अद्भुत और रोमांचकारी अनुभव था।

हमारे मार्गदर्शक साथी घबरा गये। हममें से हरएक की बांह पकड़-पकड़ कर लगभग खींच-खींचकर वे हमें भीड़ से बाहर ले जाने लगे। उन्हें भय हो गया कि भारत से आए उनके मेहमान किसी दुर्घटना में नहीं फंस जायं। जब हम भीड़ से बाहर एक बगल की सड़क

पर पहुंच गये तब जाकर उनके जी-में-जी आया। उस समय उनकी मुद्रा देखने लायक थी। परन्तु मैं और हमारे दूसरे साथी तो इस सारे अनुभव का पूरा मजा लूट रहे थे।

बाद में मैंने उनसे पूछा कि वे इतने चिंतित क्यों हो गए थे ? हमें तो भीड़ में धक्के खाकर चलने और कधे रगड़ने में मजा आ रहा था। इसी को तो सच्चा अनुभव कहते हैं। हमें तो उस दिन सचमुच बहुत आनंद आया। उस पूरे युवक दिवस का बड़ा शानदार अंत था वह। पर वे बोले, "आप हमारे सम्माननीय मेहमान हैं, आप इतने खतरे में आ गये थे, आप को इतना कष्ट हुआ और पैदल चलना पड़ा, इसी का हमें दुख हो रहा था। इतनी भीड़ हो जायगी और आप लोगों को प्रेम से घेर लेगी, इसका स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को अंदाज नहीं था। यह उनकी बड़ी गलती रही। उनको पहले से अंदाज लगाकर इसके बारे में कुछ इन्तजाम कर लेना चाहिए था।"

दरअसल हमारी खुशी को वे ठीक से नहीं समझ सके। हमारे प्रति जनता के तत्काल प्रकट होने वाले प्रेम और लगाव की अभिव्यक्ति भी वे ग्रहण न कर सके। हमने यदि यह प्रसंग खोया होता, तो वैसा अनुभव हमें जिन्दगी भर मिलने वाला नहीं था। इस तरह मौके पर प्रकट होने वाला प्रेम और लगाव निश्चय ही किसी पूर्व योजना द्वारा संभव नहीं था, यह हमें स्पष्ट दिखाई दिया। लेकिन हम इस ख्याल को भी नहीं रोक सके कि जनता को आमतौर पर इस तरह प्रशिक्षित किया जाता है कि वे विशिष्ट परिस्थिति तथा खास-खास अवसर पर, अमुक तरह से ही व्यवहार करें।

हाँ, उस रोज शरीर से हम जरूर बहुत थक गये थे, परन्तु यों हम बहुत खुश और प्रसन्न थे। जनता की इस प्रेम-पूजा से हम अपने अन्दर एक प्रकार का आत्म-गौरव अनुभव करने लग गये थे। वह नशा जब कुछ शांत हुआ तब मैं सोचने लगा कि आखिर हम हैं कौन ? इतने प्रेम के लायक हमने क्या किया है ? बहुत छोटे आदमी हैं हम।

हमने बहुत कम काम किया है। फिर भी हम इतने महत्वपूर्ण क्यों बन गये ? इसलिए कि हम भारत के प्रतिनिधि थे, जो संतों की और महात्मा गांधी की भूमि है और जिसके वर्तमान नेता जवाहरलाल नेहरू हैं, जिनका आदर सारा संसार करता है। हम उस देश के प्रतिनिधि हैं जिसने सदा प्रेम और शांति में विश्वास किया है। ये लोग हमारा नहीं हमारे महान देश का सम्मान कर रहे थे। प्रेम की कैसी वर्षा थी यह ! हम तो एकदम अभिभूत हो गये। एक महान देश का प्रतिनिधि बनकर किसी महान देश में जाना कितने गौरव की बात है !

मैंने पूछताछ की कि रूस में भारत और भारत के लोगों के प्रति इतना प्रेम-भाव क्यों है, तो मालूम हुआ कि इसके कई कारण हैं। एक मुख्य कारण पंडित नेहरू की पिछली रूस-यात्रा थी। उन्होंने हर आदमी पर जादू कर दिया था। वे उनके पीछे पागल से हो गये थे। फिर रूस के नेता ख्रुश्चोव और बुलगानिन जब भारत आये थे और सारे देश ने उनका यहां जितने प्रेम से स्वागत किया था, उसका भी असर उनके दिलों पर था। पिछले पांच-छह वर्षों से भारत के समाचारों को बहुत सहानुभूति के साथ रूसी पत्रों में स्थान दिया जा रहा है। रूस की जनता हृदय से शांति चाहती है और उसे निश्चय हो गया है कि भारत भी सच्चे दिल से शांति चाहता है तथा उसके लिए पूरा प्रयत्न भी कर रहा है। फिर भारत एक लंबे संघर्ष के बाद विदेशियों की गुलामी से मुक्त हुआ है, इसलिए भी उसके प्रति उनके दिल में प्रेम, सहानुभूति और आदर है।

वैसे तो एशिया और अफ्रीका के सभी देशों के लोगों को वे चाहते हैं और उनसे प्रेम करते हैं, परन्तु सबसे अधिक प्रेम वे चीनियों से करते हैं और उनके बाद भारतीयों से।

: ८ :

चांदनी रात में फुटबाल-मैच

जून की २३ तारीख को हम लेनिनग्राद में थे। वर्ष का यह सबसे लंबा दिन होता है। इन दिनों यहांपर रात नहीं के बराबर होती है। सूर्य लगभग बीस घण्टे तक क्षितिज के ऊपर ही रहता है। शेष समय, अगले अरुणोदय तक, इतना प्रकाश रहता है कि आप खुले में बगैर बत्ती के आराम से पढ़ सकते हैं। इन दिनों यहां सड़कों पर रात में बत्तियां नहीं जलतीं। वर्ष के ये दिन यहांपर 'धवल रजनी के दिन' कहलाते हैं।

इस समय वहां शाम को देर तक लोग खेल-कूद आदि में व्यस्त रहते हैं। इनके लिए बत्तियां लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। लेनिनग्राद के उस विशाल स्टेडियम पर हम जब फुटबाल-मैच देखने के लिए पहुंचे, तब शाम के साढ़े सात बज चुके थे। साढ़े नौ बजे तक मैच चलता रहा। परन्तु उस समय भी वहां इतना प्रकाश था, जितना शाम के पांच बजे बम्बई में होता है। यही अपने-आपमें एक बहुत अद्भुत अनुभव था।

स्टेडियम में ८५,००० दर्शकों के बैठने का प्रबन्ध है। बम्बई के ब्रेबोर्न स्टेडियम की भांति यह ऊपर से ढका हुआ नहीं है। मैच वहां की दो स्थानीय टीमों के बीच ही था। फिर भी देखनेवालों में बेहद उत्साह था। जब हम पहुंचे उस समय तक ६०,००० लोग वहां पहुंच चुके थे।

सोवियत संघ में खेलों के प्रति दिलचस्पी बराबर बढ़ रही है।

फुटबाल उनका सबसे प्रिय खेल है। यों टेनिस भी खूब लोकप्रिय है। जिन दिनों हम वहां थे, स्वीडन में फुटबाल के अंतर्राष्ट्रीय मैच चल रहे थे। रूस के नवयुवकों में उसके बारे में इतनी दिलचस्पी और उत्तेजना थी कि वे हर मिनट जानना चाहते थे कि वहां कौन किस प्रकार खेल रहा है। रूसियों को विश्वास था कि उनकी टीम जीतेगी। कम-से-कम अन्तिम मुकाबले में तो जरूर पहुंच जायगी। किन्तु जब समाचार पहुंचे कि वह इंगलैंड के साथ १-३ गोल से हार गई तो वहां लोगों को बड़ी निराशा हुई।

हमें कुछ देर हो गई थी और हम अपनी एक मुख्य मेजबान सेनिया सातेकोवा के साथ बड़ी तेजी से मोटर द्वारा स्टेडियम पहुंचे। साधारणतौर पर स्टेडियम के पास मोटर नहीं ले जाई जा सकती। इसलिए पुलिस ने हमारी गाड़ी रोक दी। परन्तु सेनिया ने उससे कुछ बात की, एक काग़ज़ दिखाया और उसने हमें आगे बढ़ने की इजाजत दे दी। मुख्य फाटक पर भी ऐसा ही हुआ। उसने वहां भी यही किया। तुरन्त हमें अंदर जाने की अनुमति मिल गई। टिकट तक नहीं खरीदना पड़ा। हमें सबसे अच्छी जगह पर ले जाया गया, जो विशेष अतिथियों के लिए सुरक्षित था। केवल एक इशारे से वे समझ गये कि हम मेहमान हैं और भारत से प्रतिनिधि-मण्डल के रूप में आये हैं। मालूम होता है कि ऐसे सब स्थानों और प्रसंगों पर मेहमानों और प्रतिनिधियों के साथ एक विशेष प्रकार का व्यवहार होता है तथा उनके लिए विशेष स्थान पहले ही खाली छोड़ दिया जाता है। अब तो वहां यह एक 'नियम-सा बन गया है। देश-देश से आनेवाले प्रतिनिधियों का तांता लगा ही रहता है।

मैच 'ज़ेनेट ब्ल्यू' और 'एडमिरल्टी' वालों के बीच था। ज़ेनेट वाले सदा 'ए' वर्ग में रहे हैं और एडमिरल्टी वालों को हाल ही में 'बी' वर्ग से 'ए' वर्ग में चढ़ाया गया था और किसी 'ए' टीम के साथ उनका यह पहला ही सामना था। इसी कारण शायद लोगों में

इतनी उत्सुकता और उत्तेजना भी थी। अधिकतर लोग और खासकर नौजवान नवीन और प्रगतिशील टीम के समर्थक थे।

पहला गोल 'एडमिरल्टी' ने किया। इसपर गजब की तालियां बजीं और उत्तेजना हुई! पुरानी टीम अधिक अच्छा खेल रही थी। परन्तु आज तो 'एडमिरल्टी' की किस्मत ही सिकन्दर नज़र आ रही थी। नई टीम में आत्म-विश्वास की कमी के कारण कुछ घबराहट-सी थी। कितने ही अच्छे मौके उसने खो दिये। ऐसा लगता था मानो नौसिखिए खिलाड़ी हों। गेंद को 'पास' करने की बजाय अनेक बार वे दूर से ही सीधे गोल की तरफ 'किक' लगा देते। यह देखकर स्वभावतः उन्हीके साथी-खिलाड़ी चिढ़ जाते। कभी-कभी धक्कम-धक्का भी कर जाते। इसपर रेफरी ने उनके एक खिलाड़ी को डांटा भी। परन्तु इसपर उसने बुरा नहीं माना। एक 'खिलाड़ी' की तरह ही उस डांट को ग्रहण किया।

खेल का स्तर कोई बहुत ऊंचा नहीं था। फिर भी लोगों को उसमें मज़ा आ रहा था, क्योंकि उनमें काफ़ी जोश था। हमारी साथिन सेनिया वॉलीबॉल की खिलाड़ी थी और अपने क्लब की चैम्पियन भी थीं। इसलिए वह इस खेल को गहरी दिलचस्पी के साथ देख रही थी। चूंकि उसकी सहानुभूति शुरू से 'एडमिरल्टी' के साथ थी, इसलिए उन्होंने जब पहला गोल किया तो वह मारे खुशी के उछल पड़ीं।

रूस में मैच डेढ़ घंटे तक खेला जाता है। बीच में पंद्रह मिनट का विश्राम होता है। खेल खतम होने में दस मिनट रह गये थे और 'एडमिरल्टी' का फिर एक गोल हो गया। परंतु इसके तुरंत बाद ज़ेनेट वालों को एक 'पेनल्टी' का लाभ मिल गया और उन्होंने भी एक गोल कर दिया। बस, यह अन्तिम गोल था। खेल के बीच में एक खिलाड़ी को चोट आ गई, इसलिए उसे खेल छोड़कर जाना पड़ा। उसके स्थान पर एक नया खिलाड़ी आ गया। बाद में मुझे बताया गया कि टूर्नामेन्ट के खेलों में भी ऐसी परिस्थितियों

में नये खिलाड़ी ले लिये जाते हैं । परन्तु अंतर्राष्ट्रीय मैचों में यह रियायत नहीं दी जाती।

खेल शुरू होने से पहले पचास आदमियों का एक बैण्ड दो-एक मिनट तक बजता रहा। हिन्दुस्तान की भांति बीच की छुट्टी में बैण्ड नहीं बजा।

सारे खेल की योजना और संचालन कोमसोमोल की तरफ से हुआ था। लेनिनग्राद कोमसोमोल के प्रथम सचिव ने ही प्रारंभ में सारी घोषणाएं कीं। खेल के मैदान में भी वह अपने दो साथियों को लेकर बड़ी शान से इधर-उधर आ-जा रहे थे।

सबसे पहले उन्होंने यह घोषणा की कि खेल के बाद में लाटरी खुलेगी। यहां लाटरी खुलने का यह पहला ही मौका था। इतनी बड़ी भीड़ के आने का कारण भी शायद यही था। लाटरी में बारह इनाम रखे गए थे। ये सब साधारण, कम कीमत की चीजें थीं, जैसे खिलाड़ियों की पोशाकें आदि। दो स्कूटर भी रक्खे गए थे। परन्तु कार्य बहुत धीमी गति से हो रहा था। सारे इनामों के खुलने में लगभग पैंतालीस मिनट लग गये। परन्तु इनाम पाने की उत्सुकता हर व्यक्ति को थी। हम तो थक गये। अतः समारोह की समाप्ति के कुछ पहले ही हम वहां से चल दिये।

मास्को के लेनिन स्टेडियम में हमने एक और ज़ोरदार फुटबाल-मैच देखा। यह एक फ्रेंच टीम और मास्को की एक स्थानीय टीम के बीच खेला गया था। दोनों ही टीमें औपचारिक रूप से अपने देशों का प्रतिनिधित्व नहीं कर रही थीं। फिर भी प्रेक्षकों में गजब का उत्साह था। इसका कारण शायद यही रहा हो कि सोवियत संघ में बाहर से बहुत अधिक टीमें नहीं आतीं। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं, सोवियत संघ में खेल-कूद की रुचि बढ़ रही है और हर बड़े शहर में, कीव तथा ताशकन्द में भी, स्टेडियम बन रहे हैं।

: ६ :

सामूहिक खेत

१ जुलाई का पूरा दिन हमने ल्यूबरत्से के एक सामूहिक खेत (कोल-खोज़) में बिताया। ल्यूबरत्से कीव से लगभग ३६ मील है। इस खेत का नाम था 'स्लाहेत दो कोम्यूनिज़्म', अर्थात् 'साम्यवाद की ओर'। सामूहिक खेत के अध्यक्ष ने हमारा स्वागत किया और फार्म की सारी प्रवृत्तियों की विस्तृत जानकारी दी। हमेशा की तरह उन्होंने कई आंकड़े पेश किये, जो काफ़ी प्रभावोत्पादक थे।

इस फार्म पर १२०० मकान हैं, जिनकी जनसंख्या लगभग ४००० है। संपूर्ण फार्म लगभग १५००० एकड़ भूमि पर स्थित है, जिसमें से १०००० एकड़ ज़मीन पर खेती की जाती है। ५०० आदमी और ११०० स्त्रियां खेत में काम करते हैं। फार्म पर एक माध्यमिक स्कूल, एक छोटा-सा दवाखाना, एक बच्चों का बग़ीचा, नौ सहकारी दुकानें और एक उपभोक्ता-सहकारी समिति है। एक क्लब भी उस समय बन रहा था। साथ ही फार्म के पास दस कम्बाइन मशीनें, २३ ट्रैक्टर, जानवरों का चारा मिलानेवाली तीन मशीनें, २३ ट्रकें और मोटरें, चुकंदर काटने की चार मशीनें आदि भी हैं। ३७१ हार्सपावर की ७६ बिजली की मोटरें, घोड़े, बैल आदि हैं सो अलग।

कुल काम का लगभग ६५ प्रतिशत काम मशीनों द्वारा ही किया जाता है। अनाज की खेती के अलावा वे पशु-पालन, सब्जी व हरी घास भी पैदा करते हैं।

कुल कृषियोग्य भूमि में से ६०० एकड़ भूमि चुकंदर की खेती के

लिए सुरक्षित है। चुकंदर से वे चीनी बनाते हैं। शेष में से २००० एकड़ पर वे गेहूं की खेती करते हैं और बाकी बची जमीन अन्य खाद्यान्नों तथा आलू आदि सब्जियों के लिए है। उनका प्रति एकड़ उत्पादन इस प्रकार है—गेहूं ५० सेर, मक्का १७ सेर, चुकंदर १२५०० सेर, और आलू ७००० सेर।

पशुओं में उनके पास २००० गायें थीं, जिनमें से ६०० उस समय दूध देती थीं। २००० सूअर, १००० भेड़ें, १०००० बत्तखें और मुर्गाबियां तथा ५०० छत्ते शहद की मक्खियों के थे।

प्रत्येक गाय औसतन १५-१६ सेर दूध प्रतिदिन देती थी। साल-भर में उसका औसत दूध ३७०० सेर बैठता था। उनका विचार था कि वे यह औसत ४००० सेर तक बढ़ा लेंगे। पूरे फ़ार्म की डेयरी का कुल वार्षिक उत्पादन इस प्रकार था—२० लाख सेर दूध, २७ लाख सेर मांस और १,३९,००० अण्डे।

फार्म के संपूर्ण उत्पादन को तीन भागों में बांट दिया जाता है। एक भाग तो सरकार को सौंप दिया जाता है, दूसरा भाग फार्म के लिए रख लिया जाता है और तीसरा भाग फार्म पर काम करनेवाले परिवारों में बांट दिया जाता है। ज्वार और बाजरा मुख्यतः पशुओं को खिला दिया जाता है। गायों को थोड़ा गेहूं भी खिलाया जाता है। घटिया किस्म का चुकंदर और तरबूज भी पशुओं के काम आता है।

किसान अपने उत्पादन का कुछ भाग खुले बाजार में बेच सकते हैं। शेष उत्पादन सरकार की मंडी-समिति के द्वारा ही बेचा जाता है। स्वयं अपनी जमीन के उत्पादन पर किसान का ही स्वामित्व होता है। साथ ही सामूहिक खेत के उत्पादन में से भी उसे कुछ भाग मिलता है।

सोवियत कानून के अनुसार सारी जमीन राष्ट्र की, अर्थात् जनता की होती है। जमीन का कुछ भाग लोगों को दे दिया जाता है, लेकिन केवल सामूहिक खेतों के उपयोग के लिए। सामूहिक खेत पर रहने-वाले प्रत्येक परिवार को एक एकड़ जमीन दी जाती है, भले ही परि-

वार में कितने ही सदस्य हों। यदि किसान फार्म छोड़कर शहर में अन्य धंधा करने जाना चाहता है, तो उसकी जमीन सामूहिक खेत में शामिल कर ली जाती है। लेकिन यदि उस किसान का परिवार फार्म पर ही रहना चाहता है तो वह जमीन परिवार के पास ही रहती है। इस प्रकार मिली जमीन पर यदि किसान मकान बनवा लेता है, तो उस मकान पर किसान का ही स्वामित्व रहेगा। यदि किसान पास के शहर में अन्य धंधा करता है और उस मकान में रहना चाहता है तो वह रह सकता है।

यदि किसान व्यक्तिगत खेत पर अधिक मेहनत करे तो उसकी आय बढ़ जाती है। आमतौर पर रूसी किसान हैं भी मेहनती। खेती में सामूहिक फार्म से उन्हें घोड़ों, ट्रैक्टरों और अन्य मशीनों की सहायता मिल जाती है। किसान की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पर उसके परिवार का अधिकार हो जाता है और उसकी पत्नी परिवार की मुखिया बनती है। जब कोई युवक किसान विवाह करता है तो उसे नई जमीन मिलती है और वह अपने नये परिवार के साथ नया घर बसाता है।

सामूहिक खेत की कुल आय का ६० प्रतिशत सदस्यों में बांट दिया जाता है। प्रत्येक परिवार ने कुल कितने घंटे और कितना काम किया, इस आधार पर यह वितरण किया जाता है। अलग-अलग प्रकार के कार्यों के लिए अलग-अलग दरें निश्चित हैं। सामूहिक फार्म से प्रत्येक परिवार को औसतन १८००० से २०००० रूबल[1] वार्षिक की आय हो जाती है। इसमें वस्तुओं की शक्ल में जो आय होती है, वह भी सम्मिलित है। इसके अलावा उसकी निजी आय होती है सो अलग। अधिक आय के लिए अतिरिक्त काम करने के लिए वे स्वतंत्र हैं। इसका एक ठोस उदाहरण हमारे देखने में आया। तीन जनों का एक परिवार था, जिसमें एक लड़की और उसके माता-पिता थे। वे तीनों जने काम करते थे और उनकी कुल आय ३७००० रूबल

---

[1] एक रूबल आजकल लगभग ५.२५ रु. के बराबर होता

थी। प्रत्येक व्यक्ति के लिए सप्ताह में छः दिन और प्रतिदिन आठ घंटे काम करना अनिवार्य है।

खेत की कुल आय का ६०प्रतिशत सदस्यों के बीच बंटने के बाद शेष ४० प्रतिशत में से २० प्रतिशत टूट-फूट की मरम्मत व नये निवेश (इनवेस्टमेंट) के लिए सुरक्षित रहता है। यह राशि मुख्यत: भवन-निर्माण, मशीन, पशु, आदि पर खर्च की जाती है।

१२ प्रतिशत एक विशेष कोष में चला जाता है। यह कोष सामूहिक खेत के वृद्ध सदस्यों की सहायता के लिए इकट्ठा किया जाता है और इसकी राशि वृद्ध सदस्यों को पेंशन के रूप में मिलती है।

६ प्रतिशत राशि रासायनिक पदार्थों, पेट्रोल, तेल आदि पर खर्च हो जाती है और शेष २ प्रतिशत सांस्कृतिक कोष में जमा हो जाती है।

सामूहिक फार्म सरकार को ८ प्रतिशत आय-कर देता है। यह कर 'जनता की जमीन' का उपयोग करने के मुआवजे के रूप में दिया जाता है। अन्य कोई भूमि-कर उन्हें नहीं देना पड़ता। प्रत्येक किसान अपना निजी आय-कर देता है। जिस वर्ष हम वहां थे, उस वर्ष और उसके एक वर्ष पहले का मिलाकर, सामूहिक फार्म ने सब प्रकार के करों के ९,८५,००० रूबल शासन को दिये, जिसमें ७,००,००० रूबल कृषि-कर और २,८५,००० रूबल स्वेच्छा से दिया गया सुरक्षा-कर व बीमा-राशि थी।

फार्म के सब सदस्यों को मिलाकर एक सामान्य समिति बनती है, जो संपूर्ण फार्म की प्रधान होती है। अपनी बैठक में यह समिति अपना सभापति, व्यवस्थापक-मंडल, और नियंत्रण आयोग (कंट्रोल कमीशन) का सभापति चुनती है। आनेवाले वर्ष का उत्पादन-कार्यक्रम भी यही समिति अंतिम रूप से स्वीकार करती है। वर्ष में तीन-चार बार इस समिति की बैठक होती है और वह चाहे तो फार्म के विधान में परिवर्तन कर सकती है। नियंत्रण-आयोग इस समिति के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करता है। व्यवस्थापक-मंडल और नियंत्रण-आयोग

की बैठकें महीने में कम-से-कम दो बार होती हैं। उत्पादन के सुनियंत्रण के उद्देश्य से नियंत्रण-आयोग कई छोटे-छोटे विभागों में बंटा होता है और प्रत्येक विभाग के आधीन पांच ब्रिगेड होती हैं।

इस आयोग के सभापति, उपसभापति तथा अन्य विशेषज्ञ फार्म के वैतनिक कार्यकर्त्ता होते हैं। व्यवस्थापक-मंडल में इक्कीस सदस्य हैं, लेकिन वास्तव में इनमें से कुल छः सदस्य ही व्यवस्था आदि का काम करते हैं। इन छः सदस्यों को खेतों में काम नहीं करना पड़ता और इन्हें फार्म से वेतन मिलता है। लेकिन नियंत्रण-आयोग के सदस्यों को स्वयं खेती का काम करना पड़ता है।

तथ्यों और आंकड़ों की जानकारी प्राप्त करके हम खेत को प्रत्यक्ष देखने के लिए निकले। इसका विस्तार बहुत विशाल था। हर जगह हमें मोटरों में बैठकर ही जाना पड़ा। फार्म को चार या पांच मुख्य केन्द्रों में बांट दिया गया है। प्रत्येक केन्द्र पर कर्मचारियों के रहने के मकान, मशीनें और काम करने के शेड और पशुशालाएं हैं। हर केन्द्र अपने आस-पास के क्षेत्र का काम संभालता है।

हम सामूहिक खेत के एक-दो सदस्यों के मकानों में भी गये। घर मामूली थे, जैसे हमारे यहां किसानों के खेतों पर होते हैं। आबो-हवा और रहन-सहन के कारण जो अन्तर होता है, बस उतना ही अन्तर था। साधारण कच्चे मकान थे, पड़ौस के कमरे में जानवरों के बांधने की जगह थी और घर में आस-पास खेत के औजार वगैरह पड़े थे।

दूसरी जगहों की भांति यहां के किसान भी भले थे और उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया। भोजन के समय तक हम इतना घूमे कि काफी थक गये थे। भोजन फार्म के अध्यक्ष के साथ ही किया। फार्म पर कुछ बूंदा-बांदी हो रही थी, इसलिए अन्दर बैठकर ही डटकर खाना खाया। अगर बाहर बैठ सके होते तो अधिक मज़ा आता। अध्यक्ष और अन्य किसान बड़े परिश्रमी, हट्टे-कट्टे और ताकतवर मालूम हुए। उनका खाना-पीना भी अच्छा था। हँसी-मजाक खूब

पसन्द करते थे। बात-बात पर ठहाके लगाते थे। युक्रेन के निवासियों की खुश-मिजाजी और विनोदप्रियता प्रसिद्ध है। वे सदा प्रसन्न रहते हैं।

मैं तो कुछ आवश्यक कार्यों के कारण जल्दी भारत वापस आ गया था। हमारे प्रतिनिधि-मंडल के अन्य सदस्य वहीं रह गये थे। कुछ दिनों बाद जब वे वापस लौटे तो उन्होंने अपनी रिपोर्ट मुझे दी। उन्होंने बताया कि मेरे रवाना होने के बाद दोपहर को उन्हें उज़बेकिस्तान के उनीज़ाबाद का कार्ल मार्क्स सामूहिक फार्म दिखाने ले जाया गया। यह फार्म ताशकन्द से कुछ ही मील की दूरी पर कालीनिन जिले में है। इस फार्म पर खासकर सब्जी पैदा की जाती है। सन १९५७ में यहांपर १७,००० टन सब्जी पैदा हुई थी। यह फार्म कुल ३६८८ एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। यहांपर १००० व्यक्ति काम करते हैं—५६० परिवारों के ६०० पुरुष और ४०० स्त्रियां। इनमें से ७५ प्रतिशत परिवारों ने अपने निजी मकान बना लिये हैं। सन १९५७ में इस फार्म में एक करोड़ रूबल का लाभ हुआ। हर किसान को काम के प्रत्येक दिन की मजदूरी २१ रूबल के हिसाब से मिली। इसके अलावा प्रतिदिन नौ किलोग्राम आलू और तीन किलोग्राम चावल मिलते थे। फार्म की इस आय में से ६० प्रतिशत किसानों को बांट दिया गया, १० प्रतिशत सरकारी करों में चला गया, और १५-२० प्रतिशत के खेती के नये औजार खरीदे गए।

इसके दो दिन बाद प्रतिनिधि-मण्डल यानगिओल कालेनिन-सामूहिक फार्म देखने गया। यहां कपास पैदा होती है। छः खेतों को मिलाकर सन् १९२८ में इसकी स्थापना की गई थी। इसका क्षेत्रफल लगभग ५००० हेक्टर[1] है, जिसमें से ३००० हेक्टर पर केवल कपास की खेती होती है। सन् १९५६ में यहांपर ७,३०० टन कपास पैदा हुई थी, जिससे २७० लाख रूबल की निवल आय हुई। इस फार्म में ४००० लोग काम करते हैं। हर व्यक्ति को प्रत्येक दिन के काम के लिए तीन किलोग्राम चावल तथा २२ रूबल मजदूरी दी जाती है।

[1] एक हेक्टर लगभग २.४७१एकड़ का होता है।

: १० :

दर्शनीय स्थान

मास्को पहुंचने के दूसरे ही दिन हम मास्को विश्वविद्यालय देखने गये। इसका निर्माण रूस के महान वैज्ञानिक लामानोज़ोव ने किया था। अतः उनके नाम पर इसे लामानोज़ोव विश्वविद्यालय भी कहते हैं। इसकी स्थापना सन् १७५५ में हुई। यह उसका २०४वां वर्ष था। बीच की मुख्य इमारत २३९ मीटर ऊंची है, इसमें तेरह विषयों की पढ़ाई होती है—विज्ञान के छः और कला के सात विभाग हैं।

विश्वविद्यालय में २२,००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इनमें से १५,५०० दिन में विधिवत् पढ़ाई करते हैं। २००० शाम के वर्गों में आते हैं। शेष ४५०० विद्यार्थी पत्र-व्यवहार द्वारा अपनी पढ़ाई करते हैं। नियमित पढ़ाई करनेवाले विद्यार्थियों में से ८० प्रतिशत को राज्य से छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

छात्रालयों में ६००० विद्यार्थी रहते हैं। छात्रालयों का शुल्क नाम-मात्र का है। शाम के वर्गों में जानेवाले अधिकांश विद्यार्थी दिन में काम करके अपनी रोजी कमाते हैं। उन्हें कोई छात्रवृत्ति नहीं दी जाती।

पत्र-व्यवहार का पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए है, जो प्रायः मास्को से बाहर रहते हैं। घर पर किया गया लेखनकार्य जांच के लिए वे डाक द्वारा विश्वविद्यालय को भेजते रहते हैं। वर्ष में दो बार वहां परीक्षा के लिए आ जाते हैं।

परीक्षा में जो विद्यार्थी पहली बार में उत्तीर्ण नहीं होते, उनका

विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर वर्गों में १५०० विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। इनमें से १० प्रतिशत विदेशी हैं। विश्वविद्यालय में ४५० प्रोफेसर, ६०० लेक्चरर, ५५० वैज्ञानिक और १२०० प्रयोगशाला में सहायक हैं। पुस्तकालय में दस लाख से अधिक पुस्तकें हैं।

सोवियत संघ की योजना है कि देश में ३६ विश्वविद्यालय बनाये जायं, जिनसे सैकड़ों संस्थाएं सम्बद्ध हों। इन विश्वविद्यालयों के स्नातकों को यहां से निकलने पर काम की कमी नहीं होती। सरकार उन्हें तुरन्त काम देती है। आंकड़ों से ज्ञात होता है कि परीक्षाओं में करीब ६० प्रतिशत विद्यार्थी सफल होते हैं। जो १० प्रतिशत रह जाते हैं, उनका भविष्य तो अन्धकारमय ही समझना चाहिए। उनके आगे बढ़ने की आशा बहुत कम होती है। किस विषय की पढ़ाई के लिए कितने विद्यार्थी लिये जायं, इसकी संख्या देश की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा-मंत्रालय पहले से ही निश्चित कर देता है। इसके अलावा जिन्हें अधिक समय मिलता है, ऐसे विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक कालेज में खास-खास विषयों के अलग वर्ग भी होते हैं। उन्हें हर तरह की सहूलियतें दी जाती हैं।

हमारी यात्रा से पहले वर्ष मास्को विश्वविद्यालय का आनुमानिक व्यय-बजट २८ करोड़ रूबल था। इस वर्ष बजट को बढ़ाकर दस लाख रूबल प्रतिदिन के हिसाब से रखा गया है। विशेष शोध-कार्यों आदि के लिए विश्वविद्यालय को शासन की तरफ से तीस लाख रूबल की सहायता अलग से मिलती है।

विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद एक सरकारी आयोग विद्यार्थी की फिर परीक्षा लेता है और उसकी योग्यता के अनुरूप उसे काम देता है। इसमें उसकी निजी रुचि और वह कहां रहना पसंद करेगा, इसका भी ध्यान रक्खा जाता है।

विश्वविद्यालय के अध्यक्ष ने हमें ये सारी बातें बताईं और कहा कि हम उनकी तथा उनके साथी प्रोफ़ेसर और विद्यार्थियों की शुभेच्छाएं

भारत के प्रोफ़ेसर तथा विद्यार्थियों तक पहुंचायें।

बातचीत के बाद हमें विश्वविद्यालय की मुख्य इमारत, सभा-भवन और विभिन्न विभाग दिखाये गए। मुख्य भवन की नवीं मंजिल से पूरे शहर का विहंगम दृश्य हमने देखा। हमें विश्वविद्यालय का म्यूज़ियम, पुस्तकालय, स्वीमिंग-पूल, लेक्चर हाल, कसरत करने का स्थान आदि भी दिखाये गए।

विश्वविद्यालय को देखने के बाद हम छात्रालयों में गये। यहांपर हमें विद्यार्थी-संघ के मंत्री मिले। उन्होंने हमारा स्वागत किया और भारत तथा उसके महान नेता श्री जवाहरलाल नेहरू और भारत के विद्यार्थियों के प्रति सोवियत संघ की शुभकामनाएं प्रकट कीं। उन्होंने हमें बताया कि मास्को विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के बहुत से संगठन हैं, जैसे 'यंग कम्यूनिस्ट लीग' (कोमसोमोल), 'यंग ट्रेड यूनियनिस्ट्स', 'साइंटिफिक स्टुडेण्ट्स सोसाइटी', 'स्पोर्ट्स सोसाइटी', और 'टूरिस्ट्स सोसाइटी'। इनके अलावा साम्यवादी दल की भी एक शाखा है। कुछ विद्यार्थी इसके भी सदस्य हैं। २२००० विद्यार्थियों में से १६००० विद्यार्थी 'यंग कम्यूनिस्ट लीग' (कोमसोमोल) के सदस्य हैं। फुरसत के समय के खेलों के प्रबन्ध के लिए प्रत्येक छात्रावास में विद्यार्थी कौंसिलें हैं। इसके अलावा विद्यार्थियों के क्लब भी हैं, जो नये, उदीयमान कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए चित्रकला, नृत्य-संगीत, नाट्य आदि प्रवृत्तियां चलाते रहते हैं।

हर कालेज की एक प्रबन्धक समिति होती है। इसमें कोमसोमोल के द्वारा चुना हुआ एक विद्यार्थी-प्रतिनिधि भी होता है। उसे मत देने का अधिकार है। दूसरी बातों के साथ-साथ छात्रवृत्तियां किसे दी जायं, इसका भी विचार यह प्रबन्धक समिति करती है।

हमें बताया गया कि कोमसोमोल तो एक राजनैतिक संस्था है, परन्तु ट्रेड यूनियनें राजनीतिक संस्थाएं नहीं हैं। प्रोफेसर, शिक्षक और बड़ी उम्र के विद्यार्थी ट्रेड यूनियनों के सदस्य हो सकते हैं।

विद्यार्थी-संघ ने हमारे सम्मान में एक छोटा-सा समारोह किया। इसमें प्रतिमा ने दो गीत गाये, जिनमें से एक टैगोर का भी था। विद्यार्थियों ने इन्हें बहुत पसन्द किया।

'मीत्रो', अर्थात् जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल मास्को का एक विशेष आकर्षण है। जब हम यह रेल देखने गये तो रेलवे के डायरेक्टर ने हमारा स्वागत किया और इसका सारा इतिहास सुनाया। सन् १९३५ में इसके निर्माण का काम शुरू हुआ। अब इस ४३ मील लम्बी रेल पर ४७ स्टेशन हैं। १०,००० व्यक्ति इसमें काम करते हैं। हमें बताया गया कि जमीन के अन्दर चलनेवाली इन गाड़ियों में लगभग २७ लाख लोग प्रतिदिन यात्रा करते हैं। मास्को की जनसंख्या ५० लाख है, इसे देखते हुए मुझे ये आंकड़े कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण लगे। मैंने उनसे पूछा कि किस आधार पर यह गणना उन्होंने की है। स्वयं वे लोग भी चक्कर में पड़ गये कि ये आंकड़े किस आधार पर इकट्ठे किये गए हैं। जब मैंने अपना सदेह प्रकट किया तब स्वयं उन्होंने महसूस किया कि जो आंकड़े उन्होंने हमें बताये थे, व्यवहार में उन्हें प्राप्त करना बहुत कठिन था। मैंने उनका ध्यान इस ओर खींचा कि यह हो सकता है कि एक व्यक्ति दिन में कई बार सफर करता है और गणना करते समय एक ही व्यक्ति की अलग-अलग यात्रा को विभिन्न व्यक्तियों की यात्राएं मान लिया गया हो।

इस ट्रेन में बैठकर हमने चारों तरफ चक्कर भी लगाया। हर बड़े स्टेशन पर हम उतरते, उसे अच्छी तरह देखते, और फिर आगे जाने के लिए अगली गाड़ी में चढ़ जाते। हर तीन या चार मिनट में एक गाड़ी आती-जाती थी।

निःसन्देह मास्को की जमीन के अन्दर चलनेवाली रेल एक बहुत बड़ी चीज है। उसका संचालन भी बहुत व्यवस्थित है। मुसाफिरों को ऊपर-नीचे लाने-ले जाने के लिए चलती हुई सीढ़ियां हैं। स्टेशनों पर बत्तियों के बहुत बड़े झूमर लटकते हैं, जिनसे अन्दर का सारा

भाग सदा जगमगाता रहता है। स्टेशन बहुत सुन्दर दिखते हैं, क्योंकि उनमें से अधिकांश के फर्श संगमरमर के हैं। हमें कहा गया कि पहले तो संगमरमर केवल ज़ार और अमीरों के महलों के काम में आता था, किन्तु अब वह सार्वजनिक उपयोग के स्थानों में लगाया जा रहा है। स्टेशनों पर बड़ी-बड़ी पेंटिंग और मोज़ेक से बनाये गए सुन्दर-सुन्दर चित्र बने हुए हैं। इस रेलवे की अपनी सामान्य उपयोगिता तो है ही, परन्तु मुझे लगता है कि युद्ध-काल में हवाई हमले से बचाव के लिए भी यह बहुत अच्छी जगह हो सकती है। इसके स्टेशनों में से एक तो कोमसोमोल के युवकों ने बनाया है। अतः उसका नाम 'कोमसोमोल' रख दिया गया है।

उसी दिन दोपहर को १२-३० बजे हम 'इन्स्टिट्यूट ऑव ओरियण्टल स्टडीज' देखने के लिए गये। संस्था के अध्यक्ष ने अपने साथी अध्यापकों और विद्यार्थियों की तरफ से हमारा स्वागत किया। संस्था की प्रवृत्तियों और खासतौर पर भारत से सम्बन्धित प्रवृत्तियों का उन्होंने विस्तृत परिचय दिया। इन दिनों हमारे दो देशों के बीच मित्रता के सम्बन्ध होने के कारण भारत-विषयक अध्ययन पर यहां अधिक ध्यान दिया जा रहा है। बहुत-से रूसी विद्यार्थी हिन्दी सीख रहे हैं। कुछ बंगला, उर्दू, मराठी, और मलयालम भी सीख रहे हैं। उन दिनों वहां रवीन्द्रनाथ ठाकुर, भारती, बंकिमचन्द्र, प्रेमचन्द, निराला आदि की कृतियों के रूसी अनुवाद हो रहे थे। पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शनशास्त्र को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय अर्थशास्त्र, खासतौर पर भारत में विदेशी उद्योगों की स्थिति, भारत की कृषि-पद्धति में क्या-क्या सुधार और परिवर्तन हो रहे हैं और सार्वजनिक उद्योग वगैरह का अध्ययन भी गहराई से हो रहा है।

प्रोफेसर गोलबर्ग ने भारत-रूस सम्बन्धों का अच्छा अध्ययन किया है। इन दोनों देशों के इतिहास तथा अन्य पुराने दस्तावेजों के अध्ययन के आधार पर उन्होंने बताया है कि सत्रहवीं और अठारहवीं

सदी से हमारे दोनों देशों के बीच मित्रता के सम्बन्ध चले आ रहे हैं। यों तो शोध-कार्य करनेवालों ने यहांतक भी पता लगाया है कि ठेठ दसवीं सदी से हम दोनों देशों का पारस्परिक सम्बन्ध है। यह संस्था भारत का प्राचीन और आधुनिक इतिहास, जिसमें सन १८५७ का इतिहास भी शामिल होगा, शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रही है।

यहांपर एक बात मुझे बड़ी अजीब लगी। यद्यपि ये लोग यहांपर अध्ययन करते हैं, बड़े-बड़े प्रबन्ध लिखते हैं और भारत के प्रसिद्ध लेखकों, कवियों और राजनैतिक विचारकों पर समाचार-पत्र व पत्रिकाओं के लिए लेख वगैरह तैयार करते हैं, फिर भी उन्होंने महात्मा गांधी का कहीं नामोल्लेख तक नहीं किया। उन्होंने तिलक और उनके विचारों का बड़े आदर के साथ वर्णन किया है। परन्तु गांधीजी के बारे में वे एकदम चुप रहे। भारत के जिन लोगों को स्वयं हम भी बहुत कम जानते हैं, उनके नामों का उल्लेख है, पर गांधीजी का नाम कहीं नहीं।

जब मैं उन्हें धन्यवाद देने के लिए उठा तो मैंने उनका ध्यान इस तरफ खींचा। मैंने कहा, "यदि आप भारत की वर्तमान पीढ़ी और खासकर युवकों के दिलों को जानना चाहते हैं, तो जबतक आप गांधीजी का अध्ययन नहीं करेंगे तबतक आप इनको नहीं जान सकेंगे।" मैंने तो, चूंकि यह बात ध्यान में आई, इसलिए साफ़-साफ़ कह दी थी। यह उम्मीद नहीं थी कि वे इसका जवाब देंगे। परन्तु उनपर मेरी बात का गहरा असर पड़ा। उनके अध्यक्ष तथा इस विभाग के विशेषज्ञ ने बड़े विस्तार से कहा कि उनकी सरकार और पार्टी गांधीजी के सिद्धान्तों और विचारों से मतभेद रखती हैं। वे तिलक के विचारों को पसन्द करते हैं। फिर भी मुझे बराबर अश्चर्य होता रहा कि इस प्रकार की विशुद्ध अध्ययन की संस्था में भी महज मतभेद के कारण गांधीजी के विचारों और सिद्धान्तों के अध्ययन की उपेक्षा क्यों की जा रही है।

प्रतिनिधि-मंडल के अन्य सदस्य टाल्सटाय की जायदाद 'यास्नाया

पोल्याना' देखने भी गये। यह जगह मास्को से कोई १२५ मील की दूरी पर है। दूसरे काम में व्यस्त रहने के कारण मैं नहीं जा पाया। शाम को लौटकर सदस्यों ने बताया कि ग्राम्य प्रदेश की यह यात्रा बहुत आनन्ददायक रही। उन्हें खुशी थी कि उन्हें टाल्सटाय का निवास-स्थान देखने का अवसर मिला। टाल्सटाय को हमारे यहां बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता है। गांधीजी के साथ उनके सम्बन्ध तथा गांधीजी पर उनके प्रभाव को हम कैसे भूल सकते हैं। यास्नाया पोल्याना शहर की भीड़-भाड़ और व्यस्त जीवन से दूर शांत वातावरण में 'बर्च' के वृक्षों के झुरमुट के बीच स्थित है। मौसम दिनभर खराब रहा। बूंदाबांदी होती रही। टाल्सटाय म्यूज़ियम के डिप्टी डायरेक्टर और कामरेड अलेग्ज़ेन्डर दिमियिव ने प्रतिनिधि-मंडल के सदस्यों का सौजन्य-पूर्ण स्वागत किया। यह तमाम जायदाद टाल्सटाय के नाना की थी। टाल्सटाय ने पचास वर्ष से भी अधिक इसी स्थान में बिताये थे और उनकी अधिकतर श्रेष्ठ कृतियां यहीं लिखी गईं थीं। सन १९०६ में गांधीजी ने टाल्सटाय को जो पत्र लिखा था, वह मास्को म्यूज़ियम में सुरक्षित रखा हुआ है। टाल्सटाय का मकान अब भी उसी तरह जमा हुआ है जैसा टाल्सटाय के समय में था—फर्नीचर आदि सब उसी तरह रखे हुए है,। निवास-स्थान के पास ही एक म्यूज़ियम बनाया गया है, जिसमें टाल्सटाय की पुस्तकों की मूल पाण्डुलिपियां आदि सहेजकर रखी गई हैं।

एक दिन सुबह हम मास्को का प्रख्यात लेनिन स्टेडियम देखने गये। यह एक बहुत विशाल स्टेडियम है। अपने-आपमें यह एक स्वतंत्र संस्था ही है। उसके डायरेक्टर जनरल श्री नापासनीकोव ने हमारे साथ घूमकर सारा स्टेडियम दिखाया। एम्फ़ी थियेटर की तर्ज की उसमें तिहत्तर कतार हैं, जिनमें एक लाख से ऊपर आदमी बैठकर खेल देख सकते हैं। उसके अन्दर जाने-आने के रास्ते इस खूबी के साथ बनाये गए हैं कि इतने सारे लोग सिर्फ सात मिनट के अन्दर बाहर चले जा

सकते हैं। हमें बताया गया कि इस स्टेडियम के बनाने में लगभग ४५ करोड़ रूबल लगे।

मुख्य स्टेडियम के साथ बच्चों का एक छोटा स्टेडियम भी है, जिसमें केवल सात से सत्रह साल की उम्र के बच्चे खेलते हैं। इसमें प्रतिदिन २५०० बच्चों को शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षरण दिया जाता है। इसके अलावा एक छतदार स्टेडियम भी है, जिसे क्रीड़ा-महल (पैलेस ऑव स्पोर्ट्स) कहते हैं। इसमें १७० प्रेक्षक बैठ सकते हैं। बॉक्सिग के मैच, वाद्यवृन्द, नाटक आदि इसीमें होते हैं। पड़ौस में ही एक तैरने का तालाब भी है, जिसके चारों ओर १३,२०० व्यक्ति बैठकर देख सकते हैं। प्रत्येक दिन इसमें लगभग १५०० मनुष्य तैरने का अभ्यास करने के लिए आते हैं।

यहांपर एक स्पोटर्स म्यूज़ियम अर्थात खेल-कूद के साधनों का संग्रहालय भी है। इसमें हमें पिछले युवकोत्सव की एक छोटी फिल्म दिखाई गई। इस संग्रहालय में एक आलमारी भारतीय चीजों की थी। रूस की वालीबाल और फुटवाल की टीमें भारत में आई थीं, तब उन्हें जो इनाम मिले थे, उनको इसमें संग्रहीत करके रखा गया है।

शाम के समय हम मास्को की उद्योग और कृषि-प्रदर्शनी देखने गये। यह एक स्थायी प्रदर्शनी है, जो विशाल इमारतों में सजाई गई है। कई बड़े-बड़े मंडप हैं। परन्तु इनके अलावा हर राज्य ने अपने-अपने स्थापत्य और कला के अनुरूप स्वतन्त्र भवन भी बनाये हैं। उनमें अपने-अपने राज्य के उद्योगों की तथा खेती की चीजें सजाकर रक्खी हैं। यह पूरा क्षेत्र, उसके उद्यान, फव्वारे और सारी सजावट अत्यन्त आकर्षक और मनोहर है। अगर इस सारे संग्रहालय को ध्यान से देखने लगें तो कई दिन लग जायं। हमारे पास तो कुछ ही घण्टे थे। अतः हम सारे मंडपों में जल्दी-जल्दी घूम लिये और सारी चीजों पर एक दौड़ती हुई नज़र मात्र डाल ली। इनमें एक 'स्पुतनिक मंडप' भी था। उसकी तरफ हमारा ध्यान खासतौर पर गया। इसमें रूस के स्पुतनिक

का पूरे आकार का एक नमूना रक्खा था। विशेषज्ञों ने पहले और दूसरे स्पुतनिक की सारी विशेषताएं हमें समझाईं। ज्यार्जिया का मंडप मुख्यतया फलों और सब्जियों से भरा था। इसीके पास एक कांच का मकान था, जिसके अन्दर ज्यार्जिया के फल सचमुच उगाये जाते हैं। एक और मंडप था, जिसमें शान्ति के लिए अणु-शक्ति का उपयोग बताया गया है। इसने भी हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।

अगले दिन सुबह हम जगत-प्रसिद्ध क्रेमलिन देखने गए। अन्दर पुराने ढंग के बहुत-से गिरजाघर हैं। क्रेमलिन के सामने इस्पात का बना एक बहुत बड़ा घण्टा है, जिसका वजन २०० टन से भी ऊपर होगा। ४० टन की एक बहुत बड़ी तोप भी है—'तोप, जो कभी दागी नहीं गई और घंटा, जो कभी बजाया नहीं गया।' घंटा वास्तव में ढले हुए इस्पात का एक बहुत बड़ा ढेर-सा है। क्रेमलिन पर ले जाते समय यह कुछ टूट गया था।

क्रेमलिन को देखकर स्वभावतः हमारे दिल पर बड़ा असर हुआ। समस्त संसार को प्रभावित करनेवाले कितने ही निर्णय वहां लिये गए हैं और अब भी लिये जा रहे हैं। दुर्भाग्य से मुख्य इमारतों की मरम्मत चल रही थी, जहां उनकी संसद की बैठकें होती हैं। हमारे रूसी मित्रों ने इन्हें हमें दिखाने की इजाज़त लेने की बहुत कोशिश की, परन्तु वह नहीं मिल सकी।

फाटक के पासवाला संग्रहालय भी हमें बताया गया। यहांपर उन्होंने ज़ारों की बहुत-सी चीजों का संग्रह करके रक्खा है। अब तो शोभा की ये कीमती चीजें महज ऐतिहासिक महत्व की होकर रह गई हैं। अनेक प्रकार के कीमती व सुन्दर मुकुट, सिंहासन, जेवरात, पहनने के बहुमूल्य वस्त्र, जिरह-बख्तर और रथ वगैरह यहांपर रक्खे हैं।

महान लेनिन-ग्रन्थालय को भी हमने जल्दी में एक नज़र डालकर देख लिया। हमें बताया गया कि इस ग्रन्थालय में १६० भाषाओं की दो करोड़ पुस्तकें हैं। इसमें बड़े-बड़े बीस हाल हैं, पचासों वाचना-

लय हैं और छोटी-छोटी 'माइक्रो फिल्में' पढ़ने के यंत्रों के बीस सेट हैं।

हम मास्को की आर्ट गैलेरी भी देखने गये। इसे भी अच्छी तरह देखने के लिए हमारे पास पूरा समय नहीं था। हमें कहा गया कि लेनिनग्राद का चित्र-संग्रहालय इससे भी बड़ा और प्रसिद्ध है और उसे देखने के लिए हमें अधिक समय मिल सकेगा।

रूस के अन्य स्थानों की सैर करके जब हम वापस मास्को आये, तब एक दिन शाम को हम गोर्की पार्क में टहलने चले गए, जिसे यहां 'सांस्कृतिक उद्यान' कहा जाता है। मास्कवा नदी के किनारे यह एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके अन्दर बहुत-से नाटकगृह, उपहारगृह, खेल के मैदान आदि हैं। यहां बहुत बड़ी संख्या में लोग आकर अपना फुरसत का समय बिताते हैं।

मास्को से बारह घंटे की रेल-यात्रा के बाद सुबह नौ बजे हम ऐतिहासिक और सुन्दर नगर लेनिनग्राद पहुंचे। स्थानीय युवक-समिति के सदस्यों ने स्टेशन पर हमारा स्वागत किया। सामान आदि होटल में जमाकर हम घूमने निकले। जिस होटल में हमें ठहराया गया था, वह कोई बहुत अच्छा होटल नहीं था। ऐसा लगा कि लेनिनग्राद में होटलों की बहुत कमी है, बल्कि बढ़िया होटल तो एक ही था, जो पूरी तरह भर चुका था। हमारे मेजबानों ने बढ़िया होटल में हमारी व्यवस्था करने का भरपूर प्रयत्न किया, किन्तु वे भी बेचारे क्या करते!

लेनिनग्राद शहर मास्को की अपेक्षा अधिक सुन्दर और अच्छा लगा। मास्को जितनी भीड़-भाड़ और व्यस्तता भी यहां नहीं थी। लोगों के काम करने और चलने-फिरने में यहां अधिक शांति थी। वे अधिक खुशहाल और मैत्रीपूर्ण लगे। महिलाओं में नारी-सुलभ लावण्य व माधुर्य अपेक्षाकृत अधिक है, ऐसा भी हमें लगा। उनके चेहरे पर सहज-स्वाभाविक कोमलता और व्यवहार में सौजन्य का अनुभव हमें हुआ। सुन्दर चेहरे भी यहां कहीं-कहीं दिखाई दे जाते थे। लेनिनग्राद में हम जहां भी गये, लोग हमसे स्नेह और मित्रतापूर्वक मिले। वे जिस तरह

हमारा स्वागत करते थे, वह हमें बहुत अच्छा लगा।

नगर के चारों ओर अच्छी-खासी हरियाली है। सैंकड़ों बग़ीचे शहर में हैं। नदी के दोनों किनारों पर बसी बस्तियां काफी विकसित हैं।

गत महायुद्ध में जर्मन सेनाएं नगर के बहुत करीब तक आ गईं थीं और शहर के चारों तरफ उन्होंने घेरा डाल दिया था। अतः लेनिनग्राद और उसके आसपास के इलाकों को बहुत विपदाएं सहनी पड़ीं। तमाम शहर युद्ध की यादगारों से भरा पड़ा है। 'मार्स' (युद्ध देवता) के बगीचे में सतत जलनेवाली अग्नि-ज्वाला है, जो युद्ध के शहीदों की स्मृति में जलाई गई थी। ज़ार पीटर प्रथम के शीतकालीन प्रासाद के सामने एक ४७ मीटर ऊंचा विजय-स्तम्भ है, जिसे नेपोलियन के समय के रूसी-फ्रेंच युद्ध में हुई रूसी विजय की स्मृति में बनाया गया था।

हमें लेनिनग्राद म्यूनिसिपल-भवन भी ले जाया गया। उपप्रधान, कामरेड स्त्रज्लकोवस्की ने हमारा स्वागत किया और लेनिनग्राद-सोवियत का पूरा विवरण दिया। स्थानीय नगर-प्रशासन के विभिन्न पहलुओं को उन्होंने विस्तार से हमें बताया।

लेनिनग्राद-गणतन्त्र की सामान्य-परिषद् में ५५१ सदस्य हैं, जिनमें से ३४५ पुरुष हैं और २०६ महिलाएं। ये सदस्य स्थानीय नागरिकों द्वारा चुने जाते हैं। प्रत्येक ६००० लोगों के पीछे एक सदस्य होता है। सामान्य परिषद् की कार्यकारिणी समिति में २५ सदस्य होते हैं, जिनमें से दस 'प्रीसीडियम' के सदस्य होते हैं। सभापति व मन्त्री के अतिरिक्त 'प्रीसीडियम' में आठ सदस्य ऐसे होते हैं, जो सभापति को रोज़मर्रा के कार्यों में सहायता देते हैं। सामान्य परिषद अपने सभापति और अन्य समितियों का चुनाव करती है। विभागाध्यक्ष चुने भी जा सकते हैं और, यदि आवश्यकता हो तो, उनकी पद-वृद्धि भी की जा सकती है।

हमें बताया गया कि सामान्य परिषद् के ५५१ सदस्यों में से २९३ सदस्य उच्च शिक्षा-प्राप्त हैं, ४८ सदस्य स्कूली-शिक्षा प्राप्त हैं और

२१० सदस्य फैक्टरियों आदि में काम करते हैं।

सामान्य परिषद् की बैठक वर्ष में तीन-चार बार होती है। बैठक में वे नगर का बजट, भवन-निर्माण का कार्यक्रम, शिक्षा आदि की नीति निर्धारित करते हैं। सामान्य परिषद् की १५ स्थायी उपसमितियां हैं। कार्यकारिणी-समिति की बैठक प्रत्येक सोमवार को होती है। 'प्रीसीडियम' की बैठक प्रत्येक मंगलवार को होती है और आवश्यकता होने पर अधिक बैठकें भी हो सकती हैं। जिस वर्ष हम वहां थे, उस वर्ष उनका वार्षिक खर्च ३२,५४० लाख रूबल का था, और आय ३२,४५० लाख रूबल। आय का मुख्य साधन औद्योगिक उत्पादन-कर है। प्रत्येक नागरिक अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा आय-कर के रूप में देता है, जिसका कुछ भाग तो राज्य के पास चला जाता है और शेष नगर-निगम के पास।

कुल खर्च का लगभग ४८ प्रतिशत निर्माण-कार्यों में चला जाता है, जिसमें नहरें आदि बनाना और उनकी देखभाल भी है। लगभग इतनी ही राशि शिक्षा, सफ़ाई, स्वास्थ्य-सेवा, बगीचे, पुस्तकालय, थियेटर, संग्रहालय तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यों पर खर्च की जाती है। २ प्रतिशत प्रशासन पर और २ प्रतिशत विविध मदों पर खर्च किया जाता है।

लेनिनग्राद की जनसंख्या ३२ लाख है। १७ वर्ष की उम्र से मताधिकार प्राप्त हो जाता है। स्थानीय पुलिस नगर-निगम के ही आधीन है।

नगर-निगम के सदस्यों को निगम से कोई तनख्वाह नहीं मिलती। जिन फैक्टरियों अथवा संस्थाओं का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, वहां से उन्हें तनख्वाह मिलती है। 'प्रीसीडियम' के दस सदस्यों को निगम तनख्वाह देता है। शहर की उपसमितियों में २५२ लोग और क्षेत्रीय उपसमितियों में १०९२ लोग नौकरी करते हैं। हमें बताया गया कि निगम-सदस्यों को केवल साम्यवादी दल ही खड़ा नहीं करता, बल्कि उन्हें अलग-अलग संस्थाएं अथवा जनता खड़ा करती है। साथ ही उन्होंने इस बात को भी माना कि चुनाव में प्रतिद्वंदी खड़ा करने की

व्यवस्था तो है, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। सदस्य निर्विरोध ही चुनकर आ जाते हैं।

हमें बताया गया कि व्यक्तिगत आय पर ८ प्रतिशत तक आय-कर वसूल किया जाता है। नौकरी-पेशा लोग ६ प्रतिशत आय-कर देते हैं। लेकिन हमें ये आंकड़े संदेहजनक लगे, क्योंकि दूसरी जगह से हमें जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इनसे सर्वथा भिन्न थे।

हमें लगा कि हमारे यहां नगर-निगम के सामने जो समस्याएं और कार्यक्रम हैं, वे वहां भी हैं। अंतर केवल इतना है कि उनका बजट हमारे यहां के बजट से काफ़ी बड़ा है। मकान की समस्या तो उनके सामने भी उतनी ही विकट है जितनी हमारे यहां।

जब हमने कामरेड स्त्रज्ल्कोवस्की से पूछा कि आपके आधीन कुल कितने आदमी काम करते हैं, तो उन्होंने मज़ाक में हमसे पूछा कि आपका मतलब शरारत करनेवाले लोगों से ही है न! श्री स्त्रज्ल्कोवस्की लगभग दो वर्ष पूर्व भारत आये थे और भारत-यात्रा के कई सुन्दर संस्मरण उन्होंने हमें सुनाये।

हमने 'लेनिनग्राद युवक क्लब' भी देखा। क्लब के सभापति काम-रेड मित्री गिम्रानकिन ने हमारा स्वागत किया। संगीत-कार्यक्रम में जाने से पहले हमने उनके कुछ सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के साथ कुछ देर मुलाकात की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए उनके पास एक विशाल भवन है, जिसके एक हाल में एक हज़ार लोग आराम से बैठ सकते हैं। हमें लगा कि हम जो कार्यक्रम देखने गये थे, वह बहुत लोकप्रिय था, क्योंकि पूरा हाल दर्शकों से खचाखच भरा था और टिकट मिलना कठिन था। सब कलाकार पेशेवर कलाकार नहीं थे। उनमें से कुछ तो अध्यापक थे, कुछ मज़दूर और बढ़ई थे। कलाकारों में एक रसोइया नौजवान भी था। अपने खाली समय में ये लोग मन-बहलाव के लिए क्लब में आते हैं और इस तरह के कार्यक्रम तैयार करते हैं। इससे न केवल उन्हें ही लाभ होता है, बल्कि जनता का भी मन-बहलाव हो जाता है।

जो कार्यक्रम हमने देखा वह वास्तव में बहुत सुन्दर था और उसका संगीत ऊंचे दर्जे का था। उन्होंने कई देशों के गीत गाए; प्रत्येक देश का गीत उसी देश की भाषा और तर्ज में गाया गया। ग्यारह-बारह वर्ष के एक बच्चे ने अत्यन्त आत्म-विश्वास और शानदार तरीके से एक गीत सुनाया।

हम लोग तो केवल कार्यक्रम देखने गये थे, किन्तु ऐन समय पर कार्यक्रम के प्रबन्धकों ने सोचा कि उपस्थित दर्शकों से हमारा परिचय कराया जाय तो अच्छा हो। हमें मंच पर ले जाया गया और एक-एक करके हम सबका परिचय दर्शकों से कराया गया। यह जानने पर कि हम लोग भारतवर्ष से आये हैं, उपस्थित लोगों ने भारी करतल-ध्वनि से हमारा स्वागत किया।

कोई लम्बा भाषण देने का अवसर तो वह था नहीं। अतः जब मुझसे बोलने को कहा गया, तो स्नेहपूर्ण स्वागत के लिए आभार प्रदर्शन कर मैंने शिष्टमंडल की ओर से उन्हें ताजमहल की एक प्रतिकृति भेंट में दी और कहा, "यह इमारत प्रेम की प्रतीक है। लेकिन वह प्रेम एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के लिए था। किन्तु यह प्रतिकृति मैं भारत के नवयुवकों की ओर से लेनिनग्राद के नवयुवकों को प्यार और स्नेह के प्रतीक के रूप में भेंट कर रहा हूं। यह व्यक्ति विशेष के प्रेम का नहीं, बल्कि सामूहिक प्रेम का प्रतीक है।" उपस्थित लोगों को ये भाव बहुत पसन्द आये। मेरे बोलने के बाद एक मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट से हाल गूंजता रहा।

जब हमने उन्हें ताजमहल की प्रतिकृति भेंट में दी तो प्रबन्धकों को लगा कि हमें भी कुछ देना चाहिए। अतः शीघ्र ही उन्होंने टाल्स्टाय की एक मूर्ति मंगवाई और हमें भेंट में दी।

इस प्रकार का हार्दिक और शानदार स्वागत वास्तव में हमारे लिए एक निराला अनुभव था। रात को लगभग १२.३० बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ और क्लब के सदस्य हमें हमारी बस तक पहुंचाने आये।

लड़के-लड़किय ने लोकप्रिय रूसी गाने गाये और हार्दिक विदाई दी। सोवियत संघ में आने के बाद आज पहली बार ही हमारा ऐसा स्वयंस्फूर्त व हृदयस्पर्शी स्वागत हुआ था। लोगों से मिलना-जुलना आदि तो इसके पहले भी चल रहा था। लेकिन वे मुलाक़ातें बहुत औपचारिक थीं। यह प्रेम और स्नेह देखकर तो एक बार यह भूल गये कि हम विदेश में हैं।

लेनिनग्राद विश्वविद्यालय की 'ओरियन्टल फैकल्टी' देखने का भी अवसर मिला। यह विश्वविद्यालय १४० वर्ष पुराना है और रूस का दूसरा सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। यहां २०,००० से भी अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं, जिनमें से १२,००० नियमित कक्षाओं के विद्यार्थी हैं, ४००० शाम की कक्षाओं के और ३००० विद्यार्थी पत्र-व्यवहार के द्वारा शिक्षा पाते हैं। छात्रालय में ६००० विद्यार्थी रहते हैं। केवल पूर्वी यूरोपीय देशों के ही लगभग ८०० विद्यार्थी यहां हैं। कई विद्यार्थी हिन्दी सीखते हैं, कुछ तो बंगला और तमिल तक का अध्ययन कर रहे हैं। पुस्तकालय में ३० लाख से भी अधिक पुस्तकें हैं।

दोपहर को हमने 'हरमिताज' देखा। यह रूस के पुराने ज़ारों का शीतकालीन प्रासाद था और अब यह संसार की सबसे बड़ी कलादीर्घाओं (आर्ट गैलेरी) में से एक है। लगभग ७५०० कलाकृतियां यहां एकत्रित की गई हैं, जिनमें से कुछ लियोनार्डो द'विंची और रेम्ब्रां जैसे महान् कलाकारों की मौलिक कृतियां हैं। समय की कमी के कारण इस महान् कला-भवन को हम जल्दी-जल्दी में ही देख पाये।

शिष्टमंडल के अन्य सदस्य लेनिनग्राद का 'पायनियर-प्रासाद' देखने भी गये। यह बच्चों की प्रवृत्तियों का एक बड़ा केन्द्र है तथा उस महल में स्थित है, जहां पहले सस्सि वंश के लोग रहते थे। इसमें ३०० कमरे हैं। एक पुस्तकालय भी है, जिसमें लगभग एक लाख पुस्तकें हैं। यहां बच्चे विभिन्न खेल खेल सकते हैं। बच्चों के चित्रों, खिलौनों और मॉडलों की प्रदर्शनी ने शिष्टमंडल के सदस्यों को विशेषरूप से आकर्षित किया। बाद में बच्चों ने स्वयं एक संगीत-कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

मैत्रीपूर्ण घरेलू वातावरण और बच्चों के सौजन्यपूर्ण व्यवहार ने हमारे साथियों को बहुत प्रभावित किया।

लेनिनग्राद से हवाई जहाज द्वारा हम क्रीमिया पहुंचे और क्रीमिया हवाई अड्डे से मोटरों द्वारा काले-समुद्र के तट पर स्थित याल्टा। याल्टा क्रीमिया का प्रसिद्ध स्वास्थ्य-केन्द्र है। एक दिन शाम को वनस्पति-बाग (बोटेनिकल गार्डन) में गये। यह बगीचा ज़ारों के जमाने का है। बहुत सुन्दर है। देश-विदेश से पेड़-पौधे लाकर यहां लगाये गए हैं। इससे स्थानीय लोगों को कल्पना होती है कि भिन्न-भिन्न देशों में कैसे-कैसे वृक्ष और वनस्पतियां होती हैं।

बगीचे में हमें लगभग तीस रूसी लड़कियों का झुंड मिला। ये लड़कियां भ्रमण के लिए लेनिनग्राद से आई थीं। उनमें से एक लड़की ने, जो थोड़ी-बहुत अंग्रेजी जानती थी, हमारे एक साथी से मज़ाक में पूछा कि हमारे प्रतिनिधि-मंडल में केवल एक ही महिला क्यों है। हमारा साथी कुछ असमंजस में पड़ गया और उत्तर के लिए मेरी तरफ इशारा कर दिया। उस लड़की के प्रश्न का कोई सही उत्तर तो मेरे पास भी नहीं था। अतः उत्तर देने की अपेक्षा मैंने उसीसे एक प्रश्न पूछा, "तुम लोग इतनी लड़कियां हो, तुम्हारे साथ पुरुष कितने हैं?" चूंकि उनके साथ एक भी पुरुष नहीं था, उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और सब लोग मुक्त हँसी हँस पड़े। थोड़ी ही देर में हम सब आपस में खूब घुलमिल गये। उन्होंने हमारे शिष्टमंडल के बारे में कई प्रश्न पूछे। प्रतिमा के बारे में भी उन्होंने जानना चाहा कि वह किसान है या फैक्टरी में काम करनेवाली। जब हमने उन्हें बताया कि वह गाना जानती है तो उन्होंने सड़क पर खड़े-खड़े ही उससे गाना सुनने की ज़िद की। बाद में उन्होंने भी एक रूसी गीत गाकर हमें सुनाया।

शाम को हमें एक शानदार जहाज में समुद्र की सैर कराई गई। इस जहाज का नाम 'रोसिया' था और इसमें १५०० यात्रियों के बैठने की व्यवस्था थी। यह थोड़ी देर पहले ही बन्दरगाह पर आया था।

उसके बाद हम समुद्र के किनारे-किनारे सड़क पर टहलते हुए चले। दरअसल यह याल्टा की एकमात्र मुख्य सड़क है। सारी सड़क पर्यटकों से भरी पड़ी थी। कई रोगी भी थे, जो देश के विभिन्न भागों से स्वास्थ्य-सुधार के लिए यहां आये हुए थे।

शाम को यह सड़क लोगों से भर जाती है और काफी भीड़-भाड़ हो जाती है। उस समय सवारियों का आवागमन बिलकुल बन्द कर दिया जाता है, जिससे लोगों को चलने-फिरने में बहुत सुविधा हो जाती है।

सड़क पर टहलते समय हमने डेढ़-दो वर्ष का एक बच्चा देखा, जो सड़क के बीचों बीच नन्ही-सी घोड़ागाड़ी हांककर ले जा रहा था। हमारा एक साथी उसके पास गया और घोड़े की लगाम पकड़कर हमारे पास ले आया। बच्चा ज़रा भी नहीं रोया, उलटे उसने हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढ़ा दिया। उसके माता-पिता पास ही एक बेंच पर बैठे हुए थे। यह देखकर कि उनके नन्हे बच्चे ने नये-नये दोस्त बनाये हैं, वे भी हमारे पास आये और कुछ ही देर में हमारे मित्र बन गये।

रास्तों से गुजरनेवाले लोग तथा दूसरे भी हमारे साथ बहुत प्रेम से व्यवहार करते। उनको भारतीय अच्छे लगते हैं। वे हमारे प्रधान-मन्त्री की खूब तारीफ करते। जहां-जहां भी हम गये, हमारा बड़े हर्ष के साथ स्वागत किया गया। उसमें कहीं कोई कृत्रिमता नहीं थी।

भाषा की कठिनाई के बावजूद लोग हमसे बोलने और बातचीत करने को उत्सुक थे। अंगरेजी जाननेवाले बहुत कम थे, इसलिए दुभाषिये की सर्वत्र मांग रहती। जहां-कहीं कोई थोड़ी भी अंगरेजी जाननेवाला मिल जाता, लोग उसे लेकर हमारे पास आते और उसके जरिए दुनियाभर के प्रश्न उत्सुकतापूर्वक हमसे पूछते।

स्वदेश के अतिरिक्त उन्हें अपने शहर पर भी गर्व था। हर बात-चीत के अन्त में 'हमारा शहर आपको कैसा लगा ?' जरूर पूछ लिया जाता। लेनिनग्राद में भी लोग इसी तरह पूछते थे।

रूस में हमने जबसे कदम रक्खा, हमारा सारा समय बड़ा व्यस्त रहा। याल्टा में पहली बार हमें सही माने में आराम और चैन मिला। 'काले-समुद्र' के सुन्दर तटों और पास-पड़ौस के स्वास्थ्यप्रद स्थानों पर हम खूब मौज से घूमे। समुद्र के पानी का गहरा नीला रंग बड़ा मन-मोहक लगता था। नाश्ता करके मोटर-बोट में हम मिशोव के लिए रवाना हुए। रास्ते में हमारी नाव कुछ स्टेशनों पर रुकी। हम किनारे-किनारे ही जा रहे थे। तटों पर सैकड़ों लोग आनन्द से घूमते हुए दिखाई दे रहे थे। कोई बालू पर लेटा है तो कोई सूर्य-स्नान कर रहा है, कोई नहा रहा है तो कोई नौका-विहार कर रहा है। लगभग सारे समुद्र-तट को लोगों के विश्राम-विहार के लायक सजा-बना दिया गया है और इसका लाभ उठाने के लिए यहां हजारों-लाखों की संख्या में लोग आते रहते हैं। जैसे ही हम मिशोव पहुंचे, हम सीधे समुद्र में कूद पड़े और खूब मौज से स्नान किया, तैरे, किश्तियों पर घूमे और खेले। पानी काफ़ी ठण्डा था, फिर भी बहुत मजा आया। बिल्कुल तरोताजा हो गये।

भोजन के बाद हम फिर नये-नये स्थान और चीजें देखने के लिए निकल पड़े। ब्रेनसोसकी महल हमें बड़ा अच्छा लगा। इसमें यूरोप और आटोमन के स्थापत्यकला का मेल है। मुग़ल तरीके के गुम्बद थे और खिड़कियां गोथिक ढंग की थीं।

ग्यानो और मिशा तो हमारे साथ मास्को से ही आये थे। इनके अलावा दो स्थानीय मित्र, एरिक और नाज़ा भी इस तरफ की सारी यात्रा में हमारे साथ रहे। हमने यहां भी मित्र बनाना शुरू कर दिया था। नाज़ा एक वयस्क और बड़ी मुस्तैद महिला हैं। इन्होंने सगी बड़ी बहन की भांति हमारी संभाल की। वह बड़ी चिन्ता के साथ हमारे लिए शाकाहारी भोजन बनवातीं और भोजन में रोज नई-नई चीजें देतीं। जहां-जहां भी हमें जाना होता, वह हमसे पहले एक अलग कार में पहुच जातीं। जब हम पहुंचते तो सारी चीजें तरतीब से सजी-सजाई हमें मिलतीं। उनकी

शलीनता और कार्यकुशलता ने हमें बड़ा प्रभावित किया।

जब हम नाव में मिशोव से लौटने लगे तो मुसाफिरों ने आकर हमें घेर लिया। उनके लिए और हमारे लिए भी वह एक उत्सव-सा बन गया। हम भी उनमें घुल-मिल गये और खूब गाते-खेलते रहे। उनमें एक आठ वर्ष का बालक ब्लादिशिव शेंको भी था। उसने हाव-भाव समेत एक कहानी सुनानी शुरू कर दी। वह बहुत ही अलमस्त प्रकृति का लड़का था। जो कहानी उसने सुनाई, उसका भाव यही था कि एक बार एक भेड़िया एक गांव में आया। लोग उसे मार डालना चाहते थे। वह एक बिल्ले के पास गया और पूछा कि गांव में कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है, जो उसकी जान बचाये? बिल्ले ने तीन-चार लोगों के नाम बताये। भेड़िया बोला, "नहीं, वे मेरी मदद नहीं करेंगे, क्योंकि मैंने उनके जानवर खा लिये थे।" बिल्ले ने उत्तर दिया, "जब तुमने सब लोगों के जानवर खा डाले, तो तुम्हारी जान कौन बचायगा ?"

कहानी समाप्त होने के बाद जब मैंने उससे पूछा कि हमारे साथ भारत चलोगे, तो उसने कहा, "हां-हां, क्यों नहीं! लेकिन थोड़े ही समय के लिए चलूंगा। और वह भी अकेला नहीं, अपने परिवार के साथ आऊंगा। मुझे अपना पता दे दीजिये। मैं आपको पत्र लिखूंगा।" अपनी उम्र के हिसाब से उसकी बुद्धि बहुत प्रखर थी। उसके बोलने-चालने और व्यवहार में काफी आत्मविश्वास था।

शाम को हमें अलूपका दिखाने ले जाया गया। यह वही प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है, जहां सन् १९४५ में लड़ाई के अन्त में स्तालिन, चर्चिल और रूजवेल्ट ने युद्ध और शान्ति के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लिये थे। हमें वह स्थान भी दिखाया गया जहां इनकी बैठकें हुईं और जहां वे तीनों प्रमुख ठहरे थे। जिस इमारत में चर्चिल ठहरे थे, वह सुन्दर है। सन् १९५५ में जब प्रधानमंत्री नेहरू यहां आये थे, तब उन्हें भी इसी-में ठहराया गया था। अब तो इसे सेनीटोरियम बना दिया गया है। समुद्र

के किनारे चारों ओर पहाड़ियां हैं। अधिकतर इन पहाड़ियों की ढाल पर ही मकान बनाये जाते हैं। चारों तरफ पेड़-पौधे और हरियाली होने के कारण सबकुछ बहुत सुन्दर लग रहा था। समुद्र के किनारे पर हमारे यहां जैसी रेत नहीं होती, बल्कि कंकड़-पत्थर होते हैं।

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के फौरन बाद हम इपलसी पर्वत पर गये। इस पहाड़ की ऊंचाई १२५३ मीटर है। पहाड़ की चोटी पर महायुद्ध में मारे गए शहीदों का स्मारक है। ऐसे पहाड़ों पर सड़क बनाना बहुत ही कठिन और खर्चीला है। इस क्षेत्र में एक किलोमीटर सड़क बनाने में लगभग १५० लाख रूबल खर्च आता है। प्रशासन ने सड़क बनानेवाले मजदूरों के लिए तीन-चार मकान बनवा दिये हैं। हमें एक मकान भी दिखाया गया, जो साइबेरिया और टुंड्रा से आनेवाले पर्यटकों के लिए सुरक्षित है। रेलवे कर्मचारियों और खदान में काम करनेवाले मजदूरों के लिए भी अलग-अलग मकान सुरक्षित हैं।

शाम को हम युक्रेन सेनीटोरियम में गये। वहां के लोगों ने हमारा हार्दिक स्वागत किया और हमारी सुख-सुविधा का बहुत ख्याल रखा। सेनीटोरियम की देखभाल एक ७२ वर्ष की वृद्धा करती हैं। हर माने में वह अद्भुत महिला थी। सब काम वह अपने हाथों से करती थी। हम जिस मेज पर खाना खानेवाले थे, उसे उसने स्वयं विशेष रूप से सजाया था। वह कमाल की मेज़बान थी। इतने आग्रह के साथ उसने हमें खाना खिलाया कि हमने अपनी सामान्य खुराक से लगभग दुगुना खाना खाया। उस महिला का अपना निराला व्यक्तित्व था और पूरे सेनीटोरियम के लोग उसे 'मां' कहकर बुलाते थे। वह वास्तव में उन सबकी मां ही थी। भले ही कोई आदमी थोड़ी देर के लिए ही क्यों न आये, वापस जाते समय वह उसकी मधुर स्मृति लेकर ही जायगा। उसके हृदय में प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्नेह और ममता थी।

क्रीमिया को अंतिम नमस्कार कर हम हवाई जहाज से शाम को युक्रेन की राजधानी कीव पहुंचे। अगला दिन शहर के पर्यटन से ही शुरू

हुआ। युद्ध के वीरों की मूर्तियां और अज्ञात योद्धाओं के स्मारक हमने देखे। शहर का चक्कर लगाकर हम एक टेकड़ी पर गये और वहां से एक तरफ कीवशहर का और दूसरी तरफ नीपर नदी का दृश्य देखा। उरीदोल गोर्की का मकबरा भी हमने देखा। मासकवा शहर की स्थापना उन्होंने ही की थी। ग्यारहवीं सदी में निर्मित अन्य गिरजे तथा और भी कई स्थान हमने देखे। स्थानीय कोमसोमोल का दफ्तर एक विशाल और सुन्दर चारमंजिले भवन में है।

दोपहर में हमने बच्चों की रेल देखी। बाद में ४.३० बजे विशाल ख्रुश्चोव स्टेडियम देखने गये। ख्रुश्चोव इसी प्रदेश के मूल निवासी है। उनके सोवियत रूस के प्रधानमंत्री बनने से पहले ही इस स्टेडियम का नाम उनके नाम पर रखा गया था। आज उत्सव का दिन था। पहली बार सोवियत युवक-दिवस मनाया जा रहा था। समारोह अत्यंत प्रभावोत्पादक था। बाद में सहृदयता और प्रेम से लोगों की भीड़ ने हमें इतनी बुरी तरह घेर लिया कि जिसको हम कभी नहीं भुला सकते।

दूसरे दिन सुबह हम छोटे बच्चों की कृषि-संस्था देखने गये। हमें इस संस्था के सभी विभागों में घुमाया गया और इसके कामकाज के बारे में सारी बातें विस्तारपूर्वक बताई गईं। बच्चे खेती के अनुसन्धान का काम यहां सीख रहे थे। प्रत्यक्ष अनुभव और प्रयोग के लिए संस्था के पास एक खेत भी है।
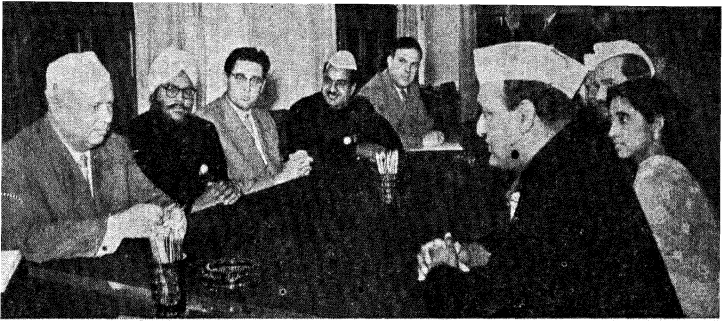
शिष्टमंडल की श्री ख्रुश्चोव से भेंट
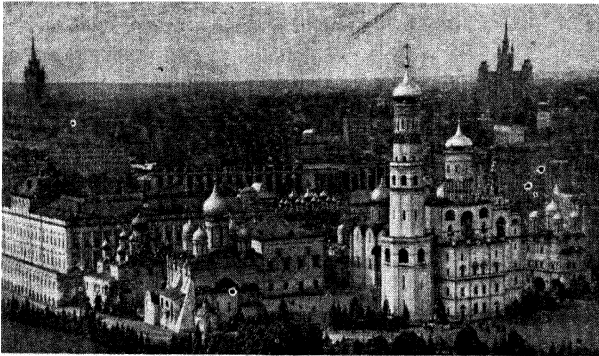
क्रेमलिन का विहंगम दृश्य

रेडस्क्वायर, मास्को

मास्को विश्वविद्यालय

मास्को का लेनिन स्टेडियम
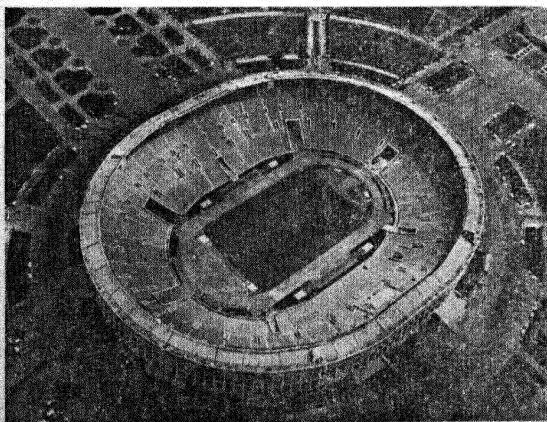
स्थायी कृषि व उद्योग-प्रदर्शनी

रात्रि में क्रमलिन

क्रेमलिन का

घंटा

जो कभी बजाया नहीं गया

और

तोप जो कभी दागी नहीं गई

क्रॅसनोडॉन में
'यंग-गार्ड'
का
स्मारक
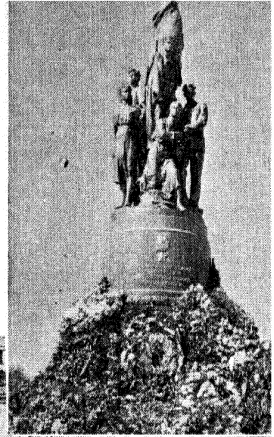
युवक-समारोह् में भाग लेनेवाले अतिथियों का स्वागत
करते हुए मास्को-निवासी

क्रीमिया का प्रसिद्ध स्वास्थ्य-केन्द्र, याल्टा

जार का शीतकालीन प्रासाद
बीच में अलेग्जेंडर-स्तंभ है

शिष्ट-मंडल के सदस्य—एक यंग पायनियर के साथ

फिनिश रेलवे स्टेशन पर
लेनिन का स्मारक

ज़ार के ग्रीष्मकालीन उपवन में शिष्ट-मंडल की एक सदस्या
रूसी लड़कियों के साथ

उज़बेकिस्तान के निवासी
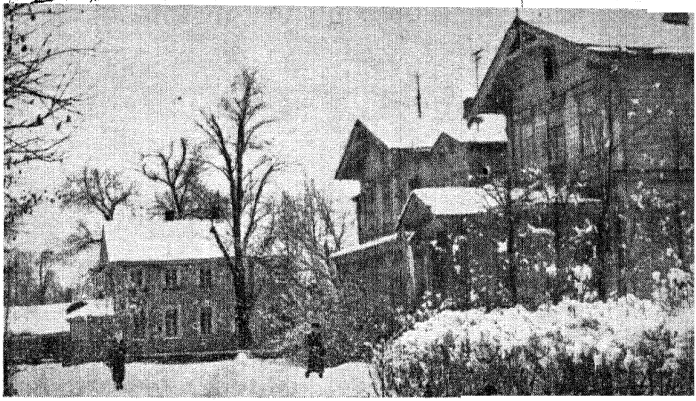
सामूहिक खेत और खेती
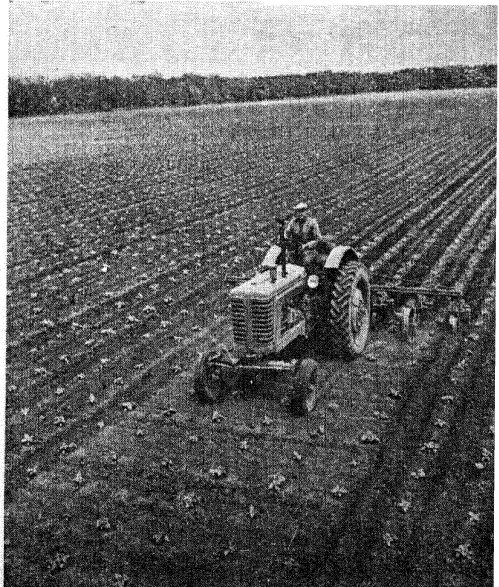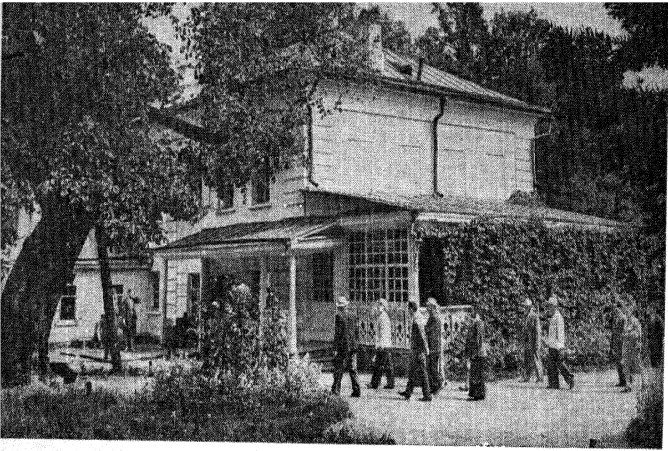
यास्नाया पोलियाना में टाल्सटाय म्यूजियम

मीत्रो (भूगर्भ-स्थित रेलवे) का प्लेटफार्म

: ११ :

डायरी के पृष्ठ

मास्को, १२ जून, १९५८

हेलसिंकी से हवाई जहाज द्वारा मास्को पहुंचा। तीन घण्टे से भी कम समय लगा। रात के ग्यारह बजे थे, परन्तु ऐसा लगता था मानों अभी शाम ही है। बड़ा सुहावना लग रहा था। सोवियत भूमि पर कदम रखते ही एक प्रकार की कृतार्थता-सी अनुभव हुई। यहां आने के सपने मैं कितने दिनों से देख रहा था। हमारे शिष्टमंडल के अन्य सदस्य भारत से सीधे यहां आनेवाले थे। यहां उतरते ही मुझे यह खुशखबरी मिली कि वे भी पन्द्रह मिनट के अन्दर ही यहां पहुंच रहे हैं।

ठीक समय पर वे आये। परिचय के बाद मुझसे कहा गया कि रूस की जनता के लिए दो शब्द कहूं ताकि वे उसे मास्को रेडियो द्वारा प्रसारित कर सकें। अपने प्रतिनिधि-मंडल की तरफ से मैंने हिन्दी में कहा, "अभी-अभी हम भारत से मास्को पहुंचे हैं। भारतीय-युवक-कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में हम यहां आये हैं। आपके बीच आकर हमें बहुत खुशी हो रही है। लगभग एक महीना हम आपके देश में रहेंगे। हम यहां नवयुवकों से मिलेंगे और बहुत-सी नई-नई बातें देखेंगे और सीखेंगे। हम कोई भी पूर्व-धारणा बनाकर यहां नहीं आये हैं। हम तो खुला दिल और दिमाग लेकर आये हैं। हर चीज़ को हम उसके वास्तविक रूप में देखना और समझना चाहते हैं। यहां से

लौटकर अपने देश के युवक-युवतियों को उसके सही रूप का वर्णन करना हमारा उद्देश्य है। हम आशा करते हैं कि हमारी इस यात्रा से रूस और भारत के नवयुवकों के बीच मित्रता और भी दृढ़ होगी।"

प्रारम्भिक शिष्टाचार के बाद बड़ी-बड़ी मोटरों में हम होटल पीकिंग गये, जो शहर के बीच में है। इसमें काफी देर लगी। रास्ते में नई-नई चीजें, नये-नये दृश्य, और नये-नये लोगों को देखकर हमें आनन्द हुआ। होटल के कमरे बहुत अच्छे और आरामदेह हैं।

मास्को, १३ जून

डटकर नाश्ता करने के फौरन बाद हम भारतीय दूतावास गये। हमारे राजदूत[1] श्री के० पी० एस० मेनन साइबेरिया के दौरे पर थे। प्रथम सचिव श्री आहूजा ने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया। कुशल-क्षेम पूछने के बाद हमने उनसे अपनी रूस-यात्रा के कार्यक्रम पर चर्चा की। हमें कहां-कहां जाना चाहिए और अपने कार्यक्रम में अन्य किन-किन बातों को हमें और शामिल करना चाहिए, इसके बारे में हमने उनकी सलाह ली।

१२.१५ बजे सोवियत युवक-संगठन-समिति के मुख्य कार्यालय पर हमें ले जाया गया। यह एक बहुत बड़ी इमारत है, जिसमें अनेक कमरे हैं। सारी इमारत इन्हींके सुपुर्द है। दफ्तर में काम करनेवाले भी बहुत हैं। यहांपर कामरेड शेवचेन्को के साथ अपनी एक महीने की इस यात्रा के बारे में हमारी प्रारभिक बातचीत हुई। उन्होंने हम-से हमारी विशेष अभिरुचि के बारे में पूछा और जानना चाहा कि हम कहां-कहां जाना पसन्द करेंगे। हमने उनसे कहा कि मास्को, लेनिनग्राद और स्तालिनग्राद तो हैं ही। इनके अलावा युक्रेन, क्रीमिया और उज़बेकिस्तान में भी हम कुछ स्थान देखना चाहेंगे। फिर यदि संभव हो तो स्वरद्लोवस्क या मगनीतोगोरस्क प्रदेश के सामूहिक फार्म और

१. आजकल श्री सुविमल दत्त रूस में भारतीय राजदूत हैं।

इस्पात के कारखाने भी देखने की हमारी इच्छा है। हमें पता चला था कि यहां काफी बेकार पड़ी जमीन को कृषियोग्य बनाया गया है। अल-ताई और कज्ज़ाकिस्तान में एकदम नई जमीनों के बहुत बड़े-बड़े चक तोड़े गए हैं। इन्हें भी हम देखना चाहते थे। उन लोगों ने भी हमें अपनी तरफ से सुझाया कि उनकी दृष्टि से कहां-कहां जाना और क्या-क्या देखना उपयुक्त और लाभदायक होगा। फिर हमारी जरूरतों और अपेक्षाओं को नोट कर लिया। कार्यक्रम की अंतिम तफसीलें तय करने के लिए कल फिर मिलने का निश्चय करके हम रवाना हुए।

दोपहर को खाने के बाद मास्को विश्वविद्यालय देखने गये। यह एक बहुत विशाल संस्था है। बहुत बारीकी से हमने इसकी प्रवृत्तियां देखीं। विद्यार्थी-संघ ने हमारे स्वागत में एक छोटा-सा समारोह आयोजित किया था।

मास्को, १४ जून

सुबह जमीन के अंदर चलनेवाली रेल 'मीत्रो' देखने गये। यह वास्तव में रूस की एक शानदार उपलब्धि है। रेलवे के डायरेक्टर ने हमें 'मीत्रो' की विस्तृत जानकारी दी।

१२.३० बजे हम 'इंस्टीट्यूट ऑव ओरिएंटल स्टडीज़' देखने गये। भारतीय साहित्यिकों व राजनैतिक विचारों पर यहां अच्छा काम हो रहा है। किन्तु गांधीजी के विचारों के प्रति उपेक्षा का भाव देखकर आश्चर्य होता है।

४.२० पर अपनी यात्रा के कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए हम फिर युवक-समिति के दफ्तर में गये। उन्होंने एक कार्यक्रम तैयार कर लिया था। कुल मिलाकर वह अच्छा था, यद्यपि ऐसे कुछ स्थान उसमें नहीं थे, जहां हम जाना चाहते थे। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि हम जहां-जहां भी जाना चाहें, बिना किसी प्रतिबंध के जा सकते हैं। उसमें कोई रुकावट नहीं है।

हर जगह का कार्यक्रम निश्चित करते समय उन्होंने स्थानीय लोगों को सूचना दे दी कि हमें युवकों की प्रवृत्तियां खासतौर पर दिखाई जायं, युवक-नेताओं से मिलाया जाय, स्कूलों और छात्रालयों में ले जाया जाय, उनके खेल वगैरह दिखाये जायं और यह भी दिखाया जाय कि युवक अपनी फुरसत के समय का उपयोग किस तरह करते हैं। सुन्दर प्राकृतिक स्थानों की सैर तथा नृत्य, नाटक आदि का प्रदर्शन भी हमारे कार्यक्रम में जोड़ा गया है।

मास्को, १५ जून

सुबह साढ़े दस बजे शिष्टमंडल के अन्य सदस्य यास्नाया पोल्याना देखने गये। दूसरे काम में व्यस्त रहने के कारण मैं नहीं जा पाया। लौटकर उन्होंने बताया कि टाल्सटाय के निवास-स्थान को देखकर वे बहुत प्रभावित हुए।

शाम को हमारे भारतीय मित्र श्री जायसवाल आ गये। वह मास्को रेडियो के हिन्दी-विभाग में काम करते हैं। उनके साथ मैं मास्को के सबसे बड़े वस्तु-भंडार 'गूम' पर गया।

निःसन्देह यह भंडार बहुत बड़ा है। लोगों की भीड़ लगी हुई थी। परन्तु यहां अधिकांशतः केवल डबल रोटी, मक्खन, दूध, मछली, गोश्त जैसी रोजमर्रा की ज़रूरी चीजें ही थीं। दूसरे कामकाज की चीजें भी थीं, परन्तु बहुत अधिक नहीं। इनकी किस्में भी अधिक नहीं थीं। कीमतें ऊंची मालूम हुईं। बिजली का सामान अपेक्षाकृत सस्ता है। मैंने एक बिजली का ग्रामोफोन १९५ रुपये में खरीदा, जिसके अन्दर लाउडस्पीकर भी लगा है। आवाज को कम-ज्यादा करने की भी सुविधा उसमें है। कीमत को देखते हुए अच्छी चीज है। टेलीविजन सेट भी ८०० रूबल में सस्ता ही है। ग्रामोफोन के रेकार्ड भी मंहगे नहीं हैं। हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि देर तक बजनेवाले जो रेकार्ड भारत में ३५ से ४० रुपये में मिलते हैं, वे यहां पांच रूबल

में मिल रहे है। मामूली रेकार्ड की कीमत भी उतनी ही है। "टके सेर भाजी टके सेर खाजा" वाला हाल है।

रात को भोजन हमने हमारे प्रसिद्ध नाटककार व कवि श्री रामकुमार वर्मा के यहां किया। फिलहाल भारत सरकार ने इनकी सेवाएं सोवियत विश्वविद्यालय को दे रक्खी हैं। यहांपर वह एक ऊंचे पद पर हैं और इनका बहुत ख्याल रखा जाता है।

भोजन के समय वहां मास्को में रहनेवाले कुछ और भारतीय भी थे। इनमें से कुछ विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं। हम तो अभी-अभी रूस आये हैं, इसलिए हमें यहां के जीवन के बारे में अधिक-से-अधिक जानने की उत्सुकता है। परन्तु हमारे ये मित्र सोवियत जीवन के बारे में वास्तविक जानकारी देने की बजाय उसके विषय में अपने-अपने विचार हमें आग्रहपूर्वक सुनाते जा रहे थे। डा० वर्मा को भी यह अच्छा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने तो आगे चलकर इस बातचीत में भाग ही नहीं लिया।

मास्को, १६ जून

सुबह हम यहां का प्रख्यात लेनिन-स्टेडियम देखने गये। बहुत बड़ी जगह है। एक लाख आदमियों के बैठने की यहां व्यवस्था है। दिन में कुछ दुकानों पर गये। दोपहर बाद कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के दफ्तर पर गये और रात को एक नृत्य-समारोह देखा।

मास्को, १७ जून

सुबह भारत-रूस-मैत्री-संघ ने हमारे लिए एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया था। लोग बहुत नहीं थे, परन्तु भारत के सांस्कृतिक जीवन में दिलचस्पी रखनेवाले, प्रमुख वैज्ञानिक, शिक्षा-शास्त्री, डाक्टर, खेती और खेलों में रुचि रखनेवाले खास-खास लोग उनमें थे। भारत-सोवियत फिल्म 'परदेसी' के निर्माता और संचालक, मास्को

फिल्म के उपसंचालक, टाल्सटाय म्यूज़ियम के डायरेक्टर कामरेड पोपावकिन भी थे।

इस संस्था की स्थापना इसी वर्ष हुई है। इसका उद्देश्य है हमारे दोनों देशों के बीच मैत्री सम्बन्धों को दृढ़ करना। इसकी मुख्य प्रवृत्ति है सोवियत रूस के बुद्धिजीवियों और मास्को में रहनेवाले अथवा भारत से रूस की यात्रा पर आनेवाले भारतीयों के बीच सभाओं के द्वारा संपर्क और मेल-जोल का प्रबन्ध करना।

कुशल-क्षेम पूछने के शिष्टाचार के बाद हम छोटे-छोटे समूहों में बंट गये, ताकि आपस में व्यक्तिगत तौर पर निःसंकोच बातचीत हो सके। इस मित्रता और आजादी के वातावरण में खुले दिल से बातचीत करने में सबको बड़ा आनन्द आया। हमने अपने मेजबानों को विनोबाजी के भूदान-आन्दोलन का साहित्य भेंट किया। भारत से पुस्तकें तथा अन्य प्रकार के साहित्य पढ़ने की उनमें बड़ी उत्सुकता है। शाम को हम उद्योग व कृषि-प्रदर्शनी देखने गये। 'स्पुतनिक-मंडप' और शांति के लिए अणु-शक्ति का उपयोग दिखानेवाले मंडप ने हमें विशेष तौर पर आकर्षित किया।

मास्को, १८ जून

सुबह क्रेमलिन देखने गये। कितनी महत्वपूर्ण जगह है यह ! हम तो रोमांचित हो उठे।

शाम को हमें कठपुतलियों का एक सुन्दर खेल दिखाया गया। बड़ा मनोरंजक था। खेल को वास्तविक बनाने के लिए बड़ी कल्पना और परिश्रम से काम लिया गया था।

मास्को, १९ जून

सुबह हमें 'यंग पायनियर्स' के केन्द्रीय कार्यालय पर ले जाया गया। भारत का यह पहला प्रतिनिधि-मंडल था, जो इस दफ्तर को देख रहा था।

लेनिन पुस्तकालय और आर्ट गैलेरी भी हमने जल्दी-जल्दी में

देखे।

आज रात को हमें मास्को छोड़कर अन्य स्थानों की अपनी यात्रा के लिए प्रस्थान करना है। मास्को के पीकिंग होटल का हमारा निवास बड़ा अच्छा रहा। यहां सब तरह का आराम है। आठ दिन रहे। इस इमारत में बारह मंजिलें हैं, जिनमें २१० कमरे हैं। दो आदमियों के रहने के कमरों का किराया ४० से लेकर ७५ रूबल प्रतिदिन है। इसमें भोजन-खर्च शामिल नहीं है, जो साधारणतः ८० से १०० रूबल दैनिक हो जाता है। एक बात खास तौर पर देखी गई कि होटल के सारे 'लिफ्ट' स्त्रियां ही चलाती हैं।

होटल में कई सुविधाएं व सेवाएं उपलब्ध तो हैं, किन्तु संतोष-जनक नहीं हैं। दरअसल यहां जूते पालिश करनेवाले से लेकर मैनेजर तक सब लोग सरकारी मुलाजिम हैं। इसलिए वे कुछ लापरवाह हैं और उनसे अधिक सहायता की अपेक्षा नहीं रखी जा सकती। लिफ्ट चलानेवाली स्त्रियां कठोर और हृष्ट-पुष्ट हैं। एक बार जब हम ऊपर की मंजिल पर जाने के लिए लिफ्ट पर चढ़े तो मैंने अपनी मंजिल का बटन दबाना चाहा, क्योंकि लिफ्टवाली महिला अंग्रेजी नहीं जानती थी और हम अपनी मंजिल की संख्या उसे नहीं बता सकते थे। इसपर उसने असभ्यता से मेरे हाथ को झटककर बटन से अलग हटा दिया, मानो मैं कोई अनुचित कार्य करने जा रहा था अथवा बटन छूने से मुझे बिजली का झटका लग जाता। पर झटका तो मुझे उसके छूने से लग ही गया।

वर्दी पहने पुलिस के सिपाही हमेशा होटल पर रहते हैं। सादे कपड़ों में खुफिया पुलिसवाले भी यहांपर हैं। बल्कि हमें तो बताया गया कि होटल में जितने स्त्री-पुरुष काम करते हैं, सब यहां ठहरने-वालों के विषय में पुलिस को सूचना देते रहते हैं। अतः अपने व्यवहार व बातचीत के सम्बन्ध में हमें सतर्क कर दिया गया था। मैं नहीं कह सकता कि यह बात कहांतक सच है। हां, एक दिन शाम को हमने

देखा कि दो व्यक्ति लिफ्ट के द्वारा ऊपर जाना चाहते थे। पता नहीं क्यों, लिफ्टवाली महिला ने पुलिसवालों को बुलाया और उन दोनों को लिफ्ट में से जबर्दस्ती उतरवाकर होटल के बाहर निकलवा दिया।

होटल में एक किताबों का स्टाल भी है, लेकिन उसमें अधिक पुस्तकें नहीं हैं और जो हैं भी, वे अधिक आकर्षक नहीं हैं। उनमें से कुछ तो घटिया काग़ज़ पर छपी हुई हैं। पत्रिकाएं जरूर अच्छी लगीं। जो स्त्री उस स्टाल पर थी,उसे यह परवाह ही नहीं थी कि कोई पुस्तकें खरीदता है या नहीं। उसका व्यवहार भी बहुत रूखा और उदासीनता का था।

एक जगह बैरा को मैंने आधा रूबल की 'टिप' दी। वह अकड़ गया कि लेगा तो दो रूबल ही लेगा। उसी समय कुछ व्यक्ति अन्दर आये और बैरा ने फुर्ती से 'टिप' छिपाली। एक दिन पहले एक साथी ने अन्य बैरा को एक रूबल की 'टिप' दी थी, जो उसने बड़ी खुशी से लेली थी।

होटल में एक महिला बहुत सहायक व सहृदय सिद्ध हुई। उसे पता था कि प्रतिनिधि-मंडल में हम तीन सदस्य कट्टर शाकाहारी हैं। अतः जब भी हम खाना खाने जाते, वह इस बात का विशेष ध्यान रखती है कि हमें अपनी रुचि की चीजें ही मिलें। लेकिन यह महिला तो इस होटल में एक अपवाद ही है।

लेनिनग्राद, २० जून

कल रात को हमारा प्रतिनिधि-मण्डल मास्को-हेलसिंकी एक्सप्रेस द्वारा लेनिनग्राद के लिए रवाना हुआ। गाड़ी अच्छी और आरामदेह थी। कितना अच्छा होता यदि यह यात्रा हमने दिन में की होती ताकि ग्राम्य प्रदेश की भी कुछ झांकी देखने को मिल जाती।

हमारे इस पूरे दौरे का प्रबन्ध कामरेड ग्यानो शिल्याएव के अधीन है। कामरेड मिशा हमारे हिन्दी दुभाषिया हैं।

आराम का मालूम हुआ। मैंने जानना चाहा कि इन दो शहरों के जीवन में इतना फर्क क्यों है। मुझे बताया गया कि लेनिनग्राद में अभी-तक कुछ पुराने संस्कारशील परिवार हैं। उनका असर समाज पर पड़ता ही है। इसीलिए लेनिनग्राद संस्कृति का केन्द्र बना हुआ है। पता नहीं जिन लोगों ने यह बात मुझे कही, वे अपने शब्दों का अर्थ ठीक तरह से समझकर कह रहे थे या नहीं। परन्तु मुझे यह जरूर लगा कि वहां के सामाजिक जीवन में जो क्रांतिकारी परिवर्तन किये गए, वे सब-के-सब अच्छे ही हैं, ऐसी धारणा अब बदलती जा रही है। अस्तो-न्मुख समाज में भी कुछ अच्छी चीजें बची रह जाती हैं। बेशक, समाज की प्रगति में जो चीजें बाधक हैं, उन्हें अवश्य बदलना चाहिए। परन्तु पुरानी बातें सब खराब हैं, ऐसा समझकर उन सबको यदि अस्त-व्यस्त कर दिया जाता है और उनके स्थान पर वैसी ही अच्छी नई चीजें लाने का यत्न नहीं किया जाता, तो समाज में उतनी जगह सूनी रह जाती है। पुराने रस्म-रिवाज और तौर-तरीके समाज के जीवनतत्व को बनाये रखने में सहायक होते हैं। सोवियत समाज आज भी एक ऐसे दौर से गुज़र रहा है, जिसमें समाज के अधिकांश सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो चुके हैं और उनके स्थान पर दूसरे उतने ही उपयोगी मूल्यों की स्थापना अभी नहीं हो पाई है। मैंने देखा कि इस कमी को वहां के लोग महसूस करने लगे हैं और उसकी पूर्ति करने का यत्न भी कर रहे हैं।

क्रान्ति के बाद बार-बार शुद्ध वातावरण बनाने के नाम पर कितनी ही हत्याएं वहां हुई, जिसके कारण वहां की जनता का अतीत से नाता टूट-सा गया है। इसीलिए वहां का जीवन बड़ा रूखा, कष्टमय और कठोर हो गया है। मास्को में यह बात साफ-साफ दिख जाती है, क्योंकि वह रूस की राजधानी और पार्टी की हलचलों का केन्द्र है। शायद इसी कारण वहां के वातावरण में केवल सुरुचि और संस्कारों की ही कमी नहीं है, बल्कि लोगों के चेहरों पर कोमलता और मधुरता की भी कमी दीख पड़ती है। लेनिनग्राद में लोगों के पास

कुछ अधिक फुरसत है। यहां ऐसी भाग-दौड़ नहीं। शहर कुछ छोटा है, परन्तु सुन्दर है। बहुत-से बगीचे हैं। यहां भी जमीन के अन्दर चलनेवाली रेलगाड़ियां हैं, लेकिन इतनी अच्छी और शानदार नहीं जितनी कि मास्को में। फिर भी सजावट में सादगी और सुरुचिपूर्णता पूरी है।

यहां के लोग हमसे मिलने को बहुत उत्सुक थे। भारतीयों के प्रति उनका रुख मैत्रीपूर्ण है। प्रतिनिधि-मण्डल के सिख सदस्य पूरनसिंह 'आज़ाद' की दाढ़ी-मूछ-पगड़ी आदि उनके लिए विशेष आकर्षण की वस्तुएं हैं। 'आज़ाद' जहां भी जाते हैं, इनके चारों ओर अच्छी-खासी भीड़ लग जाती है। उन्होंने रूसी भाषा के दो-एक वाक्य भी सीख लिये हैं, इसलिए वह सहज ही लोगों से बातचीत करके उन्हें मित्र बना लेते हैं। वह रूसी भाषा में लोगों से कहते कि हम लोग भारतीय युवक शिष्टमण्डल के सदस्य हैं, हम आपसे मित्रता करना चाहते हैं, हिन्दी-रूसी भाई-भाई आदि।

यहां भी हमने देखा कि लोग शांति चाहते हैं। उनके खेल, नाटक, गीत-संगीत आदि सब मुख्यतः शांति के कथानक पर आधारित हैं। मैं नहीं मानता कि आज संसार का सामान्य व्यक्ति युद्ध चाहता है। वह यह तो कदापि नहीं चाहता कि उसका देश युद्धस्थल बने। लेकिन यह सच होते हुए भी कि रूसी जनता शांति चाहती है, वह युद्ध की तैयारी में लगी हुई है। यदि सारे संसार में शांति स्थापित होती है, तो रूसी लोग खुशी से उसका स्वागत करेंगे, लेकिन यदि जबर्दस्ती उनपर युद्ध थोपा गया तो वे युद्ध का डटकर मुकाबला करेंगे। दरअसल वे हमेशा शक्तिशाली रहना चाहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे युद्ध के लिए भी तैयार हैं। लेनिनग्राद के नागरिक अपने शहर को बहुत प्यार करते हैं और उसपर उन्हें गर्व है। शहर कुछ-कुछ यूरोप के एक साधारण नगर-सा लगता है।

लेनिनग्राद, २३ जून

लेनिनग्राद में मशीनों के पुर्जे बनाने का एक कारखाना है, जिसे लेनिन का ही नाम दिया गया है। एक दिन सुबह-ही-सुबह हम उसे देखने गये। यह सौ वर्ष पुराना है और सोवियत-संघ के सबसे पुराने कारखानों में से एक है। शुरू-शुरू में इसमें कच्चा लोहा बनता था। उसके बाद यहां जहाज बनने लगे और अब रेलों के इंजिन, टरबाइन और रासायनिक तथा धातुओं-सम्बन्धी कारखानों के लिए और निर्यात के लिए दूसरी मशीनें भी बनती हैं। हमारे भिलाई के कारखानों के लिए २३ 'कम्प्रेसर' और 'टरबाइन' बनाने के लिए इसे आर्डर दिया गया है, जिनमें से २१ तो बनाकर भेज भी दिये गए हैं। शेष दो तैयार हो रहे हैं।

जब हमने उस फैक्टरी के 'कोमसोमोल' के मंत्री से कुछ प्रश्न पूछे तो वह कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। यह देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ। उनकी ओर से व्यवस्थापकों ने ही उत्तर दिये। फैक्टरी में कुल मिलाकर ६००० मजदूर काम करते थे। उनमें से लगभग ४० प्रतिशत लोग ३० वर्ष से कम उम्र के थे। पारिश्रमिक वरिष्ठता अथवा उम्र के अनुसार नहीं, बल्कि कार्य करने की क्षमता के अनुसार दिया जाता था। हमें बताया गया कि फैक्टरी में काम करनेवालों का पारिश्रमिक औसतन ११८० रूबल था। न्यूनतम मजदूरी ६०० से ६५० रूबल थी, अधिकतम मजदूरी की सही दर हमें नहीं बताई गई। मजदूरों को पहले दो वर्ष प्रशिक्षण-संस्थाओं में बिताने पड़ते हैं। ये प्रशिक्षण-संस्थाएं फैक्टरी के ही अंतर्गत चलती हैं और यहां मजदूरों को मुफ्त खाना-कपड़ा दिया जाता है। सामान्यतः १६ वर्ष की उम्र से ही लड़के इन प्रशिक्षण-विद्यालयों में भर्ती हो जाते हैं। उच्च तकनीकी शिक्षा पाने के लिए वे शाम की कक्षाओं में जाते हैं। जो विद्यार्थी काम करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं, उन्हें छुट्टी आदि की सब सुविधाएं

दी जाती हैं। फैक्टरी की ओर से शिक्षा भी मुफ्त दी जाती है। मजदूर और उनके बच्चे अलग-अलग ग्रीष्मकालीन शिविरों में जा सकते हैं। आठ वर्ष तक के बच्चे किंडरगार्टन विद्यालयों में जाते हैं। एक छोटा क्रीड़ांगन भी उनके पास है और वे अब एक नये भवन का निर्माण करने जा रहे हैं, जिसका नाम होगा 'संस्कृति-भवन'। इस भवन पर लगभग १२० लाख रूबल लागत आयगी। युवक मजदूर अपने खाली समय में इस भवन के निर्माण में सहायता करेंगे।

फैक्टरी की ओर से रहने की जो सुविधा दी जाती है, वह सारे मजदूरों को उपलब्ध नहीं है। लेकिन उनके लिए अधिकाधिक मकान बनाये जा रहे हैं। हमें बताया गया कि गत महायुद्ध में लेनिनग्राद में रहने की लगभग ४० प्रतिशत जगह नष्ट हो गई थी और इसीलिए वहां मकानों की इतनी कमी है। लगभग एक-तिहाई मजदूरों को फैक्टरी की ओर से मकान मिल रहे हैं। काम करनेवाले श्रमिकों में लगभग आधी स्त्रियां थीं।

जब हमने यह कारखाना भीतर से देखा तो सच पूछिये तो मुझपर कोई बहुत अच्छा असर नहीं पड़ा। प्रबन्ध अच्छा नहीं था, तमाम चीजें अस्त-व्यस्त पड़ी थीं। गन्दगी और कचरा भी काफी था। जब मैंने सुना कि इस कारखाने को उत्पादन-कुशलता पर 'आर्डर ऑव लेनिन' पुरस्कार मिला है तो मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे लगा कि कुल मिलाकर कारखाने का संचालन-प्रबन्ध अच्छी तरह नहीं हो रहा है और उसमें जरूरत से अधिक मजदूर तथा कर्मचारी काम कर रहे हैं।

हममें से अधिकांश तो होटल लौट गये। दो सदस्य कारखाने के मजदूरों के साथ कैंटीन में खाना खाने के लिए पीछे रह गये। उन्होंने हमें बताया कि वहां उन्होंने औरतो का बहुत कठिन परिश्रम करते हुए पाया। साठ वर्ष की एक वृद्धा भी काम कर रही थी, यद्यपि हमें कहा गया था कि पुरुषों को ५६ वर्ष की उम्र में और स्त्रियों को ५० वर्ष की उम्र में काम से मुक्त कर दिया जाता है। मजदूर यह जानने के लिए बड़े

उत्सुक थे कि भारत में मजदूरों की स्थिति क्या है तथा उन्हें क्या मजदूरी दी जाती है ? उन्होंने यह भी पूछा कि क्या स्त्रियां भी कारखानों में काम करती हैं ? भारत में उच्चतम और निम्नतम वेतनों में कितना अंतर है ? बढ़ते हुए आयकर, उच्चतम आयपर लगाया गया अतिरिक्त-कर, मृत्यु-कर, व्यय-कर तथा संपत्ति-कर की कल्पना भी उन्हें अच्छी लगी ।

याल्टा, २४ जून

लेनिनग्राद में चार दिन हमने बड़े अच्छे बिताये और फिर क्रीमिया के लिए हवाई जहाज से निकले । सफर लम्बा और थकानेवाला रहा, शायद इस कारण कि हमारा हवाई जहाज मिन्स्क, कीव और नेप्रोपेत्रोवस्क रुकता हुआ गया था ।

सिफरोपोल हवाई अड्डे से हमें चार बड़ी-बड़ी कारों में सीधे याल्टा ले जाया गया । समुद्र-तट पर यह क्रीमिया का प्रसिद्ध स्वास्थ्य-लाभ का स्थान है । रास्ते में हम लोग आलूस्था पायनियर कैंप पर रुके । यहां पर यंग पायनियर 'कैंप फायर' के लिए इकट्ठा हुए थे । इससे हमें छोटे-छोटे खुशमिजाज बच्चों के साथ मिलने और यात्रा की थकावट मिटाने का अवसर मिल गया । वहां से रवाना होकर लगभग आधी रात को हम याल्टा पहुंचे ।

याल्टा, २५ जून

कल की यात्रा में काफी थकावट आ गई थी । काले समुद्र के किनारे यह स्थान बड़ा सुन्दर व स्वास्थ्यकर है । हमें रात को काफी विश्रान्ति मिली । नींद बहुत अच्छी आई । नाश्ता करके लगभग ग्यारह बजे हमें आरटेक पायानियर कैंप पर लेजाया गया । यहां सब बच्चों ने हर्ष-ध्वनि के साथ हमारा स्वागत किया । फूलों और गुलदस्तों की हमपर खूब बौछारें हुईं । लगभग पूरा दिन इस कैंप में रहे ।

शाम को 'बोटेनिकल गार्डन' देखने गये। यहां के लोग भारतीयों और हमारे प्रधानमंत्री को बहुत चाहते हैं। वे हमसे बातें करने को बहुत उत्सुक रहते हैं। भाषा की कठिनाई उनकी इस उत्सुकता को नहीं दबा पाती। शाम को खाने के बाद हम एक मनोरंजन कार्यक्रम देखने गये। सारा हाल झाड़-फानूसों और गुब्बारों से सजा हुआ था। जैसे ही प्रबन्धकों ने हमें देखा, वे हमें मंच पर ले गये और एक-एक करके हमारा परिचय कराया गया। लोगों ने तालियां बजाकर, फूलों के गुलदस्ते भेंट करके हमारा स्वागत किया। उपस्थित महिलाओं ने हमसे नाच करने की ज़िद की। हममें से कोई नृत्य करना नहीं जानता था। लेकिन सारा वातावरण इतना खुश और आनन्दमय था कि जब महिलाओं ने हमें नाच करने के लिए विवश कर दिया तो हम एक-एक करके उठे और उनके साथ नाचने लगे। यह पूरी शाम बहुत आनन्द से बीती।

याल्टा, २७ जून

क्रीमिया में यह हमारी अन्तिम रात्रि है। काले समुद्र के किनारे ये तमाम दिन बहुत सुन्दर बीते। मोटरबोट से मिशोव की यात्रा, बनसोस्की महल, याल्टा कांफ्रेस का स्थान अलूपका और ग्यानो, मिशा, एरिक व नाजा का साथ—सबकुछ बहुत सुखद रहा। अनेक स्थानों की सैर की और खूब समुद्र-स्नान किया। अब आगे के लम्बे सफर के लिए फिर तरोताजा हो गये। सचमुच इस यात्रा की योजना बड़े अच्छे समय पर की गई। दो हफ्ते के व्यस्त कार्यक्रम के बाद हम यहां आ गये। यहां खूब विश्राम मिला, जिसकी जरूरत भी थी। अब हम अपने शेष कार्यक्रम के लिए तैयार हो गये हैं—नये उत्साह और उमंगों को लेकर।

मैंने अपने साथियों से कहा कि हमारी यात्रा का दूसरा भाग समाप्त हो गया और अब हम तीसरे भाग में प्रवेश कर रहे हैं। अबतक हमने

अपने-आपको कठोर अनुशासन और नियंत्रण में रखा है, हम बड़े संयम से रहे, क्योंकि हम स्थानीय परिस्थितियों का, जनता का और युवकों के नेताओं का अध्ययन करना चाहते थे। हम जानना चाहते थे कि ये लोग कैसे हैं। किन्तु अब हम अधिक आजादी से रह सकते हैं। दिल पर का बोझ हटा दें और लोगों के साथ जितना घुल-मिल सकें मिलें और नये-नये मित्र बनावें। हम कल सुबह युक्रेन की राजधानी कीव के लिए रवाना होनेवाले हैं।

कीव, २८ जून

सुबह पड़ौस के एक कैंप से यंग पायनियर्स हमसे मिलने और क्रीमिया से बिदा देने के लिए आ गये। हमें इसकी कोई पूर्व-सूचना नहीं थी। नौ बजे हम अपनी लम्बी यात्रा पर रवाना हो गये। बीच में अलूस्था में आखिरी बार समुद्र-स्नान करने के लिए ज़रा रुके। समुद्र यहीं तक था। सिफरोपोल जाने के लिए यहां से चढ़ाई शुरू होती है।

भोजन करके थोड़ी ही देर बाद हवाई जहाज से हमें कीव के लिए रवाना होना था। एरिक और नाजा के साथ ये चार दिन बड़े अच्छे बीते। औरों की अपेक्षा ये दोनों बिल्कुल भिन्न थे। हमने इन्हें तथा दूसरे स्थानीय मित्रों को स्कार्फ और अन्य स्मृति-चिन्ह भेंट किये और क्रीमिया को अन्तिम नमस्कार किया। यह स्थान हमें बहुत अच्छा लगा। यह देखने में भी सुन्दर है और इसकी आबोहवा तथा लोग भी अच्छे हैं। हमारे साथ उनका बड़ा स्नेह हो गया था। सिफरोपोल से हम ३.५५ पर हवाई जहाज से रवाना हुए और शाम को ६.४१ पर कीव आ गये। रास्ते में हमारा हवाई जहाज थोड़ी देर के लिए निकोलाई में रुका।

कीव के हवाई अड्डे पर हमें कहा गया कि स्थानीय रेडियो के लिए हम कुछ कहें। वहांपर मैंने कहा, "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की युवक

शाखा की तरफ से हम लोग यहां आये हैं। कांग्रेस हमारे लोकप्रिय नेता जवाहरलालजी की संस्था है। हम सात सदस्य देश के भिन्न-भिन्न भागों से आये हैं। आपके देश में आये हमें लगभग सत्रह दिन हो गये। हम जहां-जहां भी गये, हमने देखा कि हमारे देश और हमारे प्रधानमंत्री के प्रति यहां के लोगों में बहुत प्रेम है। कीव में हम छः दिन रुकेंगे। युक्रेन के बारे में हमने बहुत-कुछ सुना है। हमें खुशी है कि यह सब हम अब अपनी आंखों से देखेंगे। कल पहला सोवियत युवक-दिवस है। हमें प्रसन्नता है कि इस उत्सव में हम आपके साथ सम्मिलित हो सकेंगे और भारत के युवकों की शुभकामनाएं सोवियत रूस के युवकों को पहुंचा सकेंगे। इस प्रेमपूर्ण स्वागत के लिए हम आपके कृतज्ञ हैं।

"खुले दिल-दिमाग से हम आपके देश के युवकों की प्रवृत्तियों का अध्ययन कर रहे हैं। स्वदेश लौटने पर वहां के युवकों को हम बतायेंगे कि सोवियत रूस के युवक अपने देश के नवनिर्माण में कितना सक्रिय भाग ले रहे हैं। आपके आतिथ्य के लिए एक बार पुनः धन्यवाद।"

रात्रि के भोजन के बाद हमें 'सिनेमा' दिखाने के लिए ले जाया गया। फिल्म-कला में यह एक नया प्रयोग है।

कीव, ३० जून

कल दोपहर तक शहर के दर्शनीय स्थल देखे। फिर रूस के प्रथम युवक-दिवस में भाग लिया। यह सारा अनुभव बहुत आनन्दमय रहा। आज सुबह हम बच्चों की कृषि-संस्था देखने गये और दोपहर में हमें भूगर्भ-शास्त्र की शिक्षा पानेवाले यंग पायनियर कैंप पर ले जाया गया। वहीं हमने भोजन भी किया। शाम तक वहीं रहे। बच्चों के साथ उनकी प्रवृत्तियों को देखने में सारा दिन बहुत आनन्द के साथ बीता।

रात को मैं ज़रा जल्दी सो गया। अन्य मित्र सर्कस का खेल देखने चले गए। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि सर्कस बहुत अच्छा था। सर्कस के साथ जो जादू के खेल दिखाये गए, उनकी उन्होंने बहुत प्रशंसा

की। हाथ की सफाई आश्चर्यजनक थी और यही तो इस तरह के खेलों की खूबी है। खेलों के बताने का ढंग भी बड़ा आकर्षक था। उन्होंने कहा कि मैंने एक बहुत बढ़िया अवसर खो दिया। बड़े ऊंचे दर्जे का खेल था।

लोगों को यहां अपने माता-पिता के नाम या वंश का अभिमान तो क्या, ख्याल तक नहीं है। अपने कुल का नाम लेने में उन्हें कुछ भी गौरव नहीं मालूम होता। यदि एकदम साधारण कुल में उनका जन्म हुआ है तो इसका उन्हें शर्म-संकोच भी नहीं है। उनके लिए असली चीज़ तो है स्वयं अपना काम और उसमें प्राप्त की गई सफलता। मेरे लिए यह एक नई बात थी और मुझे यह अच्छी लगी। हमारे एक रूसी मित्र के उपनाम का अर्थ होता था—'घुंघराले बालवाला'। सामान्य चर्चा में बगैर किसी संकोच के सहज भाव से उसने हमें बताया कि उसका यह नाम कैसे पड़ा। उसके दादा एक अवैध संतान थे और हमारे इस मित्र को भी अपने माता-पिता के कुल का नाम मालूम नहीं था। एक बार जब वह किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी के लिए गया, तो वहां के अधिकारी ने औरों की भांति इससे भी अपने कुल का नाम पूछा। पर वह तो कुल का नाम जानता ही नहीं था। इसलिए उसने अधिकारी से कह दिया कि अपने जन्म के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता। अधिकारी ने भी इसकी कोई परवा नहीं की और कहा कि तुम्हारे बाल बड़े सुन्दर और घुघराले हैं, अतः हम तुम्हें 'घुंघराले बालवाला' ही कहेंगे।

सचमुच वहां के लोगों ने किसी व्यक्ति को उसके कुल के आधार पर छोटा या बड़ा समझना छोड़ दिया है। किसी भी व्यक्ति को यहां मान्यता उसी समय मिलती है जब वह स्वयं अपने पराक्रम से कोई बड़ा काम करता है। लेकिन दूसरी तरफ बहुत छोटी-छोटी और साधारण बातों की भी वहां बड़ी तारीफ की जाती है। राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना का अतिरेक कर दिया गया है। छोटी-से-छोटी बातों की सार्वजनिक रूप से चर्चा होती है और वे अखबारों में बड़ी-बड़ी सुर्खियों में छापी

जाती हैं। उपाधियां दी जाती हैं। खेल-कूद, नाच, नाटक, साहित्य आदि में भी यदि कोई कुछ नाम पैदा कर लेता है तो उसे तत्काल ही 'आदर्श व्यक्ति' बना दिया जाता है। उसकी आय भी एकाएक बेहद बढ़ जाती है तथा राष्ट्र में उसकी मान्यता हो जाती है। एक नवयुवक के लिए यह बहुत बड़ी बात है। इससे उसे और भी बड़े काम करने का प्रोत्साहन मिलता है। परन्तु दुर्भाग्य की बात यही है कि सारी सुविधा केवल उन्हींको मिलती हैं, जो साम्यवादी दल के सदस्य हैं। सोवियत रूस में सर्वत्र यही होता है।

मेरा विचार है कि हमें इस विषय में सोवियत रूस से काफी सबक लेना चाहिए। हां, उनके कमियों को छोड़कर। यदि अपने युवकों की सफलता पर उन्हें हम ही शाबाशी नहीं देंगे तो और कौन देगा ?

कीव, १ जुलाई

नये महीने का पहला दिन हमने कीव से ३६ मील पर लुबरत्से के एक सामूहिक खेत पर बिताया। अध्यक्ष ने फार्म की सारी प्रवृत्तियों की जानकारी हमें विस्तार के साथ दी।

भोजन के बाद हमें तुरन्त ही शहर के लिए रवाना होना पड़ा, क्योंकि ४.१५ बजे युक्रेन के प्रथम योजनामन्त्री श्री बोरोन्स्की से हमारी मुलाकात थी। समय पर पहुंचना था। कई विवादास्पद विषयों पर उनसे हमारी बड़ी दिलचस्प चर्चा हुई।

सच पूछिये तो यह मुलाकात हमारे लिए खासतौर पर रक्खी गई थी, क्योंकि हमारी बड़ी इच्छा थी कि सोवियत संघ की वर्तमान स्थिति और उसकी आर्थिक नीति के बारे में हम किसी अधिकारी व्यक्ति से खुलकर चर्चा कर सकें। इसलिए स्वभावतः हमारी यात्रा के कार्यक्रमों में यह एक महत्व की चीज थी। हमें बड़ी खुशी हुई कि श्री बोरोन्स्की से मिलने का हमें अवसर मिला।

सबसे पहले हमने उनसे पूछा कि प्रधानमन्त्री श्री ख्रुश्चोव की

विकेन्द्रीकरण की नीति के बारे में आपकी क्या राय है ? उन्होंने कहा, "केन्द्रीय सरकार के आधीन तीन प्रकार के उद्योग हैं। इनको छोड़कर शेष सारे उद्योगों का संचालन गणराज्यों की सरकारें करती हैं। बड़े उद्योगों का संचालन केन्द्र करता है और मध्यम श्रेणी के तथा छोटे उद्योग गणराज्यां के मातहत हैं। वास्तव में विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया शुरू से ही जारी रही है। परन्तु अब गणराज्यों ने केन्द्र से और भी अधिक अधिकार प्राप्त कर लिये हैं। क्रान्ति के तुरन्त बाद हमारे यहां वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की बहुत कमी थी, इसलिए विवश होकर हमें हर चीज का केन्द्रीकरण करना पड़ा। परन्तु अब तो बहुत वैज्ञानिक हो गये हैं। इसलिए सभी राज्य अपने-अपने उद्योगों का संचालन स्वतन्त्र रूप से कर सकते हैं। प्रारम्भ में उद्योगों के विशेषज्ञों को एक ही जगह से निदर्शन देना पड़ता था। दिकेन्द्रीकरण के पहले हर देश को ऐसा ही करना पड़ता है। यह तो हम पहले ही जानते थे कि विकेन्द्रीकरण लाभदायक होता है।

"प्रारम्भ में ४० प्रतिशत उद्योग राज्यों के मातहत थे। अब यह संख्या ९० प्रतिशत हो गई है। कौन-सा प्रदेश क्या चीज कितनी मात्रा में पैदा करे, इसका निर्णय केन्द्रीय सरकार करती है। केन्द्र ने निश्चय किया है कि राष्ट्र के लिए आवश्यक वस्तुओं में से ४०९ वस्तुओं का उत्पादन प्रत्येक राज्य करे। साथ ही केन्द्र ने यह भी निर्धारित कर दिया है कि कौन-सा प्रदेश कौन-सी वस्तु कितना मात्रा में उत्पादित करेगा। ये चीजें इसलिए चुनी गईं कि इनकी जरूरत देश के सभी भागों में होती है।

"केन्द्र के योजना-आयोग में प्रत्येक गणराज्य के प्रतिनिधि होते हैं। वे आयोग को बताते रहते हैं कि उनके राज्य में कौन-सी चीजें कितनी सस्ती बन सकती हैं तथा उनके राज्य की क्या आवश्यकताएं हैं। प्रत्येक राज्य की आवश्यकताओं के आधार पर केन्द्र निश्चय करता है कि कौन-सी चीज कितनी मात्रा में प्रत्येक राज्य बनावे और उसमें से वह अपने पड़ौसी राज्यों को कितनी दे। फिर प्रत्येक राज्य अपनी विधान-सभा

में निश्चित करता है कि समस्त देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वह अपने राज्य में उस चीज के उत्पादन का प्रबन्ध किस प्रकार करे।

"राज्य के मन्त्री किसी कारखाने को सीधा नहीं कहते कि उसे किस वस्तु का कितना उत्पादन करना है। यह काम प्रत्येक राज्य के योजना-आयोग का है। योजना-आयोग भी प्रत्येक कारखाने की वस्तु-विशेष के उत्पादन की मात्रा निश्चित नहीं करता। वह तो केवल तमाम कारखानों को सूचना दे देता है कि राज्य के लिए वस्तु-विशेष के उत्पादन की कितनी मात्रा निर्धारित की गई है। फिर प्रत्येक कारखाने का उत्पादन क्या हो, यह कारखानों के संचालक स्वयं आपस में निश्चिय कर लेते हैं। मन्त्रालय तो केवल सामान्य नियन्त्रण रखता है। इस विकेन्द्रीकरण के कारण यह लाभ हुआ है कि इस वर्ष के पहले छः महीनों में पिछले वर्ष के उत्पादन की अपेक्षा ११ प्रतिशत की वृद्धि हुई।"

विकेन्द्रीकरण के बारे में अपने विचार की पुष्टि में श्री बोरोन्स्की ने और भी कितने ही उदाहरण दिये।

हमें कहा गया कि इससे पहले भी विभिन्न राज्यों पर किसी प्रकार का दबाव नहीं था। सोवियत संघ स्वेच्छा से बनाया गया संघ है। इसमें सब राज्य स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी खुशी से शामिल हुए है। वे जिन नीतियों को चाहें अपना सकते हैं।

हमें यह स्पष्ट रूप से दिख रहा था कि शासनाधिकारी प्रधान मन्त्री ख्रुश्चोव का बड़ा आदर करते हैं। परन्तु वहां लोगों ने इस बात को बार-बार दुहराया कि विकेन्द्रीकरण केवल इसलिए नहीं जारी किया गया कि श्री ख्रुश्चोव ऐसा चाहते थे, बल्कि इसलिए कि वह देश के हित में था। यह कोई केवल उनकी अपनी व्यक्तिगत नीति नहीं है, जैसाकि सारे संसार में कहा जा रहा है। बीसवीं कांग्रेस में इसपर खूब विचार हुआ और तब यह निश्चिय किया गया।

हमारे मित्र श्री मित्तल के पूछने पर श्री बोरोन्स्की ने 'व्यक्ति-पूजा'

के सम्बन्ध में भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि व्यक्ति-पूजा का कारण यह नहीं था कि स्तालिन प्रधान मन्त्री और पार्टी के सचिव दोनों थे। यों तो लेनिन भी एक साथ दोनों पदों पर रहे थे। लेकिन उनसे तो देश की सेवा ही हुई। परन्तु जब स्तालिन इन दोनों पदों पर काम करने लगे तब कई अनुचित गलतियां घुस आईं। गलतियां इसलिए हुई कि हर बात केवल एक व्यक्ति के हाथ में चली गई और वह व्यक्ति थे स्तालिन। जो वह कहते थे, वही होता था। परन्तु जब ख़ुश्चोव शासन और दल के मुखिया बने तो उन्होंने इस भूल को सुधारने का निश्चय किया और तेजी से काम करने लगे। वह कोई बात अकेले तय नहीं करते। केन्द्रीय समिति भी महत्वपूर्ण निर्णय अकेले नहीं करती। सारी बातों का निर्णय बहुत-से लोगों की राय लेकर लिया जाता है।

अब उन्हें अपने अनुभवों से यह विश्वास हो गया है कि यद्यपि ख़ुश्चोव दल और शासन दोनों के नेता हैं, फिर भी अब 'व्यक्ति-पूजा' की पुनरावृत्ति का खतरा नहीं है। जब किसी महत्वपूर्ण कार्यक्रम पर अमल करना होता है, उस समय एक ऐसे नेता की आवश्यकता होती है, जिसका दृष्टिकोण स्पष्ट हो और जिसपर जनता का पूरा-पूरा विश्वास हो। श्री बोरोन्स्की ने कहा कि प्रधानमन्त्री ख़ुश्चोव ऐसे ही पुरुष हैं। इस बात को आप लोग तो अच्छी तरह समझ सकते हैं, जो जानते हैं कि भारत में महात्मा गांधी और श्री नेहरू का क्या स्थान है। देश के नेताओं को जनता से दूर नहीं पड़ जाना चाहिए।

श्री मनुभाई ने श्री बोरोन्स्की से पूछा कि सोवियत संघ में अब भी इतनी असमानता क्यों है? वेतन ३००-४०० रूबल मासिक से लेकर ३०,००० रूबल प्रति माह तक है। इसके उत्तर में बोरोन्स्की ने बताया कि २५,००० या ३०,००० रूबल पानेवाले व्यक्ति अधिक नहीं हैं। केवल कुछ वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को ही इतना वेतन दिया जाता है। परन्तु वे लोग बहुत ही महत्त्वपूर्ण निर्माण के काम में लगे हुए हैं। दरअसल उन्हें भी निश्चित बंधा हुआ वेतन नहीं मिलता। यह

उनके काम के परिमाण पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि रूस की वर्त्तमान स्थिति में सबको समान वेतन देना संभव नहीं है। व्यक्ति को उसके काम के अनुसार मजदूरी दी जानी चाहिए। जो अधिक मेहनत करता है या अधिक उत्पादन करता है, उसे अधिक ही मिलना चाहिए। फिर देश के सब भागों में अभी औद्योगिक प्रगति समान रूप से नहीं हुई है। जो भाग पिछड़े हुए हैं, वहां तीव्र प्रगति की आवश्यकता है। कोयले के उद्योग में औसत मजदूरी काफी अधिक है। कुछ लोगों को ५००० या ६००० रूबल प्रति माह तक मिलता है। मतलब, मजदूरी का मान इस बात पर भी निर्भर करता है कि मजदूर किस उद्योग में काम करता है।

उदाहरण के लिए एक बड़े कारखाने के संचालक को ३००० से लेकर ४००० रूबल तक वेतन दिया जाता है। यह कारखाना इतना बड़ा होता है कि वह भारत के इस्पात के कुल उत्पादन का तिगुना उत्पादन करता है। साधारण मन्त्री का वेतन ५००० रूबल होता है। वेतन का स्तर नीचा है और इससे उन्हें संतोष नहीं है। वे इसे अधिकाधिक बढ़ाना चाहते हैं। श्री ख़ुश्चोव कहते हैं कि कम वेतन पाने-वालों का वेतन बढ़ाना भी उनका एक ध्येय है। श्री बोरोन्स्की ने हमें यह भी कहा कि युक्रेन की संसद का एक सदस्य एक छोटा-सा बिजली-घर खरीदकर उसे अपने गांव पर ले जाना चाहता था। वह इसके लिए एक लाख रूबल देने को तैयार था।

हमने श्री बोरोन्स्की से यह भी पूछा कि रूबल की विनिमय-दरों में जगह-जगह इतना अंतर क्यों है ? शासन ने निश्चय कर लिया है कि एक भारतीय रुपये की विनिमय दर १.२ रूबल होगी। परन्तु वे विदेशी यात्रियों को एक रुपये के बदले में दो रूबल देते हैं, जबकि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा-बाजार में तो एक रूबल की कीमत चार या पांच आने मात्र है। श्री बोरोन्स्की ने स्पष्ट स्वीकार कर लिया कि इस विषय में वे कुछ भी नहीं जानते। यह विषय केन्द्र से सम्बन्ध रखता है। वह तो केवल एक राज्य के योजनामन्त्री ही हैं। प्रारम्भ में तो जो प्रश्न

उनके विषय से सम्बन्धित नहीं थे, उनका उत्तर देने में वह हिचकिचाते थे। परन्तु बाद में वह ज़रा खुल गये। कहने लगे कि हमारे सब प्रश्नों का उत्तर देने का वह यत्न करेंगे।

बातचीत लगभग सवा दो घण्टे चली। कुल मिलाकर वह बहुत दिलचस्प रही और प्रतिनिधि-मण्डल को काफी नई जानकारी मिली।

बातचीत के बाद ही हमें कीव के टेलीविजन स्टेशन पर ले जाया गया। स्टेशन दिखाने के बाद हमें टेलीविजन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए निमंत्रित किया गया। पालित ने बंगला में हमारी सोवियत रूस की यात्रा के अनुभव सुनाये, जिसका रूसी में वाक्यश: अनुवाद भी साथ-ही-साथ सुना दिया गया। भारत की एक महत्त्वपूर्ण प्रान्तीय भाषा में और सो भी उनके सुपरिचित कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भाषा में बोलने की हमारी सूझपर सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। होटल पर हम लौटे तब एक और कार्यक्रम हमारी राह देख रहा था। स्थानीय फिल्म यूनिट ने हमारे प्रतिनिधि-मण्डल की एक फिल्म ली और मेरी एक वार्ता को भी रेकार्ड किया।

मास्को, २ जुलाई

सुबह हम बिजली के यंत्र बनाने का एक कारखाना देखने गये। यहां कारखाने के संचालक कामरेड वोलिक और स्थानीय कोमसोमोल के मंत्री कामरेड गार्गी स्टेब्ली ने हमारा स्वागत किया और हमें सारा कारखाना दिखाया। कारखाने के सम्बन्ध में जो जानकारी हमें दी गई, उसके अनुसार वहां में ३००० कर्मचारी काम करते थे, जिनमें से साठ प्रतिशत स्त्रियां थी। न्यूनतम वेतन ६५० रूबल था और अधिकतम ३५०० रूबल। इंजीनियर का निम्नतम वेतन १००० रूबल और उच्चतम वेतन ३००० रूबल था। काम करनेवालों में लगभग आधे जवान थे और तीन-चौथाई से कुछ ऊपर उच्च शिक्षा-प्राप्त थे। नये प्रकार के

यन्त्रों के उपयोग और उसकी वजह से कर्मचारियों की संख्या में कमी करने से अब कारखाने को १० लाख रूबल का लाभ होने लगा था। इस बचत में से वे अपने कर्मचारियों के लिए मकान बनवाने का विचार कर रहे थे। कारखाने की ओर से ४० प्रतिशत कर्मचारियों को तो यह सुविधा पहले ही से मिल चुकी है।

कारखाना भिन्न-भिन्न प्रकार के १२० औजार बनाता है। अधिकांश कर्मचारी अपने-अपने काम के विशेषज्ञ हैं। मजदूर यान्त्रिक दक्षता-प्राप्त हों, इसपर खास ध्यान रक्खा जाता है। कारखाने की ओर से एक तकनीक-प्रशिक्षण का स्कूल भी चलता है, जिसके वर्ग दिन में और शाम को भी लगते हैं। दिन के वर्गों में २०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं और शाम के वर्गों में १५०। कारखाने के कर्मचारियों में से ७०० व्यक्ति या तो फैक्टरी के स्कूलों में ही अथवा बाहर के स्कूलों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कारखाना साफ-सुथरा था। प्रबन्ध भी अच्छा था। यहां मुझे बिजली का एक शेवर (हजामत बनाने का यंत्र) भेंट किया गया, जो इसी कारखाने में बनाया गया है। यह यूरोप के अन्य देशों में बने यंत्रों की तुलना में निम्न कोटि का था।

हम जब यह सब देख रहे थे, तब वहीं काम करनेवाली एक स्त्री ने हमें अपने मकान पर चलने के लिए निमंत्रित किया। हमें ऐसा लगा कि वह स्वेच्छा से ही बुला रही है। उसने कहा कि हमारे यहां चलने से उसे तथा उसकी बूढ़ी मां को बहुत खुशी होगी। सो हम गये। उसने और उसकी मां ने हमारा बड़ा अच्छा स्वागत किया। परन्तु जैसे ही हमने उसके मकान के अन्दर कदम रक्खा, हम समझ गये कि यह तो पहले से ही तय किया गया कार्यक्रम था। मकान को विशेषरूप से, बल्कि कुछ अधिक ही सजाया गया था। फल, पेय और अनेक दूसरी चीजें बड़ी मात्रा में हमारे लिए तैयार रक्खी हुई थीं।

कारखाने का क्लब-हाउस भी हमें दिखाया गया, जिसे वे 'सांस्कृतिक-

सदन' कहते हैं। यह मकान अच्छा था। अनेक प्रकार के खेलों और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की यहां सुविधाएं थीं।

दोपहर को ही हमें मास्को के लिए रवाना होना था।

हमारा कीव का निवास बड़ा अच्छा रहा। हमें यहां खूब आनंद आया। कई दिलचस्प बातें हुई, जिनकी सुखद याद हमें सदा बनी रहेगी। युवक-दिवस और हमारा उसमें शरीक होना स्वयं हमारे लिए एक बड़ी घटना थी। दूसरे स्थानों की अपेक्षा यहां के लोग भी बहुत स्नेही लगे। इसका कारण शायद यह भी हो कि इससे पहले उन्हें भारतीयों से मिलने का अधिक अवसर नहीं मिला था। पूरनसिंह 'आज़ाद' अपनी दाढ़ी और साफे के कारण एक जबरदस्त आकर्षण बन गये। होटल में खाना खाते समय भी लोग उन्हें अकेला नहीं छोड़ते। हमें तो लगा मानो वह एक फिल्मी अभिनेता ही बन गये हों। वह हरदम लोगों से घिरे रहते।

जिस होटल में हम ठहरे थे, वह अच्छा और आरामदेह था। खाना भी संतोषजनक था। कामरेड लुदमिला, तोलाई, नश्चोली व अन्य स्थानीय मित्रों ने हमारी देखभाल खूब अच्छी तरह से की थी। लुदमिला बहुत कार्य-कुशल बहन थीं और उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उन्होंने बड़ी सावधानी और तत्परता से अपना काम संभाला। यह सब करते हुए भी वह सबसे अलग-सी ही रहती थीं। जो भी कुछ करतीं, उसमें किसी प्रकार का व्यक्तिगत लगाव नजर नहीं आता। हवाई जहाज पर चढ़ने से पहले हमने उन सब मित्रों को धन्यवाद दिया, जो हमें बिदा करने के लिए आये थे। भारत से हम जो स्कार्फ, रेशमी रूमाल आदि लाये थे, वे हमने उन्हें भेंट किये। उन्होंने हमारी भावनाओं और इन चीजों की सराहना की। जब हमने लुदमिला को सही भारतीय ढंग से अपनी बहन कहकर संबोधित किया तो उनपर भी इसका गहरा असर पड़ा। हमें उनसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। हम तो समझ रहे थे कि वह एक रूखे मिजाज की व अपने काम से काम रखने-

वाली महिला हैं। उनपर ऐसे भावनात्मक विचारों का क्या असर होगा ?

मास्को के हवाई अड्डे पर कामरेड पोपोव और निकिलाई ने हमारा स्वागत किया। पोपोव से दुबारा मिलकर हमें खुशी हुई। वह बहुत ही सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। खिलाड़ी की-सी उनकी वृत्ति है और अपने मातहत काम करनेवालों के साथ भी वह बराबरी का सा बर्ताव करते हैं। रूस के युवक-संगठन में इतने ऊंचे पद पर पहुंच जानेवाले व्यक्ति के लिए यह एक असाधारण बात ही कही जायगी।

जब हम पीकिंग होटल पहुंचे तो हमें लगा कि इतनी लम्बी और थका देनेवाली यात्रा के बाद हम फिर अपनी परिचित जगह पर आ गये हैं।

मास्को, ३ जुलाई

सुबह सोवियत युवक-समिति के नेताओं तथा अन्य युवक नेताओं से बातचीत और विचार-विनिमय हुआ।

बैठक समाप्त होते ही हम भोजन के लिए भागे-भागे होटल पर गये, क्योंकि तीन बजे सोवियत प्रधानमंत्री से क्रेमलिन पर हमारी मुलाकात थी और इसलिए २-३० बजे हमें होटल से रवाना हो ही जाना था। हमें इस मुलाकात की बिलकुल भी आशा नहीं थीं। हमारी रूसी यात्रा में यह एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना है, जिससे हमें बहुत आनन्द हुआ और वह कभी भुलाई नहीं जा सकेगी।

शाम को हमने विशाल लेनिन स्टेडियम में एक बड़ा अच्छा फुट-बाल का मैच देखा। यह एक स्थानीय टीम और एक फ्रैंच टीम के बीच हुआ था, जो खासतौर पर इसीके लिए रूस आई थी।

मास्को, ४ जुलाई

आज अपेक्षाकृत कुछ कम काम था, इसलिए हम बाजार के लिए

निकल गये। प्रतिनिधियों को घूमने के लिए अकेले छोड़ दिया गया, ताकि वे जहां चाहें घूमे-घामें।

हमारे राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन ने हमें आज भोजन के लिए निमन्त्रित किया था। उनसे मिलने का यह पहला ही मौका था, क्योंकि पिछली बार जब हम मास्को में थे तब वह यहां नहीं थे। उनसे मिलने पर हमें ऐसा लगा जैसे हम अपने ही घर पर हैं। उनके दफ्तर में काम करनेवाले अन्य लोगों से मिलकर भी हमें बहुत खुशी हुई। इनमें से कुछ भोजन करते समय भी हमारे साथ थे। चूंकि श्रीमती मेनन यहां नहीं थीं, इसलिए मेजबान के तौर पर हमारा आतिथ्य भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव की पत्नी श्रीमती आहूजा ने किया। उनका व्यवहार मधुर और शानदार था।

आज इतने दिनों बाद भारतीय भोजन पाकर हमें बड़ा सन्तोष हुआ। परन्तु उससे भी अधिक सन्तोष हमें अपने देश के राजदूत के विचार जानकर हुआ। हमारा शिष्टमण्डल यहांपर जिस प्रकार रहा, उससे उन्हें काफी प्रसन्नता थी। खासतौर पर इसलिए कि पिछले युवक-उत्सव के अवसर पर भारत से जो लोग आये थे, उनका बर्ताव इतना शोभाजनक नहीं रहा। हमारे राजदूत के ज्ञान और विचारों को देखकर हमें गर्व हुआ कि संसार की एक सबसे महत्वपूर्ण राजधानी में उनके जैसे व्यक्ति भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मास्को में अन्य दूतावासों के अन्य प्रतिनिधियों में उनके प्रति जो इतना आदर है, वह स्वाभाविक ही है।

विदा मांगने से पहले हमने उनसे कहा कि हम भारतीय दूतावास को टालसटाय की एक प्रतिमा भेंट करना चाहते हैं, जो लेनिनग्राद के युवकों ने हमें हमारी रूस की इस यात्रा की यादगार के रूप में भेंट में दी थी। उन्होंने इस कल्पना का स्वागत किया। उन्होंने हमारे इस सुझाव को भी मान लिया कि दूतावास के औपचारिक समारोहों में सोवियत रूस के युवक-संगठनों के नेताओं को भी वह निमन्त्रित करते

रहेंगे ।[1]

शाम को यहां के संस्कृतिक उद्यान 'गोर्की पार्क' में टहलने चले गए। वहां से लौटने के बाद कामरेड यूरापावलोव आ गये। यह युवकों के समाचार-पत्र 'सोवियत लैंड' के प्रतिनिधि हैं। अपने साथ वह एक 'टेप रेकार्डर' भी ले आये। हमारे प्रतिनिधि-मण्डल के साथ अपनी बातचीत को वह रेकार्ड करना चाहते थे। उन्होंने दस प्रश्न पूछे, जिनके हमारे शिष्टमण्डल के भिन्न-भिन्न सदस्यों ने उपयुक्त उत्तर दिये। प्रश्न ये थे—

१. सोवियत युवक-संगठनों का अध्ययन करने में आपका क्या उद्देश्य है ?

२. इस हेतु आप किन-किन स्थानों पर गये और अब कहां-कहां और जानेवाले हैं ?

३. आपने रूस के किन-किन युवक-संगठनों की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया ?

४. सोवियत रूस में इतने दिन के अपने प्रवास के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ? सबसे अधिक किस बात का आपके मन पर असर हुआ ? सोवियत रूस की किन-किन विशेष बातों से आप आकर्षित हुए ?

५. युवक-संगठनों का अध्ययन करसे के अलावा क्या आपने सोवि-

---

[1] हमारे भारत लौटने के बाद श्री मेनन का एक पत्र हमें मिला, जिसमें वह लिखते हैं—"ता० १७ जुलाई के आपके पत्र के लिए धन्यवाद। आपसे यहां मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। दुःख केवल इसी बात का है कि हम यहां एक दूसरे के साथ अधिक समय नहीं बिता सके। आपका प्रतिनिधि-मण्डल यहांपर बहुत अच्छा असर छोड़ गया है।

"रूस के युवक-नेताओं को बुलानेवाला आपका सुझाव बहुत अच्छा रहा। कल शाम को हमने उन्हें एक पार्टी में बुलाया था। वे आये भी थे और उनसे मिलकर मुझे बहुत आनन्द हुआ।"

यत रूस की. शिक्षा-पद्धति का भी कुछ अध्ययन किया ? उस बारे में आपकी क्या राय है ?

६. श्री बजाज ने कहा है कि आपके प्रतिनिधि-मण्डल ने रूस की अपनी इस यात्रा में बहुत-सी उपयोगी बातें सीखीं। ये उपयोगी बातें कौन-सी हैं ?

७. मास्को में हुए युवक-समारोह में भारत के प्रतिनिधि-मण्डल ने कहा था कि वह अपने देश लौटने पर वहां युवक-समारोह की कल्पना का प्रचार करेगा। तो भारत में आप युवक-महोत्सव कैसे मनाते हैं ? भारत के युवक आगामी युवक-महोत्सव के लिए क्या-क्या तैयारियां कर रहे हैं ? क्या श्री नेहरू ऐसे उत्सवों को पसन्द करते हैं ?

८. कल आप हमारे प्रधानमन्त्री से मिले थे। उनसे आपने क्या-क्या बात-चीत की ? इस बात-चीत का आपपर क्या असर हुआ ?

९. क्या आपकी इस रूस-यात्रा से रूस और भारत के युवकों के बीच सहयोग और मैत्री-सम्बन्ध बढ़ेंगे ? यदि हां, तो किस प्रकार ?

१०. इस मुलाकात के अन्त में आप और कुछ भी कहना चाहेंगे ?

भारत से मुझे तीन सप्ताह से कोई पत्र नहीं मिला है। पत्र भेजे ही नहीं हों, ऐसा नहीं हो सकता, इसलिए मुझे कुछ चिंता होने लगी है।[1]

प्रतिनिधि-मंडल के अन्य सदस्यों का भी यही हाल है। पत्रों के मिलने में इतनी देरी क्यों हुई, यह मेरी समझ में नहीं आया। भारत और रूस के बीच हवाई-डाक की व्यवस्था है। चिट्ठियों के आने या जाने में चार-पांच दिन से अधिक समय नहीं लगना चाहिए। इसलिए इस देरी से हमें संदेह होने लगा कि हमारी डाक की जांच हो रही होगी। हमने अपने मेजबानों से इसकी शिकायत भी की तो उनपर इसका कोई असर नहीं हुआ। अंत में मैंने टेलीफोन पर घर के लोगों से बातचीत करने का भी यत्न किया।

[1] बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी ओर से कोई पत्र नहीं मिलने के कारण मेरे घर के लोग भी इसी प्रकार चिन्तित थे।

इस बीच अखिल भारतीय कांग्रेस-समिति के कार्यालय से मुझे सूचना मिली कि किसी जरूरी काम की वजह से मुझे जल्दी-से-जल्दी सीधे भारत वापस लौट आना चाहिए। इसलिए युवक-समिति के मित्र इस प्रयत्न में लगे हैं कि मुझे पहले हवाई जहाज में जगह मिल जाय। परन्तु उन्हें पता चला है कि मुझे अभी तुरन्त जगह नहीं मिल सकती। हां, ऐन वक्त पर कोई मुसाफिर जाने का इरादा बदल दे तो बात दूसरी है। रात के दो बजे तक हम राह देखते रहे। परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में मैंने सीधे भारत जाने का विचार छोड़ दिया—प्रतिनिधि-मंडल के सदस्यों से बातचीत करके अन्त में मैंने निश्चय किया है कि मैं भी उनके साथ ताशकन्द जाऊं, वहां एक दिन रहूं और उनसे तीन-चार दिन पहले काबुल के रास्ते नई दिल्ली के लिए रवाना हो जाऊं। परन्तु कठिनाई यह है कि हफ्ते में केवल दो बार काबुल से भारत हवाई जहाज जाते हैं।

मास्को, ५ जुलाई

सुबह कोई खास काम नहीं था, इसलिए हमारे सदस्य बाजार में अन्तिम खरीददारी करने, घूमने-घामने और मित्रों से मिलने के लिए चले गए। शाम को ५.४५ बजे हमें मास्को के टेलीविजन स्टेशन पर ले जाया गया।

पूरे-के-पूरे प्रतिनिधि-मंडल को श्री शेवचेनको के साथ टेलीविजन के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए कहा गया। उन्होंने प्रेक्षकों और श्रोताओं को प्रत्येक सदस्य का परिचय दिया और मुझसे कहा कि मैं हमारी रूस-यात्रा के बारे में अपने विचार सुनाऊं। मैंने अपने विचार हिन्दी में प्रकट किये। उन्होंने वार्ता की एक प्रति पहले से ही हमसे मांग ली थी, ताकि उसका रूसी अनुवाद तैयार रहे।

मुझे बाद में बताया गया कि सामान्यतया वार्ता का स्वागत अच्छा हुआ। सच तो यह है कि मैंने रूस के बारे में अपने विचार बिलकुल सचाई के साथ किन्तु बहुत संक्षेप में सुनाने की कोशिश की थी। इनमें कुछ

बातें उनके अनुकूल थीं तो कुछ प्रतिकूल भी थीं। इसलिए उसकी प्रति-क्रिया जानकर मुझे खुशी हुई कि उन्हें मेरी स्पष्ट बातें भी अच्छी लगीं और इस बात का प्रमाण भी हमको वार्ता के तुरन्त बाद मिल गया। रूस में केवल युवकों के साठ पत्र हैं। इनके प्रधान सम्पादक मेरे पास आये और मेरी वार्ता को अपने सब पत्रों में छापने की अनुमति मांगी। मैंने अनुमति दे दी, पर केवल एक शर्त के साथ। शर्त यह कि यदि वह मेरी वार्ता छापना चाहते हैं तो पूरी-की-पूरी छापें, अन्यथा बिल्कुल नहीं छापें। उसमें काटपीट नहीं करें; क्योंकि मैं जानता था कि यदि उसमें से कुछ भाग निकाल दिया जाता है तो उसका संतुलन बिगड़ जायगा, बल्कि उसका गलत अर्थ भी लगाया जा सकता है।[1]

ताशकन्द, ६ जुलाई

हवाई अड्डे पर जाने के लिए हमें कल रात को एक बजे रवाना होना था, इसलिए हम तब तक सोये नहीं। अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहे, बातें करते रहे और रूसी मित्रों से विदा लेते रहे। परन्तु घना कुहरा होने के कारण हम समय पर नहीं निकल सके। हमारे मित्र हर आधा घंटे में हवाई जहाज के बारे में जानकारी लेते रहे और हमसे आकर कहते कि थोड़ी देर और ठहरना होगा। इस तरह राह देखते-देखते सारी रात बीत गई। हममें से कोई भी नहीं सो सका। अंत में हमारा जहाज आज सुबह सात बजे रवाना हुआ।

२४ दिन की इस दिलचस्प और मजेदार रूस-यात्रा के बाद अब हम उजबेकिस्तान की राह से भारत के लिए रवाना हो रहे थे। सारी यात्रा का कार्यक्रम बड़ा व्यस्त रहा। लगातार घूमते रहे, लोगों से मिलते रहे, अनेक स्थान देखे, वार्ताएं दीं और नये-नये अनुभव प्राप्त

---

[1] जहांतक मुझे पता है, वह वार्ता किसी भी समाचार-पत्र में नहीं छपी। इसका कारण शायद यही रहा होगा कि वे उसका केवल वही अंश छापना चाहते होंगे, जो उनके अनुकूल था। इसलिए मेरी शर्त उनको अच्छी नहीं लगी।

किये। इसी प्रकार की यात्राओं पर यूरोप के दूसरे देशों में भी मैं गया हूं। परन्तु तब मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई थी। एक तो भाषा की कोई दिक्कत नहीं थी। दूसरे, वहां के रस्मो-रिवाज समझने में भी इतनी कठिनाई नहीं हुई। रूस में हर बात अलग है। सामाजिक जीवन, रूढ़ियां राजनैतिक विचार, नियन्त्रित समाज की पद्धतियां आदि सब चीजें ऐसी हैं, जो हमारे लिए एकदम नई हैं। यह सारा-का-सारा अनुभव नया है। कितनी ही बातें देखने और सीखने की थीं। रूस में आकर हमें बड़ी खुशी हुई, परन्तु इतने सारे परिश्रम और भाग-दौड़ के बाद वापस घर को लौट रहे थे, इससे भी मन में कम आनन्द नहीं हो रहा था।

इस समय हम जेट हवाई जहाज में यात्रा कर रहे थे। जमीन छोड़ने के बाद बहुत जल्दी हम आठ-नौ मील की ऊंचाई पर पहुंच गये। उड़ान शान्त और आरामदेह थी, केवल सेवा-सुविधाएं कम थीं। इतने बड़े हवाई जहाज में केवल एक परिचारिका थी। वह बेचारी सब मुसाफिरों तक पहुंच भी नहीं पाती थी। न खाना दिया गया और न कोई पेय। हाथ वगैरह धोने के कमरे में केवल ठण्डे पानी का नल था। न साबुन का पता था न तौलिये का।

साढ़े तीन घण्टे की उड़ान के बाद हम उजबेकिस्तान की राजधानी ताशकंद पहुचे। स्थानीय समय मास्को से तीन घण्टे आगे था। इसलिए यहां ९.३० बज गयें थे। बड़ी गर्मी हो रही थी। हमें लगा मानो हम भारत में ही आ गये हैं।

कामरेड आलिम मिर्जा, जहांगीर और हसियाथ ने हवाई अड्डे पर बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया। वहीं स्थानीय कोमसोमोल पत्र के प्रतिनिधि ने भी हमसे भेंट की।

यात्रा ने हमें थका दिया था। हवाई अड्डे से हम जिस बस में बैठकर होटल जा रहे थे, वह रास्ते में दो-तीन बार बंद हो गई। गर्मी तो बहुत थी ही। इससे हमें बड़ी परेशानी हुई। इस तरह का अनुभव इस यात्रा में पहला ही था। होटल भी

बहुत अच्छा नहीं है। शायद हमें ठहराने लायक दूसरा कोई स्थान ही नहीं रहा होगा। कमरा, बिस्तर की चादर आदि भी साफ नहीं हैं। एक छोटे-से कमरे में हम चार आदमियों को ठहरा दिया गया है। इतनी गरमी है और ऊपर से असंख्य मक्खियां। बड़ी बेचैनी मालूम होती रही। हाथ-मुंह धोने का इंतजाम भी अच्छा नहीं है।

मुझे कल सुबह ही भारत के लिए रवाना होना है, इसलिए आराम के लिए भी समय नहीं है। भोजन के तुरन्त बाद दूसरे मित्र तो आराम करने लगे पर मुझे शहर दिखाने के लिए ले जाया गया। ताशकंद भारत के एक छोटे शहर जैसा ही शहर है। कच्चे, धूलभरे और गन्दे रास्ते। लोगों के मकान और कपड़े उत्तर भारत के गरीब कस्बों की याद दिलाते हैं। हम बाजार में भी गये। इसके एक हिस्से में खुला बाज़ार भी था। यहांपर लोग अपनी निजी उपज की चीजें बेच रहे थे। इन चीज़ों से जो आय होती है, वह इनकी निजी होती है।

रात को हमें एक उज़बेक संगीत-नाटिका दिखाई गई। नाम था 'रेवशन और ज़ुलमोहर'। यह नाटक हमारे देश के प्रेम-नाटकों से मिलता-जुलता था। संगीत भी परिचित-सा लगा। एक दृश्य में विवाहोत्सव दिखाया गया था। वही रंग-बिरंगे कपड़े और धूम-धाम! नाटक का कथानक एक धनिक लड़की के साथ एक गरीब कलाकार के प्रेम पर आधारित था। चूंकि वह एक नेक आदमी था, इसलिए देवता और अप्सराएं उसकी मदद के लिए आ गये और अंत में उसे अपनी प्रियतमा मिल गई।

काबुल, ७ जुलाई

मैं ग्यारह बजे भारत के लिए रवाना होनेवाला था। इसलिए हमने सुबह ही अपने प्रतिनिधि-मंडल की बैठक रख ली थी। प्रत्येक सदस्य ने खूब काम किया था और अनुशासन का परिचय दिया था, जो प्रशंसनीय था। हमारी एक खासी टीम बन गई थी। यात्रा में सबको बड़ा

आनन्द आया। रूस से जितने भी प्रतिनिधि-मंडल बाहर जाते हैं, वे बहुत सुनियोजित और अनुशासनबद्ध होते हैं। किंतु प्रजातंत्रीय देशों से यहां आनेवाले प्रतिनिधि-मंडल इतने व्यवस्थित नहीं होते। कई बार तो रूसी लोग सदस्यों में भेदभाव पैदा करके कुछको अपने पक्ष में कर लेते हैं। परन्तु हमारे प्रतिनिधि-मंडल ने बहुत शान से और मिलजुलकर काम किया। ऐसे बहुत कम विदेशी प्रतिनिधिमंडल यहा आये होंगे। कभी-कभी हमें तकलीफें भी हुईं, परन्तु हमने कभी इनकी शिकायत नहीं की। रूसी मेजबानों ने इन दोनों बातों की सराहना की। इसका भी श्रेय शिष्टमंडल के हर सदस्य को है। मैं तो कहूंगा कि इतने अच्छे साथियों का साथ मिल जाना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात थी। उन्होंने सदा खुले दिल से मेरा साथ दिया। बेशक, प्रारम्भ में जबतक हम एक दूसरे को अच्छी तरह नहीं जानने लगे थे, कुछ मामूली गलतफहमियां हुईं। परन्तु कुछ ही दिनों में हमने सब ठीक कर लिया और हम लोग एक-दूसरे से अच्छी तरह घुलमिल गये। दिन में हम चाहे कितने ही थक जाते, फिर भी दिनभर के कार्य-क्रम के बाद अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए सोने से पहले एक बार हम जरूर एकत्र हो जाते, भले ही आधी रात हो गई हो। प्रतिमा से मैंने कह दिया था कि यदि देर हो जाय और वह बैठक में न भी आये, तो कोई हर्ज नहीं। परन्तु वह भी बराबर आती रही, चाहे कितनी ही रात बीत गई हो। शुरू से आखिर तक हमने एक बात का निश्चय कर लिया था। हम कोई बात ऐसी नहीं करें या कहें जिसमें केवल व्यक्तिगत भाव प्रकट होते हों। हमारा मुख्य उद्देश्य यह था कि हम एक संगठन, बल्कि एक देश के युवकों के प्रतिनिधि बनकर यहां आये हैं। इसलिए हमारा सारा व्यवहार और बातचीत संगठन व देश को शोभा दे, ऐसी ही हो।

यह सच है कि कभी-कभी छोटी-मोटी बातों में कुछ कठिनाइयां भी पैदा हो जातीं। परन्तु कुल मिलाकर हर सदस्य ने अपना काम

बहुत अच्छी तरह किया, यद्यपि मुझे छोड़कर अन्य सबका देश के बाहर जाने का यह पहला ही मौका था। इसलिए उनसे तथा रूसी मित्रों से बिदा मांगने का समय आया तब मेरा दिल भर आया और दु:ख भी हुआ।

हम जितने भी रूसियों से मिले उन सबमें हमारे हिन्दी दुभाषिये मिशा हमारे सबसे अधिक निकटस्थ हो गये थे। वह एक असाधारण व्यक्ति हैं। कट्टर साम्यवादी हैं। हमारे और उनके विचारों में काफी अन्तर था। फिर भी हमारे प्रति उनका व्यवहार पूरा मित्रता का रहा। उन्होंने अपना काम बहुत अच्छी तरह किया। वह बड़े बुद्धिमान हैं। हर चीज की उनकी पकड़ गहरी है। एक दूसरे के विचारों पर प्रभाव डालने का प्रयत्न करने का तो सवाल ही नहीं था। फिर भी मिशा ने हमारे विचार समझना शुरू कर दिया था। हमारे प्रति उनके व्यवहार में योग्यता, शिष्टता और राजनीतिक-कुशलता पूरी-पूरी प्रकट होती थी। कुल मिलाकर उनका-हमारा साथ अच्छा रहा और खासतौर पर मेरे लिए तो मददगार भी रहा। कुछ दिन बाद तो हम शिष्टाचार को छोड़कर खुलकर भी बातें करने लग गये थे। वह संगठनकर्त्ताओं की कठिनाइयां बड़ी स्पष्टता से बताते। मैं भी अपने विचार निःसंकोच बता दिया करता। औपचारिक रूप से इन बातों पर चर्चा करना संभव नहीं था। हिन्दी के अलावा उर्दू, फारसी आदि का भी उन्हें अच्छा ज्ञान था। बल्कि सच तो यह है कि वह हममें से कुछ लोगों से अधिक अच्छी हिन्दी जानते थे। मुहावरों की बारीकियों से वह अच्छी तरह परिचित थे। हिन्दी के कुछ गीत भी वह जानते थे और उनको ठीक स्वरों में गा भी सकते थे। बहुत परिश्रमी थे। जब हम चले तो उनका दिल भर आया और अपने प्रेम की स्मृति के रूप में व्यक्तिगत रूप से मुझे एक भेंट भी दी।

प्रतिनिधि-मण्डल से विदा लेने से पहले मैंने श्री सतपाल मित्तल को अपने बाद हमारे प्रतिनिधि-मण्डल का नेता नियुक्त कर दिया। वह

युवक-कांग्रेस की राष्ट्रीय कौंसिल के एक सदस्य हैं। प्रतिनिधि-मण्डल के सब सदस्यों ने उनके नेतृत्व में उसी प्रकार काम करने का वचन दिया, जिस प्रकार वे मेरे साथ करते रहे।

वहां जब हम भिन्न-भिन्न संस्थाएं देखने जाते और खासतौर पर 'ओरिएन्टल स्टडीज' की संस्थाएं देखने गये, तब विनोबा और भूदान-आन्दोलन के बारे में भी अवश्य कुछ कहते। इस आन्दोलन के बारे में हमने कुछ पुस्तिकाएं भी तैयार की थीं, जो हमने खूब वितरित कीं। एक बार हमारे प्रतिनिधि-मंडल के कुछ सदस्यों को ऐसा लगा कि हमें गांधीजी और भूदान-आन्दोलन की बजाय अपने संगठन के बारे में अधिक कहना चाहिए। मैंने उनसे कहा कि जहांतक युवक-संगठन और उसके कामों का सम्बन्ध है, रूस हमसे बहुत आगे है। इस विषय में हम उसे कोई नई बात नहीं दे सकते। आखिर हम रूस में अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, इसलिए एक देश की हैसियत से हमारे पास उन्हें देने के लिए जो कुछ हो, वही हमें उनके सामने रखना चाहिए। इसीलिए मैं गांधीजी के आदर्शों और सिद्धान्तों पर अधिक ज़ोर देता था। मेरी इस बात को सबने समझकर मंजूर कर लिया।

सब भारतीय साथी और स्थानीय मित्र मुझे ताशकन्द के हवाई अड्डे पर विदाई देने के लिए आये थे। भारी दिल से मैंने उनसे बिदा ली। मैं चाहता था कि प्रतिनिधियों के साथ कुछ दिन और रुककर उज़बेकिस्तान को अधिक देखलूं, परन्तु यह संभव नहीं था।

सोवियत संघ में अन्तिम मुकाम तरमेज़ था। यह लगभग सीमा पर ही है। छोटा-सा हवाई अड्डा है। बुरी हालत में पड़ा है। संडास भी बहुत गंदा था। हमें यहां निश्चित समय से अधिक देर तक रुकना पड़ा। भोजन का समय था, परन्तु वहांपर इसका कोई प्रबन्ध नहीं था। चुंगी-वालों ने हमारे सामान को खोलकर उसकी पूरी-पूरी जांच की। आश्चर्य की बात कि हमारे पास जो रूबल बचे थे, उनके बदले में हमें रुपये की बजाय अमरीकी डालर के नोट दे दिये।

हवाई जहाज काबुल में उतरा। मैं भारतीय हूं, यह देखकर हवाई अड्डे के कर्मचारी दौड़कर मेरे पास आये और पूछने लगे कि क्या मैं भारत जाना चाहता हूं। कहने लगे, "आइये, भारत के लिए हवाई जहाज तैयार खड़ा है। बैठ जाइये उसके अन्दर।" मैंने उन्हें कहा कि मैंने कल के लिए जगह सुरक्षित करा रखी है। अभी एक रोज यहां ठहरूंगा।

काबुल, ८ जुलाई

आज जब मैं हवाई अड्डे पर गया और बहुत राह देखने के बाद जब मालूम हुआ कि हिन्दुकुश में मौसम खराब होने के कारण उस रोज हवाई जहाज नहीं जायगा, तब मुझे बहुत निराशा हुई। इस तरह काबुल में एक दिन और मिला। सौभाग्य से दो-एक अच्छे भारतीय मित्र मिल गये। उन्होंने मेरे लिए अच्छा प्रबन्ध कर दिया।

दिल्ली, ९ जुलाई

अन्त में आज काबुल से हवाई जहाज द्वारा रवाना हुआ। मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं रही जब हमारा जहाज अमृतसर में उतरा। आखिर भारत आ ही गया। यद्यपि बहुत थोड़े समय के लिए बाहर गया था, फिर भी स्वदेश लौटने पर जी बड़ा हल्का हो गया।

एक प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व करने का भार तो हल्का हो गया पर अब तुरन्त ही दूसरी जिम्मेदारी की तरफ मेरा ध्यान गया। अगस्त के पहले सप्ताह में नई दिल्ली में 'वर्ल्ड असेंबली ऑव यूथ' का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होने जा रहा है। उसकी तैयारी में लग जाना है। जब मैं दिल्ली के हवाई अड्डे पर उतरा तब मेरे दिमाग में केवल वही बातें चक्कर काट रहीं थीं।

कुछ दिन बाद प्रतिनिधि-मण्डल के कुछ अन्य सदस्य भी दिल्ली आ पहुंचे। मित्तल, आजाद और मनुभाई रूस से यूरोप की यात्रा पर

चले गए थे। जॉर्ज, पालित और प्रतिमा सीधे भारत लौट आये। मेरे आ जाने के बाद रूस में उन्होंने क्या-क्या किया, यह सब उन्होंने मुझे सुनाया।

मुझे विदा करने के बाद हमारे इन मित्रों को होटल जेराफशान से सरकारी अतिथिगृह पर ले जाया गया। यह शहर से आठ मील की दूरी पर है। मेज़बान स्वयं अनुभव कर रहे थे कि जिस होटल पर यह प्रतिनिधि-मंडल ठहराया गया था, वह हमारे लिए उपयुक्त नहीं था। दोपहर को वे ताशकंद से कुछ दूर उनीज़ाबाद का कार्लमार्क्स नामक सामूहिक फार्म देखने गये।

८ जुलाई को सुबह प्रतिनिधि-मण्डल उज़बेकिस्तान के शिक्षा-मन्त्री कामरेड खादीरोव से उनके दफ्तर में मिला। उन्होंने प्रतिनिधि-मण्डल को बताया कि क्रान्ति से पहले इस राज्य में केवल १६० पाठशालाएं थीं, जिनमें १३०० विद्यार्थी पढ़ते थे। ९५ प्रतिशत लोग निरक्षर थे। सन् १९२० में लेनिन ने एक खास कानून जारी किया कि निरक्षरता को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाय। १९३० में एक शासकीय आज्ञा द्वारा बच्चों के लिए सात वर्ष की पढ़ाई अनिवार्य कर दी गई। इस समय उज़बेकिस्तान में ५८०० शालाएं हैं, जिनमें १३,००,००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इस राज्य के बजट का ४२ प्रतिशत अर्थात् लगभग १ अरब ५० करोड़ रूबल केवल शिक्षा पर खर्च होता है। यहां दो विश्वविद्यालय, १२ शिक्षकों के ट्रेनिंग कालेज और ३४ यंत्र-विद्या की शालाएं हैं। इन सबमें ८०,००० शिक्षक काम करते हैं। १०७ रिफ्रेशर स्कूल और १०० अनाथ बच्चों के विद्यालय हैं।

शिक्षा का माध्यम उज़बेक भाषा है, जो रूसी लिपि से कुछ ही भिन्न लिखी जाती है। माध्यमिक शालाओं में प्रतिदिन दो घण्टे रचनात्मक श्रम की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। ताशकन्द और समरकन्द की दो शालाओं में हिन्दी सिखाई जाती है।

मन्त्री महोदय ने वार्तालाप के दौरान कहा कि शिक्षा-मन्त्रालय

और कोमसोमोल साथ-साथ मिलकर काम करते हैं। जॉर्ज ने इस कथन को अधिक स्पष्ट करने की प्रार्थना की, तब उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्कूल में एक पायनियर शिक्षक होता है, जिसका वेतन तो शिक्षा-मन्त्रालय से दिया जाता है, परन्तु वह काम करता है पूर्णतः कोमसोमोल के मार्गदर्शन में। मतलब, स्कूलों के काम-काज में कोमसोमोल बहुत गहरी दिलचस्पी लेता है।

इस बैठक के बाद प्रतिनिधि-मण्डल को एक कपड़े की मिल दिखाने ले जाया गया, जो स्तालिन के नाम पर है। यह मिल सन् १९५३ में चालू हुई। आज यह ७ लाख मीटर कपड़ा प्रतिदिन बनाती है। १७,००० मज़दूर इसमें काम करते हैं। मजदूरी काम की मात्रा के अनुसार दी जाती है। जितना काम उतना दाम। काम की मात्रा निश्चित कर दी गई है। निश्चित मात्रा से अधिक उत्पादन पर पारिश्रमिक भी बढ़ता जाता है। मजदूर का निम्नतम वेतन ६०० रूबल और अधिकतम ८०० रूबल प्रतिमाह है। दूसरी ओर इंजीनियरों को ८५० से लेकर ३,००० रूबल तक मासिक वेतन दिया जाता है।

९ तारीख की सुबह प्रतिनिधि-मंडल यानगिओल का सामूहिक फार्म देखने गया। रात को उज़बेक युवक-संगठनों ने मिलकर प्रतिनिधिमंडल के स्वागत में एक विराट समारोह किया। उज़बेक समिति के अध्यक्ष कामरेड आमिल अक्रम ने प्रतिनिधि-मंडल का स्वागत किया। इन भारतीय मित्रों के स्वागत में शहर के संगठनों के मन्त्री, विद्यार्थियों के एक प्रतिनिधि, कारखानों के कार्यकर्त्ता और मिल-मज़दूरों की तरफ से एक लड़की तथा शहर के कोमसोमोल के मन्त्री ने भाषण दिये। मित्तल ने इनका समयोचित जवाब दिया। मनुभाई ने उज़बेकिस्तान पर लिखी एक गुजराती कविता पढ़ी, जिसकी बहुत सराहना की गई। आज़ाद ने भी अपना बनाया एक शेर सुनाया। अन्त में हमारे प्रतिनिधियों ने मिलकर एक हिन्दी गीत और प्रसिद्ध रूसी गीत कच्यूशा गाया।

१० ता० को सुबह हमारे प्रतिनिधियों को विज्ञान-अकादमी ले जाया गया। इसकी स्थापना सन् १९४३ में हुई थी। इस समय उसमें बाईस अनुसंधानिक संस्थाएं चलती हैं, जिनमें ३५०० प्रोफेसर, लेक्चरर तथा अन्य विभागीय कार्यकर्ता काम करते हैं। शिक्षा का माध्यम उज़बेक भाषा है।

इसके बाद उन्हें नवाई पुस्तकालय देखने ले जाया गया। नवाई प्रथम लेखक थे, जिन्होंने उज़बेक भाषा में ग्रन्थ लिखना शुरू किया। सोवियत संघ में जितनी भी किताबें प्रकाशित होती हैं, सरकारी आदेशानुसार उनकी एक-एक प्रति इस पुस्तकालय को भी भेजी जाती है। इस समय उसमें २० लाख पुस्तकें हैं।

दोपहर को प्रतिनिधियों ने ताशकंद का ऐतिहासिक संग्रहालय देखा, जिसमें समरकन्द और बुख़ारा की प्राचीन संस्कृति के अवशेष भी हैं।

शाम को वे कामरेड राशिदिश्राव से मिले, जो उज़बेकिस्तान की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष और सोवियत संघ के उपराष्ट्रपति हैं। लगभग आधा घन्टा बातचीत होती रही। सोवियत भूमि में हमारे प्रतिनिधि-मण्डल का यह अन्तिम कार्यक्रम था।

प्रतिनिधियों की बहुत इच्छा थी कि समरकन्द और बुख़ारा के ऐतिहासिक शहर भी देखें, जो प्राचीन इस्लामी संस्कृति के केन्द्र रहे हैं। परन्तु कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण यह सम्भव नहीं हो सका।

भारत पहुंचने के बाद तुरन्त ही मैंने अपने प्रधानमन्त्री से मिलने की इच्छा प्रकट की। ८ जुलाई को मैं उनसे मिला और हमारी रूस-यात्रा का कार्यक्रम तथा उसके विषय में अपने अनुभव भी मैंने उन्हें संक्षेप में बताये। खुश्चोव के साथ हमारी बातचीत का सार तथा उनके लिए दिया गया संदेश भी सुनाया। कश्मीर के बारे में श्री खुश्चोव के विचार तथा बख्शी गुलाम मुहम्मद को दिया गया उनका सन्देश भी बता दिया। हमारी इस यात्रा का जो प्रतिवेदन

(रिपोर्ट) हमने कांग्रेस-अध्यक्ष को दिया था, उसकी भी एक प्रति मैंने नेहरूजी को भेंट की।

नेहरूजी के साथ इस मुलाकात में श्री रवीन्द्र वर्मा भी मेरे साथ थे, जो उन्हीं दिनों इसी प्रकार भारतीय युवक कांग्रेस का एक प्रतिनिधि-मण्डल लेकर चीन गये थे।

: १२ :

रूस और अमरीका

सोवियत संघ से लौटकर उस यात्रा के बारे में अपने विचार लिख लेने के बाद शीघ्र ही मुझे अमरीका जाने का भी अवसर मिला। यह बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि इससे मुझे संसार के इन दो सबसे अधिक शक्तिशाली देशों के लोगों के विचार जानने तथा उनके जीवन का निकट से अध्ययन करने का मौका मिला।

जिन परिस्थितियों में मैं रूस और अमरीका गया, वे लगभग एक-सी ही थीं। सन् १९५८ के अगस्त माह में दिल्ली में 'वर्ल्ड असेंबली ऑव यूथ' का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। उसमें संयुक्त राज्य अमरीका की 'नेशनल सोशल वेलफेअर असेंबली' की यंग एडल्ट कौंसिल के प्रतिनिधि भी आये थे। उन्होंने हमारी भारतीय समिति को निमन्त्रण दिया कि वह अपना एक युवक प्रतिनिधि-मंडल दो महीने के लिए अमरीका भेजे। तदनुसार हम वहां गये। हमारे प्रतिनिधि-मंडल में सात सदस्य थे और इसका भी नेतृत्व करने के लिए मुझे कहा गया।

रूस और अमरीका के जीवन की तुलना करना आसान भी है और कठिन भी। आसान इसलिए कि इन दोनों के ऊपरी भेद बिलकुल प्रकट व स्पष्ट हैं और कठिन इसलिए कि ये दोनों देश विज्ञान और तकनीकी प्रगति में इतने आगे होने पर भी एक दूसरे के प्रति इतने अविश्वासी और अज्ञानी क्यों हैं, यह जानने के लिए काफी गहराई में पैठना पड़ता है। आवागमन के उन्नत साधनों ने संसार को इतना छोटा बना दिया है कि यह बात बहुत अजीब-सी लगती है।

पिछले पृष्ठों में हमने देखा कि किस प्रकार रूस के एक साधारण नागरिक का जीवन चारों ओर से सीमित और बन्द कर दिया गया है। इसका कारण यह नहीं है कि वे लोग स्वयं एकान्तप्रिय हैं और बाहर की बातों को जानना नहीं चाहते, बल्कि यह है कि संसार की सही-सही जानकारी उन्हें दी ही नहीं जाती। जो दी भी जाती है, वह एक खास प्रकार के विचारों में रंगकर। रूस की जनता में अमरीका तथा दूसरे देशों की जनता के प्रति जो आश्चर्यजनक अज्ञान है, उसका कारण यही है। उदाहरणार्थ उन्हें यह विश्वास करने के लिए कहा जाता है कि अमरीका की जनता लड़ाकू है, दूसरों की स्वतन्त्रता का अपहरण करने का उसे शौक है तथा वह साम्राज्यवाद की समर्थक है। रूस के शब्दकोश में शान्ति, स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र के अर्थ भी एकदम अलग हैं। वहां शासन द्वारा कही हुई बात का प्रतिवाद कोई कर ही नहीं सकता।

कोई स्वतन्त्रतापूर्वक बातचीत भी नहीं कर सकता। सच और झूठ की छानबीन तथा जांच वहां नहीं हो सकती। कुछ गिनती के लोग छिपकर रेडियो पर विदेशों की खबरें भले ही सुन लें और शासकीय घोषणाओं के बारे में अपने मन में शंकाएं करलें, परन्तु जन-साधारण का विश्वास तो वहां यही है कि अमरीका शान्ति का विरोधी है।

अमरीकी जीवन इससे बिलकुल दूसरे प्रकार का है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि वहां के लोगों ने भी रूस के बारे में अपने विचारों को एकांगी और पक्षपातपूर्ण बना लिया है। वे भी रूसियों को लगभग उसी तरह देखते हैं, जिस तरह रूसी अमरीकियों को। प्रेस की स्थिति अमरीका में रूस से बिलकुल उल्टी है। संयुक्त राज्य अमरीका के अखबारों में मनचाही चीज़ छापने की पूरी आजादी है। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और पुस्तकों के द्वारा अमरीकी जनता को संसार के बारे में सारी जानकरी मिलती रहती है। फिर भी रूस के बारे में उनके सामने ऐसी ही सामग्री पेश की जाती है, जो साम्यवाद को बदनाम

करनेवाली होती है। प्रतिदिन उन्हें बताया जाता है कि साम्यवादी कैसे-कैसे पाशविक अत्याचार और हत्याएं करते हैं, किस प्रकार वे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं और सारे संसार को जीतने के लिए वे कैसे-कैसे षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परिणाम यह हुआ है कि अमरीका की जनता को पक्का विश्वास हो गया है कि संसार के किसी भी भाग में साम्यवाद के फैलने का अर्थ है प्रजातंत्र और स्वयं अमरीका के अस्तित्व को खतरा। यह भय इतना गहरा और व्यापक हो गया है कि अब प्रत्येक अंतर्राष्ट्रीय घटना को वे इसी दृष्टि से देखने के आदी हो गये हैं कि इससे साम्यवाद की शक्ति घटेगी या बढ़ेगी। इस वृत्ति की जड़ में केवल भय और आत्मरक्षा की सहज भावना है। सीनेटर मैकार्थी के जमाने में रूस के बारे में अमरीका की यह वृति एक पागलपन की सीमा तक जा पहुंची थी। वह हवा तो अब नहीं रही, फिर भी यह बात उनके दिल में बहुत गहरी जड़ पकड़ गई है और आज भी वे मानते हैं कि रूस स्वतन्त्र संसार और अमरीका के लिए एक स्थायी चुनौती है। इतना होते हुए भी उनमें एक बात अच्छी है। अमरीका के लोग रूस की सरकार और रूस की जनता को एक नहीं मानते। वे इसमें भेद करते हैं। वे रूसी जनता के इतने विरुद्ध नहीं हैं जितने कि साम्यवाद के सिद्धान्त और उसकी पद्धति के।

मैं यह देखकर हैरान था कि दो परस्पर-विरोधी विचारधाराएं एक ही नतीजे पर कैसे पहुंची। परन्तु कभी-कभी दो विरुद्ध छोर भी मिलते देखे गए हैं। रूसियों और अमरीकियों के सर्वसाधारण रुखों में कुछ बातें सामान्य हैं। जहांतक रूस की जनता का सवाल है, संसार के दूसरे देशों के बारे में उनके जो विचार हैं, उसका कारण वहां की सरकार है। परन्तु अमरीका में अंतिम निर्णायक तो मतदाता ही हैं। वहां के लोग व्यक्तिगत की स्वतन्त्रता में दृढ़ विश्वास रखते हैं। चूंकि साम्यवाद में व्यक्ति की स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं है, इसी कारण वे साम्यवाद के विरोधी हैं।

जहांतक हमारे प्रतिनिधि-मंडलों का प्रश्न है, हमारा स्वागत दोनों देशों में समान स्नेह के साथ हुआ। दोनों देशों की जनता ने हमारे साथ मित्रता बढ़ाने की अत्यधिक कोशिश की। जाहिर है कि उनके हेतु अलग-अलग रहे होंगे। रूसी लोगों के दिल में जो इतना प्रेम प्रकट हुआ, उसका कारण शायद यह रहा हो कि उन्हें गैर-रूसियों से मिलने का मौका बहुत कम मिलता है। एक कारण यह भी रहा हो कि एशिया के लोगों से मित्रता बढ़ाना उनकी राष्ट्रीय नीति का अंग है। इसके विपरीत अमरीका की जनता अपने मेहमानों का स्वागत करते समय इस बात की उतनी चिन्ता नहीं करती कि उसकी सरकार की विदेश-नीति क्या है। मेहमानों की मदद करने और उनका आतिथ्य करने का उन्हें दिली शौक है। बदले में वे केवल इतना चाहते हैं कि लोग उन्हें व्यक्तिगत और राष्ट्र के रूप में भी चाहें। इसके अलावा अमरीकी लोग यह भी जानते हैं कि हम प्रजातन्त्र के समर्थक हैं और एशिया में उसकी रक्षा करने में लगे हुए हैं। परन्तु मैं नहीं मानता कि उनके मधुर स्वभाव का मुख्य कारण यह है। यदि गैर-सरकारी रूसियों का भी एक दल अमरीका पहुंच जाय तो मुझे निश्चय है कि अमरीका की जनता उसका भी इतने ही मित्र-भाव के साथ स्वागत करेगी।

इन दो देशों की जनता में दूसरी सामान्य बात है परिश्रम के प्रति उनका दृष्टिकोण। दोनों देशों के स्त्री-पुरुष लगन से और डटकर काम करनेवाले हैं। सोवियत रूस में खेतों और कार-खानों में स्त्रियों को भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। इसका कारण शायद यह हो कि एक तो वहां के रहन-सहन का स्तर अपेक्षाकृत नीचा है और दूसरे मजदूरों की भी कमी है। परन्तु अमरीका में तो ऐसी बात नहीं है। फिर भी वहां औरतें काम से जी नहीं चुरातीं। हां, एक बात है। सोवियत रूस में जिस प्रकार स्त्रियों को कड़ा श्रम करना पड़ता है, ऐसा अमरीका में नहीं। परन्तु वहांपर धनाढ्य महिलाएं भी प्रायः

शान्ति के लिए आतुर है ही और शान्ति की पुकार मचा रही है। रूस की जनता हाल ही में युद्ध के परिणाम देख चुकी है। उनकी अपनी धरती युद्धस्थल बनी थी। वे अब लड़ाई की इच्छा कैसे कर सकते हैं? शान्ति और आर्थिक विकास के फल कब मिलेंगे, इसकी राह वे कबसे देख रहे हैं। इसी प्रकार अमरीका की जनता ने भी युद्ध में कम कष्ट नहीं सहा है। यद्यपि युद्ध प्रत्यक्ष उनकी जमीन पर नहीं हुआ, फिर भी संसार में लड़ाई के अनेक मैदानों पर उसके नौजवानों ने अपने प्राण अर्पण किये हैं। आखिर ऐसा कौन-सा धनिक राष्ट्र है, जो अपने नौजवानों को कटते-मरते देख सके? आर्थिक सहायता देना दूसरी बात है।

शान्ति के लिए इतनी इच्छा होने पर भी यह प्रकट है कि हर राष्ट्र अपनी शर्तों पर शान्ति चाहता है और दूसरे के प्रति अविश्वास रखता है। शीत-युद्ध में अमरीका का रुख अधिक रक्षणात्मक दिखाई देता है। जो स्थिति है वही बनी रहे तो शायद उन्हें सन्तोष होगा। उधर साम्यवादी विचार-धारावाले लोग अपना विस्तार करना चाहते हैं। धीरे-धीरे, परन्तु निश्चित रूपेण, वे अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ाने में लगे हुए हैं। सौभाग्य की बात है कि भारत इनमें से किसी भी एक गुट का अनुयायी या साथी नहीं है। प्रत्येक भारतीय की यह आस्था है कि निष्पक्ष और सक्रिय तटस्थता का यह क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ता रहे तथा उसका प्रभाव रूसियों और अमरीकियों के दिलों पर पड़ता रहे।

संयुक्त राज्य अमरीका में मैंने जो कुछ देखा, यहांपर विस्तार से उसकी चर्चा करना नहीं चाहता। हमने अपनी वहां की दो माह की यात्रा में इतनी संस्थाएं देखीं और इतने लोगों से हम वहां मिले कि इनको अत्यंत संक्षेप में भी लिखने बैठूं तो भी काफी विस्तार हो जायगा। इसलिए वहां से लौटने के बाद सन् १९५९ के अगस्त में मैंने अपनी अमरीका यात्रा के बारे में एक लेख लिखा था, केवल उसीके कुछ अंश यहां दे देता हूं।[1]

---

[1] इस बीच अमरीका का यह विस्तृत यात्रा-वर्णन 'अतलांतिक के उस पार' नाम से पुस्तक रूप में 'सस्ता साहित्य मण्डल' से प्रकाशित हुआ है।

"पूर्व किनारे से पश्चिम किनारे तक और उत्तर से दक्षिण तक बारह राज्यों में हमने ८००० मील की यात्रा की। हमारे मेजबान 'यंग एडल्ट कौंसिल' ने हमारे प्रतिनिधि-मंडल के सदस्यों की विविध रुचि और जरूरतों का ध्यान में रखते हुए, हमें कहां-कहां जाना चाहिए तथा किन-किन से मिलना चाहिए, इसका बड़ा सुनियोजित कार्यक्रम बनाया था।

"अमरीका के किसी युवक-संगठन द्वारा निमन्त्रित हमारा प्रतिनिधि-मंडल अपने ढंग का पहला ही था। इसके बाद 'यंग एडल्ट कौंसिल' ने पश्चिमी अफ्रीका के विभिन्न देशों के आठ प्रतिनिधियों को भी इसी प्रकार बुलाया था। हमारी यात्रा के अन्त में इनसे भी हमारी मुलाकात न्यूयार्क में हो गई थी, जिससे हमें बड़ी खुशी हुई।

"अमरीका के निवासी अपेक्षाकृत संपन्न हैं। इसलिए हम साधारणतः सोचते हैं कि वे आराम-पसन्द होंगे। परन्तु बात ऐसी नहीं है। वहां के सभी धनवान स्त्री-पुरुष काफी परिश्रमी हैं। या तो वे कोई नौकरी कर लेते हैं या समाज-सेवा का कोई काम उठा लेते हैं। उनकी यह परिश्रम-भावना व श्रम-प्रतिष्ठा देखकर उनके लिए बड़ा आदर होता है। जो संपन्न लोग आसानी से नौकर रख सकते हैं, वे भी अपना काम खुद करना पसन्द करते हैं।

"हमने वहां के लोगों को बड़ा उदार, सहृदय, उपकारी और अतिथि-परायण पाया। वे अपने काम को छोड़कर भी दूसरे की मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। वहां कितनी ही अच्छी-अच्छी संस्थाएं चल रही हैं, जिनमें लोग अवैतनिक काम करते हैं। इसी प्रकार समाज-सेवा के कामों के लिए वे बड़ी-बड़ी रकम एकत्र कर लेते हैं।

"जहांतक युवक-संगठनों का संबंध है, हमने देखा कि राजनीति की तरफ उनका अधिक झुकाव नहीं है। इनमें से कुछ, जैसे 'वाई० एम० सी० ए०' और 'वाई० डब्ल्यू० सी० ए०' समाज-कल्याण के क्षेत्र में अच्छा काम कर रहे हैं। 'यंग डेमोक्रेट्स', 'यंग रिपब्लिकन्स', 'यंग

क्रिश्चियन वर्कर्स' और 'नैशनल स्टुडेन्ट्स एसोसियेशन' में कुछ अधिक राजनैतिक चेतना है। परन्तु ये युवक-संस्थाएं फिर भी इतनी सुसंगठित नहीं हैं। सामान्य रूप से कह सकते हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका में युवकों के संगठन तो बहुत-से हैं, परन्तु युवकों का अपना कोई राष्ट्रीय आंदोलन हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। अभी-अभी वे इसकी जरूरत महसूस करने लगे हैं। इस दिशा में उन्होंने कुछ प्रयत्न भी शुरू किया है। शायद इसी कारण 'यंग डेमोक्रेट्स' और 'यंग रिपब्लिकन्स' ने 'यंग एडल्ट कौन्सिल' में शामिल होने का निश्चय किया है। देश के युवक संगठनों को आपस में जोड़नेवाली वही एकमात्र संस्था है। वह स्वयं भी देश के युवक-संगठनों को एक दूसरे के निकट लाकर उनको एक चेतनायुक्त और रचनात्मक शक्ति का रूप देने में यत्नशील है। उसका हमें तथा अफ्रीका के युवक नेताओं को निमन्त्रण देना इसी ओर एक प्रयत्न था।

"अमरीका की वैदेशिक नीति के बारे में बाहरी जगत में बड़ी गलतफहमियां फैली हुई हैं। उनके दृष्टिकोण को समझ लेना हमारे लिए उचित ही होगा। खासतौर पर इसलिए भी कि हमारे देश में सामान्यतया यह माना जाता है कि अमरीका का रुख हमारे प्रति बहुत मित्रता का नहीं है। हमने देखा कि जहांतक अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध है, वहां के जन-साधारण को उसमें बहुत कम दिलचस्पी है। 'न्यूयार्क टाइम्स' और एक-दो दूसरे समाचार-पत्रों को छोड़ दें तो न्यूयार्क और वाशिंगटन के अन्य समाचार-पत्र अंतर्राष्ट्रीय समाचार विशेष नहीं देते। प्रांतीय समाचार-पत्र तो खासतौर पर ऐसे समाचार बहुत ही कम देते हैं। वहां के समाचार-पत्र होते तो हैं बहुत भारी-भरकम, परन्तु उनका ७५ प्रतिशत भाग विज्ञापनों से भरा होता है। यहां तो लोगों को मुख्यत: अपनी आय और भौतिक सुख-सुविधाएं बढ़ाने से काम है। न वे किसी झंझट में पड़ते हैं और न चाहते हैं कि कोई और उन्हें किसी झंझट में डाले। उन्हें न तो राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं हैं और

न दूसरे देशों पर अपना साम्राज्य लादने की इच्छा। हमने देखा कि उनकी वृत्ति कुछ इस तरह की है कि यदि कोई उन्हें यह विश्वास दिला दे कि कोई अन्य देश और खासतौर पर सोवियत रूस उन्हें नहीं सतायगा तो वे सारे संसार से अपने-आपको अलग कर लें और आप भले और अपना काम भला, इस प्रकार रहना पसन्द करेंगे। इस रुख का कारण यही है कि आर्थिक दृष्टि से वे काफी समृद्ध हैं और हर बात में स्वावलम्बी हैं, किसी बात के लिए दूसरे पर आश्रित नहीं हैं।

"उन्हें अपने जीवन का तरीका अच्छा लगता है। बल्कि उस पर उन्हें बहुत गर्व है। यदि वे देखते हैं कि उसे खतरा है, तो समझते हैं कि उनकी सारी हस्ती खतरे में हैं और उनका सारा रोष उमड़ पड़ता है। इसी कारण वे हर चीज को इसी दृष्टि से देखते हैं कि वह साम्यवाद के अनुकूल है या प्रतिकूल और उसके अनुसार ही उसका विरोध या स्वागत करते हैं।

यही वृत्ति उनके विदेश मंत्रालय की वैदेशिक नीति में प्रतिबिंबित होती है। यह मुख्यतः संरक्षणात्मक और नकारात्मक है। अंतर्राष्ट्रीय बातों में दिलचस्पी की इस कमी और दूसरे महायुद्ध के पहलेवाले वर्षों में शेष संसार से कोई वास्ता नहीं रखने के कारण अमरीका ने ब्रिटेन और सोवियत रूस की भांति अपने दूतावासों के लिए वैदेशिक राजनीति में निपुण आदमी तैयार करने की परवा नहीं की। इसलिए ऐसा लगता है मानों अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का नेतृत्व अमरीकियों के सिर पर जबरदस्ती लाद दिया गया हो, जिसके न तो वे योग्य हैं और न इसकी उन्हें इच्छा है। इस प्रश्न पर मैंने वहां के बहुत-से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रत्यक्ष चर्चा भी की। उन्होंने भी सामान्यतः इस बात का अनुमोदन किया। इसी कारण उनकी नीतियों के बारे में बाहर और खास तौर पर भारत में बड़ी गलतफहमियां फैली हुई हैं। बाहरी संसार में क्या-क्या विचार-धाराएं फैल रही हैं, उनसे वहां के लोगों को परिचित रखने का भी पूरा प्रयत्न नहीं हो रहा है। इसी कारण अमरीका की

जनता यह नहीं समझ पा रही है कि बाहरी जगत में उसकी नीति के बारे में इतनी गलतफहमियां क्यों फैली हुई हैं।

"मेरी अपनी राय यह है कि सामान्यत: अमरीका की जनता को भारत के बारे में बहुत-कुछ जानकारी नहीं है, बल्कि कुछ हदतक गलत जानकारी ही है। परन्तु अब भारत के प्रति उनमें दिलचस्पी बराबर बढ़ रही है और जिन दिनों हम वहां थे, वहां का वातावरण वास्तव में हमारे देश के अनुकूल होता जा रहा था। हमने देखा कि हमारे बारे में उनके दिमाग़ में जो गलत कल्पनाएं भरी हुई थीं, वे निकल रही हैं। इसका एक चिन्ह यह माना जा सकता है कि काश्मीर के बारे में हमसे वहां एक भी प्रश्न नहीं पूछा गया, जो कि अबतक भारत-विरोधी भावनाओं का केन्द्र-बिन्दु बना हुआ था। वहां के लोग अब यह समझते जा रहे हैं कि संसार में एक तटस्थ शक्ति का होना भी जरूरी है। इसी प्रकार वे अब हमारी वैदेशिक नीति को भी समझने और उसकी कद्र करने लगे हैं।

"मैं यह भी बतादूं कि अमरीका के धनपतियों में अब यह भावना बढ़ रही है कि भारत के उद्योगों में उन्हें अपनी पूंजी लगानी चाहिए। वहांपर मैं बहुत-से उद्योगपतियों, बैंकरों आदि से मिला। उन्होंने इस विषय में बड़ी दिलचस्पी प्रकट की। अत: इस दिशा में प्रयत्न करके हमें इस अनुकूल परिस्थिति से लाभ उठाना चाहिए।

"अपनी इस यात्रा में हम बहुत-से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिले, जिनमें श्रीमती ऐलीनोर रूज़वेल्ट, सीनेटर (अब राष्ट्रपति), केनेडी सीनेंटर हम्फ्री, श्री चेस्टर बोल्स, सेक्रेटरी बेनसन, रिपब्लिकन पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री अलकार्न और प्रांतीय गवर्नरों में से न्यूयार्क स्टेट के नेलसन राकफेलर तथा मिशिगन के विलियम्स प्रमुख हैं। अधिकारियों में हमारी आखिरी मुलाकात श्री राकफेलर से हुई। वह सौहार्दयुक्त, मिलनसार और साफ तबीयत के आदमी हैं। उन्होंने अमरीका के बारे में मुझसे अपनी राय पूछी तो उनकी वैदेशिक नीति

के बारे में मेरे जो विचार बने थे, वे मैंने उन्हें बता दिये। मोटे तौर पर वह इससे सहमत थे। उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र का भविष्य इसपर निर्भर है कि संयुक्त राज्य अमरीका, भारत और ब्राज़ील किस हद तक आपस में सहयोग करते है। ब्राज़ील पर उन्होंने क्यों ज़ोर दिया, यह हम अच्छी तरह नहीं समझ सके।

"मेरा ख्याल है कि हमें यत्नपूर्वक अमरीका की जनता से अपने सम्बन्ध बढ़ाकर अपने देश की सही-सही जानकारी उसे देते रहना चाहिए। सरकारी प्रतिनिधि-मंडलों की अपेक्षा हमारे जैसे गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मंडल दोनों देशों के बीच अच्छे सम्बन्ध बनाने में अधिक अच्छा काम कर सकते हैं। मुझे निश्चय है कि भिन्न-भिन्न प्रकार की गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा यदि अलग-अलग स्तर पर सद्भावना-मंडल भेजे जायं, तो वे हमारे दोनों देशों को एक दूसरे के निकट लाने में बड़ा काम कर सकते हैं।"

रूस और अमरीका आज संसार के दो सबसे बड़े उद्योग-प्रधान राष्ट्र हैं। दोनों विज्ञान को सर्वोपरि महत्व देते हैं। अबतक अमरीकी जनता यह समझ रही थी कि उनका देश अपने प्रतिस्पर्धी से विज्ञान में बहुत आगे है। परन्तु स्पुतनिक के सफल प्रयोग द्वारा रूस ने उसके इस आत्म-विश्वास को बड़ा जबरदस्त धक्का पहुंचा दिया है, यद्यपि अमरीका के राजनीतिज्ञ और वैज्ञानिक रूस की इस प्रगति से एकदम बेखबर नहीं थे। सैनिक शक्ति में दोनों राष्ट्र लगभग बराबरी के हैं। कोई भी देश किसी दूसरे से किसी बात में एकदम आगे नहीं कहा जा सकता। अब तो केवल आत्मरक्षा के खातिर भी दोनों देशों को एक दूसरे के बारे में अधिक जानकार रहना पड़ेगा। इसी कारण दोनों देशों के उच्चतम नेता एक दूसरे के देश में आने-जाने लगे हैं। इससे यह आशा भी जागने लगी है कि संभवतः पंचशील, अर्थात सह-अस्तित्व और 'जियो व जीने दो' के सिद्धान्त को धीरे-धीरे मान्यता मिल जाय।

परिशिष्ट १

प्रतिनिधि-मण्डल का वक्तव्य[1]

बहनो, भाइयो और रूस के नौजवान दोस्तों !

हम लोग भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसके नेता श्री जवाहरलाल नेहरू हैं, की युवक-संस्था के प्रतिनिधि की हैसियत से यहां आये हैं। हम सातों सदस्य भारत के विभिन्न भागों से आ रहे हैं।

लखनऊ में अक्तूबर, १९५७ में भारतीय युवक-कांग्रेस का सालाना जलसा हुआ था। उसमें हमारे निमन्त्रण पर आपकी सोवियत युवक-समिति के तीन साथी निरीक्षक के रूप में भाग लेने आये थे। हमें इसकी बड़ी खुशी हुई थी। उस समय आपके प्रतिनिधियों ने हमें यहां एक सद्भावना-मंडल भेजने का निमंत्रण दिया था। उसीके फलस्वरूप आज हम लोग आपके बीच उपस्थित हैं। आपके निमन्त्रण और स्वागत के लिए हम आपकी समिति के बहुत आभारी हैं।

हमें रूस में आये तेईस-चौबीस रोज हो गये। मास्को से लेनिनग्राद, याल्टा होते हुए हम कीव गये और वहां से फिर आपकी इस विशाल नगरी मास्को में आये हैं। यहां से हम उज़बेकिस्तान जायंगे और यों एक माह की अपनी यह अविस्मरणीय यात्रा पूरी करके अपने देश भारत वापस पहुंचेंगे।

हम लोग यहां खुले दिल और दिमाग लेकर आये हैं। आपकी युवक-प्रवृत्ति, आपकी संस्थाएं, आपके खेल-कूद के स्थान, आपके लोगों का

---

[1] यह वक्तव्य प्रतिनिधि-मण्डल ने रूस से विदा होते समय मास्को टेलीविजन पर दिया था।

रहन-सहन हमने बिना किसी पूर्व-धारणा के देखने और समझने की कोशिश की है। यहां हमको बहुत-कुछ नई बातें देखने और सीखने को मिली हैं, जिनका उपयोग हम अपने देश में लौटकर करेंगे।

हमारे देश के राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने हमें हमेशा सत्य, अहिंसा और शान्ति का पाठ पढ़ाया है। हमने शान्ति के मार्ग से ही लड़कर अंग्रेजों से अपने देश को आज़ाद किया है। आज हमारे देश के सर्वप्रिय नेता श्री जवाहरलाल नेहरू भी उसी रास्ते पर चलकर सारी दुनिया में शान्ति कायम करने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं, हमारे देशवासियों को शान्ति का पाठ पढ़ा रहे हैं। जब आपके नेताओं और आपकी जनता ने पंचशील को स्वीकार किया और उन सिद्धान्तों पर चलकर दुनिया में शान्ति स्थापित करने का निश्चय किया तब हमें बहुत प्रसन्नता हुई।

हम जहां-जहां गये, हमें आपका अपार प्रेम मिला। आपकी जनता का भारत के लोगों के लिए इतना प्रेम देखकर हम गद्गद हो गये हैं। वापस भारत जाकर हम आपके इस प्रेम की कहानी वहां के लोगों को और विशेषकर अपने युवक साथियों को सुनायंगे।

आपने बहुत बड़े-बड़े काम किये हैं। आपका देश महान है। मास्को का विश्वविद्यालय और मीत्रो मनुष्य की प्रगति में बड़े कदम हैं। आपकी 'यंग पायनियर' संस्था हमें विशेष प्रिय लगी। बच्चे स्वस्थ, हँसमुख और व्यवहार-कुशल हैं। सब जगह हमसे बहुत प्यार से मिले और बड़ी सरलता से हमारे मित्र बन गये। उनके खाली समय में उनको आराम मिले, खेल-कूद की सुविधा मिले, ठीक से पढ़ाई की व्यवस्था हो, स्वास्थ्य के लिए पूरा इन्तजाम हो, इस सबका आप खूब ख्याल रखते हैं, यह देखकर हमें विशेष प्रसन्नता होती है।

भारत के लोगों और युवकों के समान ही यहां के लोग भी शांति चाहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। यद्यपि हमारे सिद्धान्त जुदा-जुदा हैं और हमारी कार्य करने की पद्धतियों में भी अंतर है, फिर भी हमारे अंतिम

लक्ष्य एक ही हैं—दुनिया में अमन कायम करना । जिन-जिन देशों के लोग व युवक शांति चाहते हैं, हम उन सबके साथ मिलकर शांति की ताकत बढ़ाना चाहते हैं। इसलिए हमें भरोसा है कि आप और हम सब साथ मिलकर शांति के लिए एकसाथ काम कर सकते हैं।

आपने स्पुतनिक बनाया। दुनिया की प्रगति के इतिहास में यह एक क्रांतिकारी घटना हुई है। आपके यहां विज्ञान और टेकनोलोजी का बहुत विकास हुआ है। स्पुतनिक बनाने के लिए जो उद्योग करने पड़े, उसके लिए रूस की जनता को, खासकर युवक और युवतियों को बहुत त्याग करना पड़ा है, यह हम जानते हैं। उनको वर्षों से रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुओं की कमी सहन करनी पड़ रही है। फिर भी उन्होंने इसे बहादुरी से सहन किया है। हमें विश्वास है कि आपका त्याग और यह अपार शक्ति दुनिया में शांति कायम करने के लिए ही काम में आयगी। तभी आप लोगों का यह त्याग सारी दुनिया के लोगों के लिए किया गया त्याग साबित होगा। हम आपके इस प्रयत्न में आपकी सफलता चाहते हैं।

आपके लोकप्रिय नेता श्री ख्रुश्चोव से परसों हमारा प्रतिनिधि-मंडल मिल सका, इसकी हमें बहुत ज्यादा खुशी है और हम उनके तहे-दिल से आभारी हैं। उन्होंने बहुत देर तक हमारे सब प्रश्नों का प्रेम से जवाब दिया और हमारी कदर की, इसे हम अपना परम सौभाग्य समझते हैं।

हमें भरोसा है कि रूस और भारत के युवकों का भविष्य उज्ज्वल है और हम दोनों मिलकर दुनिया के भविष्य को बनाने में काफी हिस्सा बंटा सकते हैं।

हम चाहते हैं कि भारतीय युवक कांग्रेस के लोगों की शुभ कामनाएं आपके जरिये आपके सारे नवयुवकों के पास पहुंचें।

आपके निमंत्रण, स्वागत और प्रेम के लिए हम सोवियत युवक-समिति व सब रूसी नौजवान दोस्तों के बहुत आभारी हैं। कृपया

हमारा धन्यवाद और प्रेम स्वीकार करें।

नमस्ते !

पासीबा (धन्यवाद),

दसविदानिया (अलविदा) !

परिशिष्ट २

प्रतिनिधि-मण्डल का प्रतिवेदन[1]

भारतीय युवक कांग्रेस का दूसरा वार्षिक अधिवेशन सन् १९५८ के अक्तूबर मास में लखनऊ में हुआ था। इस अवसर पर हमने कई देशों के युवक-संगठनों को निमंत्रित किया था। तदनुसार सोवियत रूस, संयुक्त राज्य अमरीका, जापान, पूर्वी जर्मनी, चीन, उत्तर वियतनाम, मिस्र, और यूगोस्लाविया के प्रतिनिधियों ने इस अधिवेशन में भाग लिया।

अपने-अपने देश लौटने से पहले सोवियत रूस और चीन के प्रतिनिधियों ने भारतीय युवक-कांग्रेस को निमंत्रण दिया था कि वह भी अपने प्रतिनिधियों का एक सद्भावना-मंडल सन् १९५८ में किसी समय उनके देश में भेजे। यहां से लौटने पर एक लिखित निमन्त्रण भेजकर उन्होंने इसकी पुष्टि भी कर दी।

भारतीय कांग्रेस कमेटी के युवक-विभाग ने इस निमन्त्रण को स्वीकार किया और इन दोनों देशों को एक-एक सद्भावना-मंडल भेजने का निश्चय किया। एक प्रतिनिधि-मंडल श्री रवीन्द्र वर्मा के नेतृत्व में चीन गया और दूसरा रूस। रूसवाले प्रतिनिधि-मंडल का नेतृत्व करने के लिए मुझसे कहा गया।

रूस भेजे गए प्रतिनिधि-मंडल में मेरे अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य थे :—

१. श्री एस. पी. मित्तल, सेक्रेटरी, पंजाब प्रदेश युवक कांग्रेस

---

[1] यह प्रतिवेदन प्रतिनिधि-मण्डल ने भारत लौटने पर कांग्रेस-अध्यक्ष को दिया था।

२. श्री पूरनसिंह 'आज़ाद', अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी युवक-विभाग, नई दिल्ली

३. श्री ए. सी. जॉर्ज, सेक्रेटरी, केरल प्रदेश युवक कांग्रेस

४. श्री मनुभाई पटेल, गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी

५. श्री प्रभात पालित, पश्चिमी बंगाल युवक कांग्रेस

६. श्रीमती प्रतिमा मुकर्जी, पश्चिमी बंगाल

हम १२ जून १९५८ को मास्को पहुंचे और एक महीना रूस में रहे।

इस अवधि में हमें मास्को के अलावा लेनिनग्राद, याल्टा (क्रीमिया), कीव (युक्रेन) और ताशकन्द (उज़बेकिस्तान) ले जाया गया।

इन स्थानों पर हमने बच्चों तथा युवकों की बहुत-सी संस्थाएं और संगठन देखे और अच्छी तरह उनका अध्ययन किया। हमने वहां की शिक्षा-संस्थाएं भी देखीं। उनमें मास्को और लेनिनग्राद के विश्व-विद्यालय तथा पूर्वी देशों का अध्ययन करनेवाली संस्थाएं (ओरिएन्टल फैकल्टीज़) मुख्य थीं। इनमें खासतौर पर एशिया और अफ्रीका के देशों और उनके प्रान्तों तक की भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। बच्चों की शिक्षा-कल्याण-सम्बन्धी संस्थाएं भी देखीं। इनमें से मुख्य 'यंग पायनियर्स' थी, जिसकी शाखाएं सारे देश में फैली हुई हैं। नाटक, संगीत, नृत्य आदि के द्वारा वहां की सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का भी हमने अवलोकन किया। वहां के बगीचे, खेल, स्टेडियम भी हमने देखे और यह भी जाना कि वहां के युवक फ़ुरसत के समय का उपयोग किस प्रकार विश्राम, खेल, मनोविनोद और राष्ट्रीय निर्माण के विविध कामों में करते हैं।

'कोमसोमोल' (यंग कम्यूनिस्ट लीग) सोवियत रूस के युवकों का सबसे बड़ा संगठन है। इसके प्रतिनिधियों से हम विभिन्न स्थानों पर मिले और उनसे लंबी चर्चाएं कीं। यह संगठन कम्यूनिस्ट पार्टी के सीधे नियन्त्रण और मार्ग-दर्शन में काम करता है। सोवियत रूस के युवकों के जीवन पर कोमसोमोल का बहुत प्रभाव है। खेल-कूद और राष्ट्रीय निर्माण-संबंधी खास-खास सारी प्रवृत्तियां इसी संगठन के द्वारा संचालित

होती हैं। इसे शासन का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त है।

दोनों देशों के युवक-संगठनों के बीच भावी संबंध कैसा हो और हम कौन-कौन-से सामान्य काम मिल-जुलकर कर सकते हैं, इस विषय में सोवियत युवक-समिति और कोमसोमोल के नेताओं के साथ हमारी विस्तृत चर्चाएं हुईं।

२६ जून १६५८ को कीव में सोवियत रूस के पहले युवक-दिवस-समारोह में सम्मिलित होने पर हमें बड़ी खुशी हुई। कोमसोमोल ने सुझाया कि जून मास का अंतिम छुट्टी का दिन सारे देश में युवक-दिवस के रूप में मनाया जाय। शासन ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया। समारोह का आयोजन बड़ा प्रभावशाली रहा। सारा शहर उत्सव में डूब गया था। नौजवानों और बच्चों के खेल, परेड आदि सब बहुत प्रभावोत्पादक रहे। जन-समूह ने हमारे प्रति बहुत प्रेम प्रकट किया और अपने संगठन की तरफ से हमने उन्हें जो भेंट दी, उसकी सबने बड़ी सराहना की। उन्होंने हमारे गीतों और संगीत को भी बहुत पसन्द किया।

उनका देश इतना विशाल है और हमारी यात्रा इतनी संक्षिप्त थी कि उसके बारे में अपने कोई विचार प्रकट करना बड़ा कठिन लगता है। साथ ही हम वहां सर्वत्र सोवियत युवक-समिति के मातहत और हरदम उसके प्रतिनिधियों के साथ घूमते रहे। इसलिए हमें जहां चाहें वहां जाने की छूट होते हुए भी हमारे विचार इकतर्फा हो सकते हैं।

इस यात्रा के दौरान जिन निर्णयों पर हम पहुंचे, वे संक्षिप्त में इस प्रकार हैं—

१. सोवियत रूस की जनता भयंकर युद्ध में से गुज़री है और उसने बहुत बरबादी सही है। इसलिए वहा के लोग और खासकर नौजवान स्वभावतः युद्ध के विरोधी हैं। हमें निश्चय हो गया है कि वे शान्ति चाहते हैं और शान्ति के लिए प्रयत्न करनेवालों को वे हर प्रकार का सहयोग देंगे।

२. हम जहां-जहां भी गये, भारत की जनता के प्रति हमने अद्भुत सद्भाव पाया। इसका खास कारण यही है कि एक तो विदेशी शासन से लड़कर हमने स्वतन्त्रता पाई और दूसरे हम सच्चे दिल से संसार में शांति चाहते हैं और उसके लिए यत्न-शील हैं। हमारे प्रधानमन्त्री के प्रति वहां की जनता में असीम प्रेम और आदर है। सच तो यह है कि वहां के जन-साधारण उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हैं।

३. सोवियत संघ में हमने सर्वत्र देखा कि देश के नव-निर्माण और प्रगति के लिए, खासतौर पर अपनी योजनाओं को सफल बनाने के लिए, वहां के युवक काफी काम कर रहे हैं। इस विषय में हमें लगता है कि हमारे देश के युवकों को आज की अपेक्षा बहुत अधिक काम करना चाहिए। उन्हें संगठित होकर अपने देश के प्रजातान्त्रिक ढांचे के अन्तर्गत रहकर, राष्ट्र-निर्माण के सभी कामों में अधिक भाग लेना चाहिए।

४. हमें खासतौर पर ध्यान रखना चाहिए कि रूस की जनता के साथ हमारी मित्रता का फल यह न हो कि उससे हमारे देश की कम्यूनिस्ट पार्टी को, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, किसी भी प्रकार से बल मिले। हमारे नौजवानों को भूलना नहीं चाहिए कि यद्यपि रूसी जनता भी शान्ति ही चाहती है, फिर भी रूस पर शासन करनेवाली कम्यूनिस्ट पार्टी के और हमारे तौर-तरीकों में बड़ा अन्तर है। यदि इस मित्रता का गलत अर्थ लगाकर हम उनकी विचार-पद्धति को अपनी विचार-पद्धति में मिला देंगे तो यह बात हमारे लिए घातक सिद्ध होगी।

५. रूसियों को हक है कि वे जिस प्रकार ठीक समझें अपने देश का शासन करें। परन्तु हम अनुभव करते हैं कि रूसी पद्धति हमारे देश और भावी योजनाओं के लिए उपयुक्त नहीं है।

६. हमने देखा कि सोवियत संघ के युवक बड़ी कड़ी मेहनत करते हैं। अपने देश के लिए उन्होंने बड़ा त्याग किया है। हमारा ख्याल है कि हमारे देश के युवकों को भी अपनी जिम्मेदारी समझकर

खूब कड़ा परिश्रम करना चाहिए। हमें बातें और बहस कम और काम अधिक करना चाहिए।

७. यदि युवक-नेताओं द्वारा युवक-संगठनों से काम करवाया जाय तो यहां भी ऐसा हो सकता है। आज यदि उनपर अधिक जिम्मेवारी डाली जाय, और इस समय ऐसा करने की जरूरत भी है, तो हमें विश्वास है, वे उसे अवश्य पूरी करके दिखायंगे और आगे आनेवाली जिम्मेदारियों को निभाने के योग्य अपने-आपको बना सकेंगे।

८. उपर्युक्त सुझावों को कार्यान्वित करने के लिए हमारा सुझाव है कि शिक्षा और योजना-मन्त्रालय द्वारा रूस, पश्चिमी जर्मनी, बेलजियम, हॉलैंड, और इंग्लैंड के युवकों की प्रवृत्तियों का अध्ययन करने के लिए यहां से प्रतिनिधि-मण्डल भेजे जायं और उनके अनुभवों से अधिक लाभ उठाया जाय।

९. यदि युवक-कांग्रेस को अपना विकास करना है और विदेशों के युवक-संगठनों से अपना संपर्क रखना है, जिसकी आज के जमाने में आवश्यकता है भी, तो इसके लिए एक वैदेशिक विभाग खोल दिया जाना चाहिए, जिसमें पर्याप्त संख्या में योग्य कार्यकर्त्ता हों।

१०. हम अनुभव करते हैं कि अब जब कभी इस तरह से प्रतिनिधि-मण्डल विदेशों को भेजे जायं तो यह ध्यान रहे कि उसमें कम-से-कम एक सदस्य तो उस देश की भाषा का अच्छा जानकार अवश्य हो।

११. पहले की अपेक्षा आज हमें और भी अधिक निश्चय हो गया है कि अपने देश में जो मार्ग हमने अपनाया है, वही सबसे अच्छा है। लोकतन्त्र और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता बड़ी कीमती चीजें हैं। इनको कभी, किसी कीमत पर, अपने आदर्शों को जल्दी प्राप्त करने के लिए भी, नहीं छोड़ना चाहिए।

हमारे प्रतिनिधि-मंडल में एक महिला थीं, जो अच्छा गा भी सकती थीं। यह बड़ा अच्छा हुआ। हम समझते हैं कि आगे ऐसे सब प्रतिनिधि-मण्डलों में एक-दो महिलाएं भी अवश्य हों, जो गायन तथा नृत्य

अच्छी तरह जानती हों।

सोवियत जीवन के विविध पहलुओं के बारे में हमने विविध जानकारी प्राप्त की। इसे हम लेखों के रूप में अपने पत्र 'युवक कांग्रेस' द्वारा युवक कार्यकर्ताओं की सेवा में रखना चाहते हैं।

हम समझते हैं कि युवक-कांग्रेस का अपना प्रतिनिधि-मण्डल रूस भेजने का निश्चय समय और उपयोगिता की दृष्टि से भी बहुत अच्छा और सामयिक रहा।

यह प्रतिनिधि-मण्डल दोनों देशों के बीच सद्‌भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से भेजा गया था। हम मानते हैं कि कुल मिलाकर उसमें यह सफल रहा है।

इस महत्वपूर्ण और दिलचस्प कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए युवक कांग्रेस ने हमें जो मौका दिया, इसके लिए हम उसके कृतज्ञ हैं। जितने भी दिन हम रूस में रहे, हमने अपने मिशन को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम किया और मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि इसमें हमारे प्रतिनिधियों ने पूरा-पूरा सहयोग दिया। हमने एकदिल होकर एक टीम के रूप में काम किया। सबका व्यवहार सुन्दर तथा पूरी तरह अनुशासनबद्ध रहा। इसके लिए मैं प्रतिनिधि-मण्डल के हर सदस्य को धन्यवाद देना चाहता हूं।

रूस में हम श्री ख्रुश्चोव से भी मिले। उन्होंने हमें यह जो अवसर दिया, इसके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। ३५ मिनट तक उनसे हमारी यह दिलचस्प बातचीत खुले दिल से होती रही। वातावरण बड़ा मैत्रीपूर्ण रहा। स्वयं उन्होंने ही हमसे प्रश्न पूछने के लिए कहा और सौहार्दपूर्वक उनके जवाब दिये। हमें बताया गया कि रूस के प्रधानमंत्री शायद पहली बार ही किसी गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मंडल से मिले थे। कुछ भी हो, उनसे मिलनेवाला युवक प्रतिनिधि-मंडल तो यह पहला ही था।

अंत में हम सोवियत युवक-समिति को धन्यवाद दिये बगैर नहीं रह

सकते, जिन्होंने हमें वहां निमन्त्रित किया और हमारी यात्रा तथा सुख-सुविधाओं का इतना सुन्दर प्रबन्ध किया। सोवियत रूस के समस्त युवकों के भी हम कृतज्ञ हैं।

हम सब प्रतिनिधियों का यह सम्मिलित और सर्वसम्मत प्रतिवेदन है।

१६ जुलाई, १६५८

रामकृष्ण बजाज
प्रतिनिधि-मण्डल के नेता

परिशिष्ट ३

सोवियत संघ में आय और कीमतें

अपनी रूस-यात्रा के समय मैंने सामान्य अर्थ-व्यवस्था के साथ-साथ वहां के दैनिक जीवन के आर्थिक स्तर का भी अध्ययन किया था। नीचे दी हुई तालिका उसी खोज-बीन का परिणाम है। इससे वहां के निवासियों के जीवन-स्तर की झलक मिल जाती है।

इन आंकड़ों के संग्रह में हमें बड़ी कठिनाई हुई थी; लेकिन जो सूचनाएं हमें मिलीं, वे यथासंभव सही हैं।

ये आंकड़े सन् १९५८ के हैं। इस बीच वहां काफी आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। रूबल का अवमूल्यन हुआ है—पुराने दस रूबल अब एक रूबल के बराबर हैं। इस हिसाब से सारी अर्थ-व्यवस्था में हेर-फेर हो गये हैं। हमारी यात्रा के समय रूबल और रुपये की विनिमय-दर १.२ रूबल = १ रुपया थी। अब एक रूबल लगभग पांच रुपये के बराबर है।

(१) मासिक आय

	रूबल	रुपयों में (स्थूलमान से)
शिक्षक (जो प्रतिदिन छः कक्षाएं पढ़ाते हैं)	६००	५००
शिक्षक (जो प्रतिदिन दस कक्षाएं पढ़ाते हैं)	१,०००	८५०

मुख्य लेक्चरर (जो एम. ए. नहीं हैं)	१२,००-१,६००	१,०००-,१३२५
,, (जो एम. ए. है)	२,५००-३,२००	२,१००-२,६५०
सहायक प्रोफेसर	२,०००-२,७००	१,६५०-२,२५०
,,	२,५००-३,२००	२,१००-२,६५०
,,	२,८००-४,०००	२,३५०-३,३५०
प्रोफेसर (डाक्टरेट की उपाधिसहित)	३,५००-४,५००	३,०००-३,७५०
,, (आंशिक समय)	१,६००	१,३५०
डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑव इन्टरनैशनल अफेअर्स	७,०००	५,८५०
अनुवादक (प्रत्येक शीट के ६०० से ८०० रूबल तक)	६,०००-८,०००	५,०००-६,६५०
इंजीनियर	१,०००-१,५००	८००-१,२००
ऐकेडेमीशियन	२०,०००-३०,०००	१८,०००-२५,०००
नौकरानी	२००-३००	१७५-२५०
विक्रेता-लड़की	६००	५००
क्लर्क	५००-७००	४२०-६००
मजदूर	८००	६६०
डाक्टर (प्रतिदिन ४० परिवारों का निरीक्षण करता है ।)	६००	५००
टैक्सी ड्राइवर	१,२००	१,०००

मकान-किराया मोटे तौर पर आय का तीन प्रतिशत होता है। गैस का खर्च प्रत्येक परिवार को ३ से ४ रूबल; रेडियो और टेलीविजन-सहित बिजली का खर्च २० से ३० रूबल। २००० रूबल मासिक आय तक पर आयकर १० प्रतिशत और अधिक-से-अधिक १३ प्रतिशत।

(२) भिन्न-भिन्न चीजों की कीमतें

चीज का नाम	वजन, नग, नाप	कीमतें		
		रूबल	रुपये	खुले बाजार में (रुपये)
चावल	किलोग्राम	२०	१६	—
मूंगफली	,,	१५	१२.५०	—
आलू (उस समय सरकारी बाजार में अप्राप्य)	किलोग्राम	—	—	१.२५ से १.७५
टमाटर	,,			२५-३३
प्याज	किलोग्राम	४	३	१७
ककड़ी (अगस्त में)	,,	२-३	१.५०-२.५०	—
ककड़ी (बेमौसम)	,,	—	—	२५-३०
संतरा	,,	१६	१३.२५	—
मोसम्मी (छोटी)	,,	१५	१२.५०	—
नींबू	एक	२.५०	२.१०	—
मक्खन	किलोग्राम	२८.५०	२३.७५	—
आइसक्रीम (छोटी)	एक	२	१.५०	—
चाय	कप	.५०	.४०	—
नीबू की चाय	,,	१	.८०	—
चाकलेट (छोटी)	एक	१	.८०	—
लम्बी रोटी	एक	२.५०	२.१०	—
काली रोटी	,,	१	.८०	—
अंडा	,,	१.३०	१	—
शेरी (शराब)	गिलास	.५०	.४०	—
वोदका ,,	बोतल	२८	२३	—
बीअर ,,	,,	२.४५	२	—

ओवर कोट	एक	२७००	२२५०	—
ऊनी सूट	,,	२०००-	१६५०-	—
		२५००	२०८०	—
मिश्रित ऊनी सूट	,,	८००	६५०	—
खालिस ऊनी कपड़ा	गज	३००-	२५०-	—
		४००	३३०	—
रेशमी कमीज	एक	१५०	१२५	—
सूती ,,	,,	६०	५०	—
युक्रेनी रुई का कमीज	,,	३००	२५०	—
सूती मोजे (साधारण)	जोड़ा	१३	११	--
,, (घटिया)	,,	७-८	६-७	—
तौलिया (मामूली)	एक	५०	४२	—
जूते (जो भारत में				
३० रु० में बिकते हैं)	जोड़ा	२५०	२१०	—
बच्चों के जूते (चमड़े के)	,,	७७	६४	—
टेनिस के जूते	,,	३२	२६	—
जूते का रेशमी लेस	,,	३	२.५०	—
,, साधारण लेस	,,	१	.८५	—
बूट की पालिश	एक बार	२	१.७५	—
औरतों का साधारण				—
हैंड बैग (चमड़े का)	एक	१००	८५	—
वेनिटी बैग (मामूली)	,,	१००	८५	—
छाता (चीनी)	,,	८०	६७	—
लिपस्टिक	एक	५-१२	४-१०	—
इत्र	छोटी शीशी	१३	११	—

सूती कपड़े और चमड़े का सामान भारत से चार-पांच गुना महंगा है।

बादाम की क्रीम	शीशी	६	५	—
कोल्ड क्रीम (चेहरे पर लगाने का)		३-५	२.५०-४	—
बिजली का शेवर	एक	६०-१८०	७५-१२५	—
शेविंग ब्रुश	एक	१५	१२.५०	—
नहाने का साबुन (घटिया)	तीन टिकिया	६	७.५०	—
साबुन की डिबिया	एक	३.२५	२.५०	—
दांत का ब्रुश (घटिया)	एक	३	२.५०	—
बड़ा कंघा	,,	६.५०	४.५०	—
छोटा कंघा	,,	३.५०	३	—
सिगरेट	एक पैकेट	१.५०	१.२५	—
दियासलाई की डिब्बी	एक	.१५	.१२	—
बॉलपेन-जैसी पेन्सिल	,,	५-२०	४-१६	—
मामूली पेन्सिल	,,	.३०	.२४	—
नोट बुक (४० पृष्ठ की)	,,	.१७	.१४	—
स्टोव[1]	एक	५०	४२	—
फाइबर बॉक्स (छोटा)	,,	६०-८०	५०-७०	—
टेलीविजन सेट	,,	८००	६७५	—
बाइसिकल	,,	६६०	५७५	—

[1] स्टोव, फाइबर बॉक्स और टेलीविजन सेट रूस में बड़े सस्ते हैं।

होटल पीकिंग—सिंगल रूम, स्नानघरसहित ३०-३५ रूबल=२५-३० रु० प्रतिदिन

डबल रूम ,, ४५-५० ,, =३८-४२ ,, ,,

नाश्ता-भोजन का खर्च अलग

होटलों में, सामान्यतः भोजन के १६ रूबल=१३ रु०

स्कूटर (	एक	३,०००	२,५००
५ सीटवाली कार	,,	१५,०००	१२,५००
७ ,, ,,	,,	३०,०००	२५,०००

●

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
आत्मकथा	(गांधीजी)	४.००
प्रार्थना-प्रवचन : २ भाग	,,	५.५०
गीता-माता	,,	४.००
पन्द्रह अगस्त के बाद		२.००
धर्मनीति	,,	२.००
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३.५०
मेरे समकालीन	,,	५.००
आत्म-संयम	,,	३.००
गीता-बोध	,,	.५०
अनासक्तियोग	,,	.७५
ग्राम-सेवा	,,	.३७
मंगल-प्रभात	,,	.३७
सर्वोदय	,	.३७
नीति-धर्म	,,	.३७
आश्रमवासियों से	,,	.४०
हमारी मांग	,,	१.००
एक सत्यवीर की कथा	,,	.२५
आत्मकथा (संक्षिप्त)	,,	१.००
हिन्द-स्वराज्य	,,	.७५
अनीति की राह पर	,,	१.००
बापू की सीख	,,	.५०
गांधी-शिक्षा : तीन भाग	,,	.६२
आज का विचार : दो भाग	,,	.७४
ब्रह्मचर्य : दो भाग	,,	१.७५
गांधीजी ने कहा था : ६ भाग		२.७०
शान्ति-यात्रा	(विनोबा)	१.५०
विनोबा के विचार : २ भाग		३.००
जीवन और शिक्षण	,,	२.००
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१.००
ईशावास्यवृत्ति	,,	.७५
ईशावास्योपनिषद्	,,	.१२
सर्वोदय-विचार	,,	१.१२
स्वराज्य-शास्त्र	,,	.५०
सर्वोदय-संदेश	(विनोबा)	१.५०
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	.३७
भूदान-यज्ञ		.२५
राजघाट की संनिधि में	,,	.६२
विचारपोथी	,,	१.००
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	.२५
उपनिषदों का अध्ययन	,,	१.००
कुछ पुरानी चिट्ठियां	(नेहरू)	१०.००
इतिहास के महापुरुष	,,	३.००
मेरी कहानी	,,	१०.००
,, (संक्षिप्त)	,,	२.५०
हिन्दुस्तान की समस्याएं	,,	२.५०
राष्ट्रपिता	,,	२.००
राजनीति से दूर	,,	२.००
विश्व-इतिहास की झलक (सं०)		६.००
हिन्दुस्तान की कहानी (संक्षिप्त)		२.५०
गांधीजी की देन	(राजेन्द्रप्रसाद)	१.५०
आत्मकथा	,,	८.००
राजाजी की लघुकथाएं	(राजाजी)	१.५०
महाभारत-कथा	,,	५.००
कुब्जा-सुन्दरी	,,	२.२५
शिशु-पालन	,,	.५०
दशरथ-नन्दन श्रीराम		५.००
मैं भूल नहीं सकता	(काटजू)	२.५०
कारावास-कहानी	(सु० नै०)	७.५०
गांधी की कहानी	(लु० फि०)	१.५०
इंगलैंड में गांधीजी		१.२५
बा, बापू और भाई		.५०
गांधी-विचार-दोहन		१.५०
सन्त-सुधासार (संक्षिप्त)	वि. ह.	६.००
श्रद्धा-कण	,,	०.७५
गांधीवादी संयोजन के सिद्धांत		५.००
भागवत-धर्म	(ह० उ०)	५.५०

मानवता के झरने (मावलंकर)	१.५०
बापू (घ० दा० बिड़ला)	२.००
रूप और स्वरूप "	·७५
डायरी के पन्ने "	१.००
ध्रुवोपाख्यान "	.३०
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१.००
मेरी मुक्ति की कहानी "	१.५०
प्रेम में भगवान "	२.५०
जीवन-साधना "	१.२५
कलवार की करतूत "	.३५
हमारे जमाने की गुलामी "	१.००
बुराई कैसे मिटे ? "	१.००
बालकों का विवेक "	.५०
हम करें क्या ? "	४.००
धर्म और सदाचार "	१.२५
अंधेरे में उजाला "	१.५०
ईसा की सिखावन "	१.००
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२.५०
साहित्य और जीवन (चतुर्वेदी)	२.००
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१.००
हिमालय की गोद में ,,	२.००
कहावतों की कहानियां ,,	२.२५
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	१.२५
अशोक के फूल (ह०प्र० द्विवेदी)	३.००
कांग्रेस का इतिहास (संक्षिप्त)	६.००
सप्तदशी	२.००
रीढ़ की हड्डी	१.५०
अमिट रेखाएं	३.५०
तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१.५०
हमारे गांव की कहानी	२.००
खादी द्वारा ग्राम-विकास	.७५
साग-भाजी की खेती	३.५०
पशुओं का इलाज	.७५
रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१.१२
रोटी का सवाल (क्रोपाटकिन)	३.००

नवयुवकों से दो बातें ,,	.५०
पुरुषार्थ (डा० भगवानदास)	६.००
काश्मीर पर हमला	२.००
शिष्टाचार	.५०
तट के बंधन (विष्णु प्रभाकर)	२.५०
भारतीय संस्कृति (साने गुरुजी)	३.५०
आधुनिक भारत	५.००
फलों की खेती	३.००
मैं तंदुरुस्त हूं या बीमार ?	०.५०
गांधीजी की छत्र-छाया में	१.५०
भागवत-कथा	३.५०
जय अमरनाथ	१.५०
हमारी लोक-कथाएं	१.५०
संस्कृत-साहित्य-सौरभ (३६ पुस्तकें) प्रत्येक	० ४०
समाज-विकास-माला (१५१ पुस्तकें) प्रत्येक	०.३७
कृषि-ज्ञान-कोष (डा० व्यास)	४.००
प्रकाश की बातें	१.५०
ध्वनि की लहरें	१.५०
गरमी की कहानी	१.५०
धरती और आकाश	१.५०
समुद्र के जीव-जंतु	१.५०
नवीन यात्रा (मनोज बसु)	२.५०
रूस में छयालीस दिन (यशपाल जैन)	३.००
मैं उनका ऋणी हूं	२.२५
सुभाषित-सप्तशती	२.५०
शारदीया	१.५०
आंसू और मुस्कान	१.००
अमृत की बूंदें	१.००
तूफान और ज्योति	२.५०
प्राकृतिक जीवन की ओर	१.५०
कोई शिकायत नहीं	२.५०
सेतुबंध	२.००